सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 253, नई दिल्ली । शनिवार, 23 नवम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

यह मत मानिए कि जीत ही
सब कुछ है, महत्वपूर्ण यह है
कि आप किस उद्देश्य के
लिए जीतना चाहते हैं...

03 दो दिन की राहत के बाद फिर बढ़ी दिल्लीवासियों की मुश्किलें
06 जहरीली हवा से जूझती जिंदगी
08 खत्म हुई वोटिंग नतीजों का इंतजार

दिल्ली वायु प्रदूषण: दिल्ली में ग्रैप-4 प्रतिबंध हटेंगे या नहीं, अब 25 नवंबर को फैसला लेगा सुप्रीम कोर्ट

दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट सख्त है। शुक्रवार को प्रदूषण मामले की सुनवाई शीर्ष अदालत में हुई। दिल्ली में भारी वाहनों के प्रवेश पर कोर्ट ने दिल्ली पुलिस और सरकार को फटकार लगाई है। कोर्ट ने यह भी पूछा कि प्रतिबंध के बावजूद इन वाहनों को प्रवेश कैसे मिल रहा है? दिल्ली एनसीआर से ग्रैप- 4 प्रतिबंध हटेंगे या नहीं... इस पर फैसला अब सोमवार को होगा।

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण की स्थिति भले ही पहले के मुकाबले थोड़ी सुधरी है, लेकिन अभी भी यह जिस तरीके से खतरनाक श्रेणी में बनी हुई है, उसे देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल ग्रेप- 4 (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) को जारी रखने का फैसला लिया है। साथ ही कहा है कि वह सोमवार यानी 25 नवंबर को वायु प्रदूषण की स्थिति को जांचेगा और यह देखेगा कि ग्रेप-4 के प्रभावी ढंग से लागू किया गया था या नहीं। उसके बाद ही ग्रेप-4 को हटाने या ना हटाने को लेकर कोई निर्णय लेगा।

दिल्ली सरकार और पुलिस को फटकार

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश अभय एस. ओका और ए.जार्ज मसीह की पीठ ने दिल्ली-एनसीआर में बढ़े वायु प्रदूषण पर शुक्रवार को फिर सुनवाई की। साथ ही दिल्ली में भारी वाहनों के प्रवेश को लेकर दिल्ली सरकार और दिल्ली पुलिस को फटकार भी लगाई। कोर्ट ने कहा कि ग्रेप-4 के प्रतिबंधों के तहत जब दिल्ली में भारी वाहनों को प्रवेश नहीं हो सकता है तो फिर वाहनों का कैसे प्रवेश हो रहा है।

ढिलाई बरतने पर कोर्ट ने जताई नाखुशी

कोर्ट ने ग्रेप-4 के प्रतिबंधों को लागू करने में बरती गई ढिलाई पर नाखुशी जताई। कोर्ट ने इसके साथ ही दिल्ली में प्रवेश के सभी 113 रास्तों पर दिल्ली पुलिस को चौकी बनाने के निर्देश दिए। साथ ही इनमें भारी वाहनों के प्रवेश के 13 मार्गों पर लगे सीसीटीवी कैमरे की रिकॉर्डिंग और ब्योरा मांगा। कोर्ट ने इस दौरान इन 13 प्रवेश मार्गों की जांच के लिए अधिवक्ताओं की एक टीम भी गठित की है, जो इन सभी मार्गों की जांचकर उसकी रिपोर्ट भी सोमवार को कोर्ट देगी।

राज्यों की भी जिम्मेदारी

कोर्ट में इस दौरान पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पराली जलाए जाने का भी मुद्दा उठा। इस पर कोर्ट ने केंद्र से इसका ब्योरा देने को कहा। साथ ही राज्यों से कहा कि वायु प्रदूषण को थामने की जिम्मेदारी अकेले केंद्र की ही नहीं बल्कि राज्यों को भी इस दिशा में आगे बढ़कर काम करने की जरूरत है। वायु प्रदूषण के मामले को सुनते समय कोर्ट तब नाराज हुआ, जब उसे बताया गया कि ग्रेप-4 लगे होने के बाद भी दिल्ली में भारी वाहनों के धडल्ले से प्रवेश जारी रखा। वैसे भी दिल्ली-एनसीआर में होने वाले प्रदूषण में करीब 20 प्रतिशत हिस्सेदारी वाहनों से होने वाले प्रदूषण की मानी जाती है।

कब कौन सा ग्रैप

ग्रैप-1	एक्यूआई 201-300
ग्रैप-2	एक्यूआई 301-400
ग्रैप-3	एक्यूआई 401-450
ग्रैप-4	एक्यूआई 450 से ज्यादा

अभिभावकों की मांग खारिज

बढ़े वायु प्रदूषण के चलते बंद स्कूलों को खोलने की मांग लेकर पहुंचे अभिभावकों को शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने जमकर फटकार लगाई और कहा कि आप क्यों स्कूल खुलवाना चाहते है। क्या आपको अपने बच्चों के हितों की चिंता नहीं है। कोर्ट ने उनकी इस मांग को तुरंत खारिज कर दिया।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4
पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड,
नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

देश के पहले ट्रैफिक इंजीनियरिंग और संगठनात्मक विकास केंद्र का उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

-ट्रैफिक टावर्स में हुंडई के प्रबंध निदेशक और पुलिस महानिदेशक ने किया शुभारंभ

गुरुग्राम। देश के पहले ट्रैफिक इंजीनियरिंग और संगठनात्मक विकास केंद्र का शुक्रवार को शुभारंभ किया गया। केंद्र में ट्रैफिक इंजीनियरिंग सेंटर (टीईसी) और ऑर्गनाइजेशन डेवलपमेंट सेंटर (ओडीसी) नाम से दो अलग-अलग विभाग होंगे। पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर और हुंडई मोटर इंडिया के प्रबंध निदेशक उन्सू किम ने ट्रैफिक टावर्स (डीसीपी ट्रैफिक गुरुग्राम कार्यालय, गुरुग्राम) में इस केंद्र का शुभारंभ किया। समारोह की अध्यक्षता पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा ने की। इंस्टीट्यूट ऑफ रोड ट्रैफिक एजुकेशन (आईआरटीई) ने टीईसी और ओडीसी की स्थापना गुरुग्राम पुलिस के लिए की है। हुंडई मोटर इंडिया फाउंडेशन (एचएमआईएफ) ने सीएसआर फंड के माध्यम से इसमें सहयोग दिया है।

पुलिस महानिदेशक ने कहा कि यह सेंटर गुरुग्राम में यातायात प्रबंधन बेहतर करने में कारगर होंगे। इससे सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सकेगी। उन्होंने कहा कि आईआरटीई सड़क सुरक्षा के लिए सड़क इंजीनियरिंग और ट्रैफिक इंजीनियरिंग एक अग्रणी संस्था है। इन केंद्रों के सहयोग से गुरुग्राम में सड़क इंजीनियरिंग, ट्रैफिक इंजीनियरिंग व ट्रैफिक मैनेजमेंट में सकारात्मक परिणाम आएंगे।

केंद्र में ये सिखाया जाएगा

सड़क सुरक्षा ऑडिट, यात्रा जोखिम प्रबंधन और राजमार्ग मूल्यांकन कार्यक्रमों के माध्यम से यातायात इंजीनियरिंग और परिवहन योजना पर शोध हो सकेगा।

यहां सड़कों पर लगे संकेतकों को दुरुस्त करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

पुलिस को चालान का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

इस केंद्र से प्रशिक्षण हासिल करने के बाद पुलिस अधिकारी वाहन चालकों के व्यवहार का विश्लेषण कर सकेंगे।

दिल्ली परिवहन निगम (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार) परिचालन विभाग आई.पी. एस्टेट: नई दिल्ली-110002

संख्याःएम(ऑप.)/डीटीसी/2024/353

दिनांकः 22.11.2024

विषयः- धरना अवधि 16.11.24 से 21.11.24 के संबंध में रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

हाल ही में 16/11/24 से डीटीसी कर्मचारियों की अवैध हड़ताल/धरना की घटना हुई।

21/11/24, जिसके कारण डीटीसी का सामान्य कामकाज असंभव हो गया, और परिणाम हुआ

असुविधा और कठिनाई पैदा करके सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को बाधित करना

दिल्ली के निवासियों, आगंतुकों और यात्रियों के लिए, विशेष रूप से आर्थिक रूप से

समाज के कमजोर वर्ग और दैनिक मजदूरी कमाने वाले लोग।

अतः सक्षम प्राधिकारी से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, सभी क्षेत्रीय प्रबंधक (आरएम)

कृपया अनुरोध है कि कृपया नीचे दिए गए बिंदुओं के संबंध में अपने-अपने क्षेत्रों की एक समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत करें:

1. धरना अवधि के दौरान स्थिति को कम करने के लिए जिलाधिकारियों/ग्रामीणों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में की गई कार्रवाई।
2. इस धरना प्रदर्शन से प्राप्त मुख्य बातें
3. भविष्य में धरना-प्रदर्शन/हड़ताल जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना से बचने के लिए व्यवहार्य कार्य योजना।

सभी क्षेत्रीय प्रबंधकों से अनुरोध है कि कृपया समेकित रिपोर्ट 25.11.2024 तक अवश्य प्रस्तुत करें।

सभी आरएमएस

प्रबंधक (ऑप.)

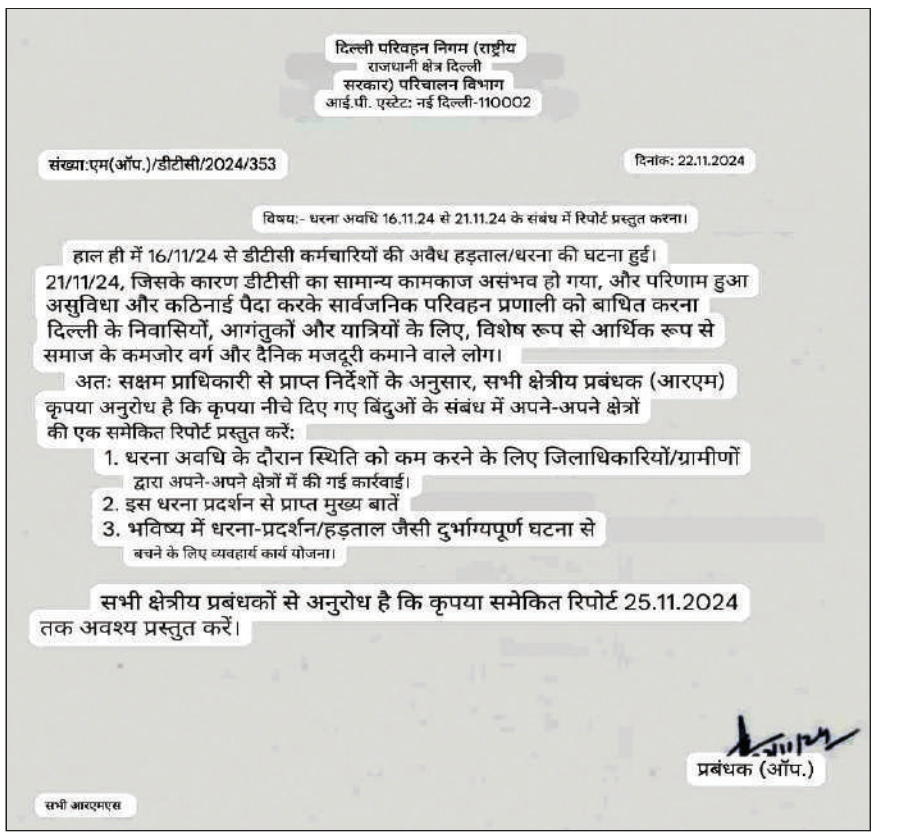

दिल्ली परिवहन निगम (राष्ट्रीय
राजधानी क्षेत्र दिल्ली
सरकार) परिचालन विभाग
आई.पी. एस्टेट: नई दिल्ली-110002

संख्या:एम(ऑप.)/डीटीसी/2024/353

दिनांक: 22.11.2024

विषय:- धरना अवधि 16.11.24 से 21.11.24 के संबंध में रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

हाल ही में 16/11/24 से डीटीसी कर्मचारियों की अवैध हड़ताल/धरना की घटना हुई।
21/11/24, जिसके कारण डीटीसी का सामान्य कामकाज असंभव हो गया, और परिणाम हुआ
असुविधा और कठिनाई पैदा करके सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को बाधित करना
दिल्ली के निवासियों, आगंतुकों और यात्रियों के लिए, विशेष रूप से आर्थिक रूप से
समाज के कमजोर वर्ग और दैनिक मजदूरी कमाने वाले लोग।

अत: सक्षम प्राधिकारी से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, सभी क्षेत्रीय प्रबंधक (आरएम)
कृपया अनुरोध है कि कृपया नीचे दिए गए बिंदुओं के संबंध में अपने-अपने क्षेत्रों
की एक समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत करें:

1. धरना अवधि के दौरान स्थिति को कम करने के लिए जिलाधिकारियों/ग्रामीणों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में की गई कार्रवाई।
2. इस धरना प्रदर्शन से प्राप्त मुख्य बातें
3. भविष्य में धरना-प्रदर्शन/हड़ताल जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना से बचने के लिए व्यवहार्य कार्य योजना।

सभी क्षेत्रीय प्रबंधकों से अनुरोध है कि कृपया समेकित रिपोर्ट 25.11.2024 तक अवश्य प्रस्तुत करें।

प्रबंधक (ऑप.)

सभी आरएमएस

प्रदूषण संकट के कारण दिल्ली की शादियों में बढ़ी इन कारों की मांग, CNG-बीएस6 की ओर बढ़ा रुझान

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में वायु गुणवत्ता के मौजूदा संकट ने शादी और यात्रा उद्योग सहित रोजमर्रा की जिंदगी को बाधित कर दिया है। क्योंकि शहर गंभीर प्रदूषण स्तर से जूझ रहा है। ऐसे में ट्रैवल एजेंसियां, जो शादियों के मौसम में डीजल वाहनों पर बहुत ज्यादा निर्भर रहती हैं, अब स्वच्छ ईंधन वाले वाहनों के विकल्प तलाशने के दबाव में हैं।

*अनुपालन को लागू करने के लिए, दिल्ली के अधिकारियों ने प्रदूषण नियंत्रण (**PUC**) प्रमाणपत्रों की जांच तेज कर दी है। 2024 में 1 जनवरी से 31 अक्तूबर के बीच **PUC** उल्लंघन के लिए रिकॉर्ड 2.7 लाख चालान जारी किए गए हैं, जो तीन साल का उच्चतम स्तर है। आश्रम चौक और आईटीओ चौक जैसे प्रमुख जंक्शनों पर लक्षित अभियानों में, अकेले अक्तूबर में वैध **PUC** दस्तावेजों की कमी के लिए 47,000 से अधिक मोटर चालकों पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया।*

नई दिल्ली। दिल्ली में वायु गुणवत्ता के मौजूदा संकट ने शादी और यात्रा उद्योग सहित रोजमर्रा की जिंदगी को बाधित कर दिया है। क्योंकि शहर गंभीर प्रदूषण स्तर से जूझ रहा है। सोमवार को ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के चरण IV के कार्यान्वयन के कारण BS-III पेट्रोल और BS-IV डीजल वाहनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। जिससे परिवहन और रसद में महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

ये गाड़ियां बनी पसंद

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने इस सप्ताह की शुरुआत में दिल्ली के वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के 450 अंक को पार करने के बाद GRAP-IV उपायों को लागू किया, जो ₹गंभीर-प्लस₹ श्रेणी में प्रवेश कर गया। हालांकि प्रतिबंधों का मकसद वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को रोकना है। लेकिन इससे ट्रैवल एजेंसियों को अपनी पहले से तय की गई प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में परेशानी हो रही है, खासकर शादियों के लिए। BS-VI-अनुपालन वाली मारुति सुजुकी अर्टिगा, टोयोटा इनोवा और सीएनजी से चलने वाली गाड़ियां अचानक प्रतिबंध के अनुकूल होने की चाह रखने वाले परिवहन प्रदाताओं के लिए पसंदीदा विकल्प बन गई हैं।

डीजल वाहनों पर रहती है निर्भरता

ट्रैवल एजेंसियां, जो शादियों के मौसम में डीजल वाहनों पर बहुत ज्यादा निर्भर रहती हैं, अब स्वच्छ ईंधन वाले वाहनों के विकल्प तलाशने के दबाव में हैं। खबरों के मुताबिक, कई एजेंसियों ने BS-VI और CNG वाहनों की बढ़ती मांग की जानकारी दी है, जिससे उनके संचालन पर वित्तीय दबाव बढ़ रहा है।

अवैध गाड़ियों पर भारी जुर्माना

राजधानी भर में कड़ी जांच के बाद, दिल्ली के परिवहन विभाग ने 1 अक्तूबर से अब तक 2,200 से ज्यादा ओवरएज वाहनों को जब्त किया है। जिनमें 10 साल से अधिक पुराने 260 डीजल वाहन और 15 साल की आयु सीमा से अधिक पुराने लगभग 2,000 पेट्रोल वाहन शामिल हैं।

दिल्ली प्रदूषणः उल्लंघनकर्ताओं पर कार्रवाई

अनुपालन को लागू करने के लिए, दिल्ली के अधिकारियों ने प्रदूषण नियंत्रण (PUC) प्रमाणपत्रों की जांच तेज कर दी है। 2024 में 1 जनवरी से 31 अक्तूबर के बीच PUC उल्लंघन के लिए रिकॉर्ड 2.7 लाख चालान जारी किए गए हैं, जो तीन साल का उच्चतम स्तर है। आश्रम चौक और आईटीओ चौक जैसे प्रमुख जंक्शनों पर लक्षित अभियानों में, अकेले अक्तूबर में वैध PUC दस्तावेजों की कमी के लिए 47,000 से अधिक मोटर चालकों पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया।

मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत GRAP-IV वाहन प्रतिबंध का उल्लंघन करने वालों पर 20,000 रुपये तक का भारी जुर्माना लगाया जा सकता है। BS-VI मानदंडों को पूरा करने में नाकाम रहने वाली अंतर-राज्यीय बसों और वाणिज्यिक वाहनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है। सिर्फ आवश्यक सामान ले जाने वाले वाहनों को छूट दी गई है।

भगवान भोलेनाथ ने शनिदेव को दिया था न्याय करने का वरदान, ऐसे बने ग्रहों में सर्वश्रेष्ठ

शनिवार का व्रत रखने से जातक को शनिदेव की कृपा मिलती है। शनिदेव की पूजा करने से व्यक्ति कम समय में धनवान बन जाते हैं। आर्थिक तंगी से भी निजात पाने के लिए शनिदेव की पूजा-अर्चना की सलाह दी जाती है।

हिंदू धर्म में शनिवार का दिन भगवान शनिदेव को समर्पित होता है। शनिदेव को न्याय का देवता माना जाता है। शनिवार को शनिदेव की पूजा-अर्चना की जाती है। इससे व्यक्ति के जीवन की परेशानियों का अंत हो जाता है। बता दें कि शनिवार का व्रत रखने से जातक को शनिदेव की कृपा मिलती है। वहीं शनिदेव की पूजा करने से व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में विजय मिलती है। शनिदेव की पूजा करने से व्यक्ति कम समय में धनवान बन जाते हैं। आर्थिक तंगी से भी निजात पाने के लिए शनिदेव की पूजा-अर्चना की सलाह दी जाती है।

ऐसे में अगर आप भी शनिदेव की कृपा और आशीर्वाद के भागी बनना चाहते हैं, तो पूरी भक्तिभाव से उनकी पूजा-अर्चना करनी चाहिए। इससे न्याय के देवता शनिदेव की कृपा आप पर जरूर बरसेगी। लेकिन क्या आप जानते हैं कि शनिदेव न्याय के देवता कैसे बनें और उनको मोक्ष प्रदाता क्यों कहा जाता है।

जानिए कैसे मिला वरदान

बता दें कि देवी छाया के लिए सूर्य देव की कुंठित भावना थी। इसी वजह से सूर्य देव के साथ शनिदेव का कटु संबंध था। सूर्य देव का अपनी मां छाया के प्रति रुष्ट व्यवहार देखकर शनि अपने पिता सूर्य देव से अप्रसन्न रहते थे। धार्मिक शास्त्रों में बताया गया है कि देवी छाया महादेव की भक्त थीं और वह भोलेनाथ की कठिन भक्ति करती थीं। ऐसे में वह भक्ति में इतनी लीन हो जाती थीं कि उनको अपनी भी सुध नहीं रहती थी।

जब शनिदेव अपनी मां के गर्भ में थे, तो भी वह महादेव की कठिन भक्ति किया करती थीं। जिसका प्रभाव शनिदेव पर पड़ा और वह श्याम रूप में जन्में। शनिदेव का श्याम रूप देखकर सूर्यदेव ने अपनी पत्नी छाया पर आरोप लगाते हुए कहा कि शनिदेव उनके पुत्र नहीं हैं। वहीं सूर्य देव अपनी पत्नी देवी छाया से नाराज रहने लगे। अपनी मां के प्रति पिता का यह व्यवहार देखकर शनिदेव भगवान सूर्य नारायण से कुंठित रहने लगे थे। वहीं आत्मा के कारक सूर्य को शनि देव अपना शत्रु मानते थे।

इसी वजह से शनिदेव ने नवग्रहों में सबसे उच्च स्थान प्राप्त करने का प्रण लिया और वह अपनी मां छाया के सच्चे भक्त बनें। शनिदेव को भक्ति अपनी मां छाया से विरासत में मिली थी। ग्रहों में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने के लिए शनिदेव ने भोलेनाथ की कठिन तपस्या की। इस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान भोलेनाथ ने उनको न्याय करने का वरदान दिया और साथ में मोक्ष प्रदान करने का भी आशीर्वाद दिया। भगवान शिव के दिए इस वरदान से वह ग्रहों में श्रेष्ठ बनें और उन्हें न्याय करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

जन्नत से कम नहीं हैं ऋषिकेश की ये ऑफबीट जगहें, परिवार के साथ बिता आएं सुकून के कुछ पल

अगर आप भी ऋषिकेश में छुट्टियां बिताने की प्लानिंग कर रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि आज हम आपको ऋषिकेश की कुछ ऑफबीट जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। जहां पर टूरिस्ट की ज्यादा भीड़ भी नहीं होती है।

भारत के उत्तराखंड में स्थित ऋषिकेश अपनी आध्यात्मिकता, खूबसूरत नजारों और शांति के लिए जाना जाता है। यहां पर देश-विदेश से टूरिस्ट घूमने के लिए आते हैं। साल दर साल यहां पर टूरिस्टों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। वहीं अगर आप भी ऋषिकेश में छुट्टियां बिताने की प्लानिंग कर रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि आज हम आपको ऋषिकेश की कुछ ऑफबीट जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। जहां पर टूरिस्ट की ज्यादा भीड़ भी नहीं होती है, ऐसे में आप यहां पर सुकून के पल बिता सकते हैं। तो आइए जानते हैं इन जगहों के बारे में...

नीरगढ़ झरना

ऋषिकेश में गंगा नदी के अलावा आपको एक बहुत खूबसूरत नीरगढ़ झरना देखने को मिलेगा। यह झरना लक्ष्मण झूला के पास है। वहीं अगर आप ट्रैकिंग का शौक रखते हैं, तो यहां जाना आपके लिए बेस्ट ऑप्शन होगा। आप इस ट्रैकिंग के दौरान हिमालय की सुंदरता देख सकेंगे। जब आप नीरगढ़ झरने के पास पहुंचेंगे तो आपको यहां पर क्रिस्टल साफ पानी देखकर खुश हो जाएंगे। यह एक शांत जगह है। ऐसे में आप यहां पर सुकून के कुछ पल बिता सकते हैं।

ऋषिकुंड हॉट वाटर स्प्रिंग

वहीं आप अपने परिवार के साथ त्रिवेणी घाट पर फेमस रघुनाथ मंदिर के बगल में ऋषि कुंड हॉट वाटर स्प्रिंग है। धार्मिक मान्यता है कि वनवास के दौरान प्रभु राम ने यहां पर स्नान किया था। यह शांत तालाब रघुनाथ मंदिर की सुंदरता को दर्शाता है। ऐसे में आपको भी यहां पर स्नान जरूर करना चाहिए। यह हॉट स्प्रिंग वाटर तनाव कम करने के साथ ही मांसपेशियों में दर्द, ब्लड सर्कुलेशन और स्किन संबंधी समस्याएं भी दूर हो जाती हैं।

झिलमिल गुफा

बता दें कि ऋषिकेश में मणिकूट पर्वत की हरियाली के बीच लक्ष्मण झूला के पास तीन गुफाओं का समूह है। इसको झिलमिल गुफा के नाम से जाना जाता है। यह ऋषिकेश की एक ऑफ-बीट जगह है। यह गुफा जितनी सुंदर है, वहीं यहां तक पहुंचने का सफर भी बेहद खूबसूरत है। इस गुफा तक पहुंचने के लिए ट्रैकिंग के दौरान बेहद खूबसूरत नजारे दिखाई देते हैं।

डोलीताल

अगर आप प्रकृति के दीवने हैं, तो आपको डोडीताल जरूर आना चाहिए। हालांकि ऋषिकेश आने वाले लोग बहुत कम ही इस ऑफबीट जगह पर आते हैं। 3010 मीटर की ऊंचाई पर स्थित डोडीताल एक मीठे पानी की झील है और यह काफी पुरानी भी है। यह जगह पाइन, ओक और देवदार के पेड़ों से घिरी है। यहां तक पहुंचने के लिए आपको ट्रैकिंग करनी होती है।

नीम बीच

ऋषिकेश में भले ही समुद्र नहीं है, लेकिन यहां का नीम बीच काफी ज्यादा फेमस है। यह ऋषिकेश की बेहतरीन जगहों में से एक मानी जाती है। यहां पर शहर के शोरगुल से दूर गंगा नदी के तट पर और लक्ष्मण झूला के पास स्थित नीम बीच के पास आप सुकून के दो पल बिता सकते हैं। वहीं यहां का सनसेट और सनराइज का नजारा आपको मोहित कर देगा। यह ऋषिकेश का एकमात्र बीच है। यहां पर आप कार से भी आ सकते हैं।

थायराइड में रामबाण से कम नहीं है धनिया, डॉक्टर ने बताया कैसे करें इसका सेवन, मिलेगा आराम

खराब जीवनशैली के चलते थायराइड होने के चांसेस ज्यादा बढ़ जाते हैं, क्योंकि यह एक लाफस्टाइल डिजीज है, इसे क्योर नहीं किया जा सकता है लेकिन इस पर कंट्रोल जरुर रख सकते हैं। थाइराइड फंक्शन को ठीक करने के लिए धनिया का सेवन करना फायदेमंद होता है।

खराब लाइफस्टाइल और गलत खानपान की वजह से ब्लड शुगर, पीसीओडी, थायराइड और मोटापा होने लगता है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में थायराइड की समस्या अधिक देखी जाती है। थाइराइड एक हार्मोन नियामक ग्रंथि होती है और इसमें इंबैलेंस होने का कारण हार्मोन जरुरत से ज्यादा मात्रा में उत्पादन करने लगते हैं। थायराइड को नियंत्रण रखने के लिए रोजाना खाली पेट एक दवा खाने के लिए दी जाती है।

धनिया का फायदा

अगर आप थायराइड की समस्या से परेशान हैं तो धनिया से अच्छा क्या हो सकता है। धनिया में मौजूद विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है, जो शरीर में सेल्स को फ्री रेडिकल से होने वाले क्षति से बचाव करने में मदद करता है। थायराइड की ग्रंथि के लिए धनिया के बीजों से बेहतर पारंपरिक चिकित्सा में भी किया गया है।

हरे धनिया में कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। हरा धनिया में विटामिन A, K और C, पोटैशियम, डाइटरी फाइबर, आयरन, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम और कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। धनिए में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट इम्यूनिटी को मजबूत करता है। इसके साथ ही थायराइड को कंट्रोल भी करता है और साथ ही कमजोरी, बैड कोलेस्ट्रॉल, दिमाग, दिल को स्वस्थ रखता है।

कैसे करें हरे धनिया का सेवन

थायराइड की समस्या से परेशान हैं, तो आप फ्रेश हरे धनिया की पत्तियों को पानी से धोकर साफ कर लें और इसे मिक्सी की मदद से पेस्ट बना लें और रोज सुबह के समय खाली पेट गुनगुने पानी के साथ मिलाकर सेवन करें। नियमित रुप से एक सप्ताह तक इसे पीने से थायराइड कंट्रोल हो सकता है। इसे आप 1 महीने तक पी सकते हैं इससे ज्यादा नहीं।

नींबू और शहद के साथ धनिया पत्ते का सेवन

आप चाहे तो धनिया के हरे पत्तो को ब्लेंडर या मिक्सी की मदद से इसका जूस बना सकते हैं। जूस जब बन जाएं तो इसमें नींबू का रस, शहद और आधा कप पानी अच्छे से मिला लें। फिर आप इसे खाली पेट सेवन करें।

धनिया की चाय पिएं

थायराइड के मरीजों दो चम्मच धनिया के बीजों को एक कप पानी में मिलाकर 10-15 तक मिनट उबालें और ठंडा होने के बाद इसका सेवन करें। इसे छानकर सुबह खाली पेट सेवन करें। आप चाहे तो इसमें शहद भी मिला सकते हैं।

ओपन एआई ला रही वेब ब्राउजर, गूगल को मिल रही कांटे की टक्कर

ट जीटीप को बनाने वाली कंपनी अब गूगल को एक और बार टक्कर देने के लिए कमर कस चुकी है। ऑनलाइन सर्च के मामले में ओपनएआई पहले ही सर्च जीटीपी के माध्यम से अपना प्रभाव बनाने में लगी है। अब ये एआई सर्च को और ज्यादा एडवांस बनाने की दिशा में भी आगे कदम बढ़ा रही है।

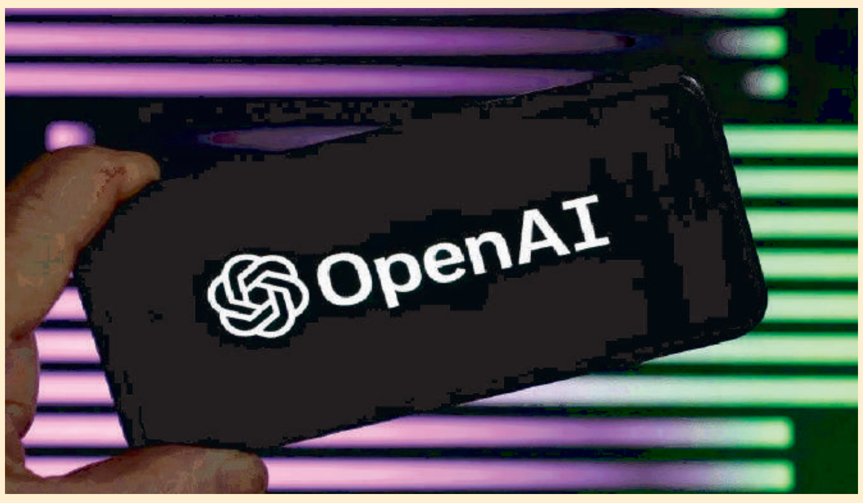

OpenAI अपना वेब ब्राउजर डेवलप करने की तैयारी कर रही है। चैट जीटीप को बनाने वाली कंपनी अब गूगल को एक और बार टक्कर देने के लिए कमर कस चुकी है। ऑनलाइन सर्च के मामले में ओपनएआई पहले ही सर्च जीटीपी के माध्यम से अपना प्रभाव बनाने में लगी है। अब ये एआई सर्च को और ज्यादा एडवांस बनाने की दिशा में भी आगे कदम बढ़ा रही है। इसके लिए कंपनी ने कई और फर्मों को अप्रोच किया है ताकि ये अपनी एआई पावर्ड सर्च टेक्नोलॉजी को भी इस ब्राउजर में जोड के। ऐसा करने से गूगल के सामने बड़ी चुनौती खड़ी हो सकती है।

गूगल ने हाल में सर्च और वेब ब्राउजिंग मार्केट में लीडिंग कंपनी है। लेकिन ओपनएआई जल्द ही कंपनी को कड़ी टक्कर दे सकती है। The Information की रिपोर्ट की मानें तो ओपन एआई ने अपने इस प्रोजेक्ट को साकार करने के लिए Conde Nast, Redfin, Eventbrite और Priceline जैसी कंपनियों के साथ संपर्क किया है। कंपनी अपनी एआई सर्च टेक्नोलॉजी को वेब ब्राउजर में इंटीग्रेट करने की योजना के तहत काम कर रही है। सूत्रों के हवाले ये भी कहा गया कि कुछ डेवलपर्स ने इन प्रोडक्ट्स के डिजाइन और प्रोटोटाइप भी देखे हैं। यानी इस पर काम शुरू भी हो चुका है।

ओपन एआई का वेब ब्राउजर लॉन्च होने में अभी वक्त लग सकता है क्योंकि उपलब्ध जानकारी के अनुसार ये अभी शुरुआती चरण में है। लेकिन इसके आने के बाद ट्रेडिशनल वेब ब्राउजिंग की कायापलट हो सकती है। कंपनी जेनरेटिव AI क्षमता को ब्राउजिंग के साथ जोड़कर पेश करेगी जिससे कि यूजर एक्सपीरियंस कई गुना बेहतर होने की उम्मीद है।

फैटी लिवर की समस्या होने पर दिखते हैं ऐसे लक्षण, जानिए इससे कैसे करें बचाव

फैटी लिवर की समस्या बच्चों और बड़ों दोनों को प्रभावित कर रही है। एक लेटेस्ट स्टडी के मुताबिक भारत की करीब 38 फीसदी आबादी फैटी लिवर या फिर नॉन-अल्कोहालिक फैटी लिवर डिजीज से पीड़ित है।

LIVER DISEASE

हमारे खानपान और रहन-सहन का हमारी हेल्थ पर गहरा असर पड़ता है। क्योंकि हमारी अनहेल्दी आदतों की वजह से शरीर को कई बीमारियां घेर लेती हैं। वहीं पिछले कुछ सालों में लाइफस्टाइल से जुड़ी कई बीमारियां काफी तेजी से बढ़ रही हैं। वहीं फैटी लिवर भी खराब लाइफस्टाइल का नतीजा है। पिछले 50 सालों में फैटी लिवर ने पूरी दुनिया के करीब एक चौथाई लोगों को अपनी चपेट में लिया है। भारत में हर 3 में से 1 व्यक्ति को फैटी लिवर की समस्या है।

फैटी लिवर की समस्या बच्चों और बड़ों दोनों को प्रभावित कर रही है। एक लेटेस्ट स्टडी के मुताबिक भारत की करीब 38 फीसदी आबादी फैटी लिवर या फिर नॉन-अल्कोहालिक फैटी लिवर डिजीज से पीड़ित है। चिंता का सबब यह कि यह बीमारी सिर्फ बड़ों तक ही सीमित नहीं है। करीब 35 फीसदी बच्चों में भी फैटी लिवर की समस्या देखी जा रही है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि आप घर बैठे फैटी लिवर की समस्या का पता कैसे लगा सकते हैं और इसके लक्षण क्या हैं और इससे कैसे बचाव किया जा सकता है।

क्या है फैटी लिवर

यह एक लाइफस्टाइल से जुड़ी डिजीज है। जब लिवर में फैट सामान्य से ज्यादा जमा हो जाता है, तो इसको फैटी लिवर कहा जाता है। यह एक आम समस्या है, खासकर यह समस्या उन लोगों को होती है, जिनका वजन ज्यादा है।

वैसे तो फैटी लिवर का कोई खास लक्षण नहीं होता है, लेकिन यह एक सीरियस स्वास्थ्य समस्या का कारण बन सकता है। शराब का सेवन, फैट युक्त डाइट का अधिक सेवन और मोटापा आदि फैटी लिवर का मुख्य कारण है।

अधिकतर मामलों में फैटी लिवर के मरीजों को अपना लाइफस्टाइल और डाइट में बदलाव करना चाहिए। इसके साथ ही रोजाना एक्सरसाइज करना चाहिए और वेट कंट्रोल करना चाहिए।

ऐसे फैटी लिवर का पता लगाएं

आमतौर पर फैटी लिवर के लक्षण सामान्य होते हैं, जिन पर अक्सर लोगों को ध्यान नहीं जाता है। इसलिए आज हम आपको यहां कुछ ऐसे लक्षणों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको समझकर आप आसानी से फैटी लिवर के बारे में पता लगा सकते हैं।

दाई पसली के नीचे दर्द होना

अगर आपकी दांईं पसली के नीचे लगातार हल्का-हल्का दर्द महसूस होता है, तो बता दें कि यह लिवर का एरिया होता है। यहां पर दर्द होना इस ओर फैटी लिवर का संकेत हो सकता है या फिर फैट कलेक्ट होने की वजह से साइज बढ़ गया है। इसलिए हेल्दी डाइट लेना शुरू कर दें औ.र रोजाना एक्सरसाइज करें। वहीं अगर तेज दर्द होता है, तो आपको बिना देर किए डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

पेट के आसपास फैट

धीरे-धीरे या फिर अचानक वजन बढ़ना और पेट के आसपास चर्बी जमा होना फैटी लिवर का संकेत हो सकता है। फैटी लिवर मेटाबॉलिज्म में अहम भूमिका निभाता है और जब यह ठीक से काम नहीं कर रहा होता है, तो पेट के आसपास चर्बी जमा हो सकती है। ऐसे में यदि आपने डाइट में बदलाव नहीं किया जाता है और फिर भी पेट के आसपास फैट बढ़ रहा है, तो इसकी जांच कराना जरूरी है।

मुंहासे या त्वचा संबंधी समस्याएं

कई लोगों को यह बात हैरान कर सकती है, लेकिन हमारी त्वचा लिवर की हेल्थ के बारे में काफी कुछ बता सकती है। बता दें कि लगातार मुंहासे होना भी फैटी लिवर का संकेत हो सकता है।

असल में लिवर हमारे शरीर से टॉक्सिन्स को बाहर निकालने में सहायता करता है। जब फैट की वजह से यह अधिक काम करता है, तो टॉक्सिन त्वचा के जरिए बाहर निकल सकते हैं। जिसकी वजह से मस्से, दाग-धब्बे या फिर मुंहासा हो सकते हैं।

त्वचा पर काले धब्बे

बगल में गर्दन पर या फिर कोहनी के आसपास की त्वचा का काला पड़ना भी फैटी लिवर की ओर संकेत दे सकता है। आमतौर पर ऐसी स्थिति इंसुलिन रेजिस्टेंस का संकेत होता है। जो नॉन-अल्कोहॉलिक फैटी लिवर डिजीज से जुड़ा होता है।

आंखों या त्वचा का पीला पड़ना

पीलिया की वजह से त्वचा और आंखों का सफेद हिस्सा पीला हो जाता है। यह लिवर की खराबी की ओर संकेत देता है। ऐसा तब होता है, जब लिवर रेड ब्लड सेल्स से निकलने वाले वेस्ट प्रोडक्ट बिलिरुबिन को ठीक से फिल्टर नहीं कर पाता है।

पैरों, तलवों या फिर हाथों में सूजन

बता दें कि पैरों, टखनों या फिर हाथों में सूजन की समस्या तब होती है, जब लिवर पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन प्रोड्यूस नहीं कर पाता है, जिसके कारण फ्लूइड इम्बैलेंस होता है। यह सूजन अगर लगातार बनी है, तो यह फैटी लिवर का संकेत हो सकता है।

थकान या कमजोरी लगना

अगर आपको आराम करने के बाद भी लगातार थकान महसूस होती है, तो लिवर की समस्या हो सकती है। क्योंकि फैटी लिवर शरीर की एनर्जी को स्टोर करने और फिर उसको रिलीज करने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। जिसकी वजह से आपको थकान या कमजोरी महसूस हो सकती है। अगर बिना किसी कारण एनर्जी लेवल कम है, तो आपको अपने लिवर हेल्थ पर ध्यान देना चाहिए।

फैटी **लिवर** से ऐसे करें बचाव

वेट कंट्रोल करके फैटी लिवर संबंधी कई बीमारियों से दूर रह सकते हैं।

चाय का सेवन न करें।

अल्कोहल आदि से दूरी बनाएं।

सीढ़ियों का इस्तेमाल करें।

रोजाना कम से कम 45 मिनट एक्सरसाइज जरूर करें।

सोने से पहले मोबाइल का इस्तेमाल न करें।

जरूरत से ज्यादा दवाओं का सेवन न करें।

समय पर सोना चाहिए और समय पर ही उठना चाहिए।

दो दिन की राहत के बाद फिर बढ़ी दिल्लीवासियों की मुश्किलें, 'गंभीर' श्रेणी में पहुंचा AQI

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर फिर से बढ़ गया है और शाम को एयर क्वालिटी इंडेक्स गंभीर श्रेणी में पहुंच गया है। सीपीसीबी के अनुसार दिल्ली का एयर इंडेक्स 393 रहा जो सबसे अधिक है। वाहनों के उत्सर्जन और पराली के धुएं को प्रदूषण का प्रमुख कारण माना जा रहा है। अगले तीन दिनों तक हवा की गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में रहने की संभावना है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में दो दिन थोड़ी राहत के बाद शुक्रवार को प्रदूषण का स्तर बढ़ गया। दिन में स्माग कम होने से आसमान साफ रहा व हल्की धूप भी निकली। इससे दिन में प्रदूषण से थोड़ी राहत महसूस की गई लेकिन सुबह व शाम के वक्त स्मॉग अधिक रहा। इस वजह से शाम होते-होते हवा की गुणवत्ता एक बार फिर गंभीर श्रेणी में पहुंच गई।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा जारी देश के 264 शहरों के एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआइ) रिपोर्ट के अनुसार शुक्रवार को दिल्ली का एयर इंडेक्स सबसे अधिक 393 रहा। इस वजह से हवा की गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में रही। इससे दिल्ली सबसे अधिक प्रदूषित रही। बिहार का हाजीपुर दूसरा प्रदूषित शहर रहा। हाजीपुर का एयर इंडेक्स 389 रहा।

सीपीसीबी और आईक्यूएयर का डाटा रहा अलग

दूसरी ओर स्विस कंपनी के ऐप आईक्यूएयर ने सुबह साढ़े दस बजे से 11:30 बजे के बीच दिल्ली का एयर इंडेक्स 533 बताया। इसके बाद धीरे-धीरे एयर इंडेक्स में हुआ सुधार और शाम साढ़े चार बजे आइक्यूएयर ने दिल्ली का एयर इंडेक्स 296 बताया लेकिन सात बजे इस ऐप ने एयर इंडेक्स 340 बताया। इसलिए ऐप ने हवा की गुणवत्ता खतरनाक बताया लेकिन सीपीसीबी द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार 340 हो तो हवा की गुणवत्ता बेहद खराब मानी जाती है।

सीपीसीबी के अनुसार शाम छह बजे के बाद दिल्ली का एयर इंडेक्स बढ़कर गंभीर श्रेणी में 401 हो गया और शाम सात बजे यह बढ़कर 405 पहुंच गया। इस वजह से दिल्ली के 39 प्रदूषण निगरानी केंद्रों में 23 जगहों पर एयर इंडेक्स 400 से अधिक हो गया।एनसीआर के शहरों में भी शुक्रवार को प्रदूषण के स्तर में बढ़ोतरी हुई। सीपीसीबी की रिपोर्ट के अनुसार फरीदाबाद व ग्रेटर नोएडा को छोड़कर एनसीआर के सभी प्रमुख शहरों में हवा की गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में रही।

प्रदूषण में वाहनों के उत्सर्जन की भागीदारी रही 15.16 प्रतिशत

आइआइटीएम पुणे के डिसिजन सपोर्ट सिस्टम (डीएसएस) के अनुसार दिल्ली के प्रदूषण में वाहनों के उत्सर्जन की भूमिका 15.16 प्रतिशत रही। औद्योगिक ईकाइयों से निकलने वाले धुएं की भूमिका 2.87 प्रतिशत रही। एक दिन पहले बृहस्पतिवार को दिल्ली के प्रदूषण में पराली के धुएं की भूमिका 17.9 प्रतिशत रही। ऐसे में प्रदूषण में पराली का धुआं भी अभी अहम भूमिका निभा रहा है। वातावरण में पीएम-10 का स्तर 329.2 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर व पीएम-2.5 का स्तर 198.5 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा, जो मानक स्तर से करीब सवा तीन गुना ज्यादा है। सीपीसीबी के अनुसार हवा की गति कम होने के कारण अगले तीन भी हवा की गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में रहेगी।

सीपीसीबी और आईक्यूएयर ऐप द्वारा प्रदर्शित एयर क्वालिटी इंडेक्स

शहर	सीपीसीबी	आईक्यूएयर	
दिल्ली	393	296	
नोएडा	312	182	
गाजियाबाद		302	179
गुरुग्राम	302	223	
फरीदाबाद		292	185
ग्रेटर नोएडा		262	159

Jagran

नोट: आईक्यूएयर ऐप के एयर इंडेक्स का आंकड़ा शाम साढ़े चार बजे का है।

दिल्ली में शाम सात बजे इन जगहों पर अधिक रहा एयर इंडेक्स

आनंद विहार- 451
जहांगीरपुरी- 451
वजीरपुर- 445
नेहरू नगर- 443
बवाना- 442

विश्व शिल्प मंच की शुरुआत हुई, नेशनल क्राफ्ट म्यूजियम में

सुषमा रानी

नई दिल्ली। विश्व शिल्प मंच 2024 का उद्घाटन दिवस एक शानदार सफलता थी, जिसने तीन दिनों तक व्यावहारिक चर्चाओं, जीवंत सांस्कृतिक प्रदर्शनों और वैश्विक शिल्प समुदाय के भीतर शक्तिशाली नेटवर्किंग के लिए मंच तैयार किया। यह WCC AISBL की 60वीं वर्षगांठ थी, और यह कार्यक्रम नई दिल्ली में राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय और हस्तकला अकादमी में हुआ, जिसमें शिल्प क्षेत्र में सहयोग, स्थिरता और नवाचार के शक्तिशाली संदेश के साथ समारोह की शुरुआत हुई।

दिन की कार्यवाही शिल्प और स्थिरता के मूल्य पर बहुप्रतीक्षित गोलमेज सम्मेलन के साथ शुरू हुई, जहाँ पैनलिस्ट और प्रतिभागियों ने शिल्प क्षेत्र में स्थिरता के बढ़ते महत्व पर गहन चर्चा की। चर्चाओं में पता लगाया गया कि शिल्प किस तरह से सतत आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण में योगदान करते हैं, जबकि शिल्प समुदायों और समाजों में जो अमूर्त मूल्य लाते हैं, उन्हें उजागर करते हैं।

दिन का मुख्य कार्यक्रम उद्घाटन समारोह था, जिसने विश्व शिल्प मंच 2024 को आधिकारिक रूप से चिह्नित किया। इस समारोह ने वैश्विक शिल्प आंदोलन को संप्रेषित करने और लोकप्रिय बनाने में इस विश्व परिषद के नेतृत्व के छह दशकों को चिह्नित किया। मुख्य अतिथि श्री पाबित्रा मार्गेरिटा, कपड़ा मंत्रालय और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के राज्य मंत्री, ने इस बात की वाक्पटुता से वकालत की कि कैसे शिल्प का अस्तित्व देश की संस्कृति के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में एक अभिन्न भूमिका निभाता है।

"शिल्प केवल उत्पाद नहीं हैं; वे मानवीय सरलता, परंपरा और पहचान की जीवंत कहानियाँ हैं। जैसा कि हम विश्व शिल्प परिषद की 60वीं वर्षगांठ मनाते हैं, आइए हम उन कारीगरों का सम्मान करें जो अपने बेजोड़ कौशल और जुनून के साथ अतीत और भविष्य को जोड़ते हैं। भारत, शिल्प कौशल की अपनी समृद्ध विरासत के साथ, रचनात्मकता, स्थिरता और नवाचार के एक प्रकाशस्तंभ के रूप में गर्व से खड़ा है, जो दुनिया को एक उज्जवल, अधिक जुड़े हुए भविष्य की ओर ले जा रहा है।₹ उन्होंने अपने भाषण में कहा। भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव, रोहित कंसल, आईएएस ने निष्कर्ष निकाला, ₹विश्व शिल्प मंच शिल्प को किस तरह से देखा जाता है, इसमें एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित होगा, जिससे कारीगरों के लिए नए अवसर पैदा होंगे और एक लचीला शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होगा।₹ श्रीमती अमृत राज, हस्तशिल्प विकास आयुक्त, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार ने टिप्पणी की, ₹यह कार्यक्रम वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देते हुए अपने विविध शिल्पों को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।₹ सम्मानित अतिथियों ने भी अपने विचार साझा किए, जिसमें डब्ल्यूसीसी एआईएसबीएल के अध्यक्ष श्री साद अल-कद्दूमी ने कहा कि वैश्विक सहयोग आने वाली पीढ़ियों के लिए शिल्प कला को बहाल कर सकता है। श्री अल-कद्दूमी ने कहा, ₹विश्व शिल्प परिषद का निरंतर प्रयास दुनिया भर में शिल्प आंदोलन को फिर से सक्रिय करना है और भारत में डब्ल्यूसीसी के 60 साल पूरे होने का जश्न विकास आयुक्त हस्तशिल्प के साथ मिलकर दुनिया भर में डब्ल्यूसीसी के प्रमुख कार्यक्रमों के लिए एक बड़ी छलांग लगाने का मंच तैयार करता है।₹ यूनेस्को दक्षिण एशिया के निदेशक श्री टिम कर्टिस सतत विकास में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के महत्व पर बोल रहे थे।

"यूनेस्को का दृढ़ विश्वास है कि पारंपरिक शिल्प को संरक्षित करना न केवल सांस्कृतिक पहचान के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि सतत अर्थव्यवस्थाओं के भविष्य के लिए भी महत्वपूर्ण है। विश्व शिल्प मंच इन अंतर्संबंधों का पता लगाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है,₹ श्री कर्टिस ने कहा।

"विषय" शिल्प दुनिया को जोड़ता है, जो एक पुनरुत्थानशील रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए शिल्प का लाभ उठाने और ग्रह और उसके लोगों के लिए एक सतत भविष्य को आकार देने के बारे में है।₹ डॉ. डार्ली कोशी, रणनीतिक सलाहकार

स्टीयरिंग ग्रुप के सदस्य और क्राफ्ट विलेज के संस्थापक सोमेश सिंह ने कहा, ₹दिल्ली में पिछले अंतर्राष्ट्रीय शिल्प सप्ताहों की सफलता के साथ, अमृत काल के दौरान देश की अभूतपूर्व प्रगति के साथ शिल्प को सबसे आगे लाने और भारत सरकार की अन्य पहलों के साथ मुख्यधारा में लाने और भारतीय शिल्प को WCÇ AISBL द्वारा उत्प्रेरित वैश्विक शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के केंद्र में रखने के लिए मंच तैयार है।

आधिकारिक उद्घाटन के बाद, क्राफ्ट फंड पर पैनल चर्चाः क्राफ्ट इनक्यूबेशन और उद्यमिता की स्थापना हुई, जिसमें शिल्प कार्य के क्षेत्र में स्टार्ट-अप समर्थन संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता पर चर्चा की गई। पैनलिस्टों ने यह सुनिश्चित करने में नवाचार और उद्यमिता की भूमिका पर जोर दिया कि पारंपरिक शिल्प न केवल जीवित रहें बल्कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में पनपें।

दिन का समापन एक सांस्कृतिक संध्या के साथ होगा, जिसमें समृद्ध पारंपरिक प्रदर्शन प्रदर्शित किए जाएंगे। और सर्वश्रेष्ठ भारतीय शिल्प की ईपीसीएच गैलरी का उद्घाटन।

दिन की गतिविधियों के एक हिस्से के रूप में, फोरम में विशेष फिल्म स्क्रीनिंग शामिल थीः आद्यम हैंडवॉवन फिल्में बनारस, भदोई, पोचमपल्ली और अन्य की समृद्ध शिल्प परंपराओं को उजागर करती हैं। वे भारत की कुछ सबसे प्रसिद्ध बुनाई के पीछे शिल्प कौशल, तकनीकों और कहानियों के बारे में गहन जानकारी प्रदान करते हैं।

हर सनातनी को इस फिल्म को देखना चाहिए और गोधरा के सच को जानने का प्रयास करना चाहिए : डॉ उमेश शर्मा

फिल्म द साबरमती रिपोर्ट को पुरे भारत में टैक्स फ्री करना चाहिए : डॉ उमेश शर्मा

आगरा,संजय सागर सिंह। गुजरात के गोधरा स्टेशन के पास 27 फरवरी 2002 को एक एक्सप्रेस ट्रेन के डिब्बे में आग लगाई गई थी, जिसमें 59 लोग मारे गए थे, जिनमें अधिकतर कारसेवक थे। इस घटना के बाद राज्य में व्यापक दंगे भड़क उठे थे। 'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म, गुजरात के 2002 के गोधरा ट्रेन अग्निकांड पर आधारित हिंदी फिल्म है।

इस फिल्म को देखने के बाद डॉ उमेश शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय विप्र एकता मंच ने फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' की प्रशंसा करते हुए कहा, ₹गुजरात दंगों को सब जानते हैं, लेकिन गोधरा की सच्चाई से युवा और आम लोग परिचित नहीं हैं। अब यह फिल्म इस सच्चाई को उजागर कर रही है कि गोधरा में 69 सनातनी श्रद्धालु कैसे मारे गए। यह एक बड़ा और सफल प्रयास है, जिसमें साबरमती रिपोर्ट की पूरी टीम और कलाकारों ने गोधरा के सच को सामने लाकर अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को पूरा किया है।₹

डॉ उमेश शर्मा ने आगे कहा, ₹यह फिल्म बताती है कि किन लोगों ने किस प्रकार षड्यंत्र रचा और ऐसे लोगों को देश के सामने लाना आवश्यक है। साबरमती ट्रेन में सवार सनातनी श्रद्धालु अयोध्या से धार्मिक अनुष्ठान करके लौट रहे थे, और गोधरा स्टेशन पर उनके साथ जो हुआ, उस पर हमेशा पर्दा डाला गया। षड्यंत्र करने वाले लोग सच्चाई को छिपाने में जुटे रहे हैं।"

उन्होंने यह भी कहा, ₹देश में आज भी राजनीतिक स्वार्थ के लिए झूठ फैलाया जा रहा है। ऐसे लोग सनातनी समाज और देश के हितकारी नहीं हो सकते। यह फिल्म उस समय आई है जब सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर बन रहा है। फिल्म की घटना अयोध्या से जुड़ी है, और गोधरा के सत्य को सभी को जानना चाहिए। मैं चाहता हूं कि यह फिल्म अधिक से अधिक लोगों द्वारा देखी जाए, और इसे टैक्स फ्री किया जाए।"

श्री शर्मा ने अंत में कहा, ₹मैं साबरमती रिपोर्ट की पूरी टीम को बधाई देता हूं, जिन्होंने इस वास्तविक सत्य को देश की जनता के सामने फिल्म के माध्यम से लाने का प्रयास किया है। हर सनातनी को इस फिल्म को देखना चाहिए और गोधरा के सच को जानने का प्रयास करना चाहिए।"

'BJP को वोट दिया तो...', चुनाव से ठीक पहले केजरीवाल ने जनता को चेताया; कार्यकर्ताओं को सौंपी जिम्मेदारी

दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने रेवड़ी पर चर्चा अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत आप दिल्ली भर में अरविंद केजरीवाल द्वारा दी जा रहीं मुफ्त की छह रेवड़ियों पर चर्चा करेंगे। केजरीवाल ने कहा कि भाजपा को वोट दिया तो ये छह रेवड़ियां बंद हो जाएंगी। केजरीवाल ने कहा कि पार्टी के जिला और बूथ स्तर के पदाधिकारी मतदाताओं तक पहुंचेंगे।

नई दिल्ली। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए शुक्रवार को रेवड़ी पर चर्चा अभियान शुरू कर राजनीतिक माहौल गरमा दिया है। अभियान के तहत आप दिल्ली भर में अरविंद केजरीवाल द्वारा दी जा रहीं मुफ्त की छह रेवड़ियों पर चर्चा करेंगे। जिसके तहत 24 घंटे बिजली, मुफ्त बिजली व पानी, शानदार शिक्षा, सरकारी अस्पतालों में शानदार इलाज, महिलाओं को बस यात्रा और बुजुर्गों को तीर्थयात्रा पर चर्चा की जाएगी। आप लोगों को यह भी बताएगी कि भाजपा को वोट दिया तो ये छह रेवड़ियां बंद हो जाएंगी।

इस दौरान केजरीवाल ने मुफ्त की छह रेवड़ियों का पोस्टर भी जारी किया, जिसमें उनका विस्तार से जिक्र है। यह अभियान 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलेगा। केजरीवाल ने कहा कि जनता का पैसा है तो उस पर पहला हक भी जनता का ही है। अब बहुत जल्द सातवीं रेवड़ी भी आने वाली है, जिसमे हर महिला के खाते में हर महीने हजार-हजार रुपये डालने की शुरुआत की जाएगी।

65 हजार बैठकें कर रेवड़ियों का मतलब समझाएंगे: केजरीवाल

अभियान की घोषणा करते हुए केजरीवाल ने कहा कि पार्टी के जिला और बूथ स्तर के पदाधिकारी मतदाताओं तक पहुंचेंगे और आप सरकार द्वारा दी जाने वाली मुफ्त सुविधाओं (रेवड़ी) के बारे में पर्चे बांटेंगे। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे कार्यकर्ता दिल्ली भर में 65,000 बैठकें करेंगे ताकि लोगों को यह समझाया जा सके कि इन मुफ्त सुविधाओं का क्या मतलब है और केवल आप ही इन्हें दे सकती है। बता दें कि दिल्ली में अगले साल फरवरी में विधानसभा चुनाव होने हैं। केजरीवाल ने उम्मीद जताई है कि पिछली बार जितनी यानी 62 सीटें उन्हें इस बार भी मिल जाएंगी।

भाजपा ने पिछले 10 सालों में क्या किया है: केजरीवाल

केजरीवाल ने कहा कि भाजपा 20 राज्यों में सत्ता में है और एक भी राज्य में वे इन मुफ्त रेवड़ियों में से कोई भी प्रदान नहीं करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास इरादा नहीं है; केवल आप ही जानती है कि इन सुविधाओं को कैसे दिया जाए। उन्होंने कहा कि जब भाजपा वाले यह कहें कि हम भी उन्हें फ्री में बिजली पानी देंगे तो जनता उनसे जरूर पूछे कि 20 राज्यों में उनकी सरकार है कि उन्होंने किस राज्य में बिजली पानी फ्री किया है। उन्होंने कहा कि आप कार्यकर्ता मतदाताओं से पूछेंगे कि भाजपा ने पिछले 10 वर्षों में दिल्ली के लिए क्या किया है क्योंकि राष्ट्रीय राजधानी एक आधा राज्य है और केंद्र सरकार के पास उतनी ही शक्तियां हैं जितनी हमारे पास हैं।

जब केजरीवाल सीएम थे, तब उनपर बहुत दबाव था: सिसोदिया

वहीं आप नेता मनीष सिसोदिया ने कहा कि जिस समय अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री थे, उनके ऊपर बहुत दबाव था कि उसी 2200 करोड़ की रिश्वत देने वाले से बिजली खरीदो, जिसने केंद्र सरकार को और उनके लोगों को रिश्वत खिलाई थी। मगर केजरीवाल ने उनकी चलने नहीं दी। चलने नहीं दी तो आपके शहर में बिजली सस्ती है। लोगों को मुफ्त और 24 घंटे बिजली मिल रही है।

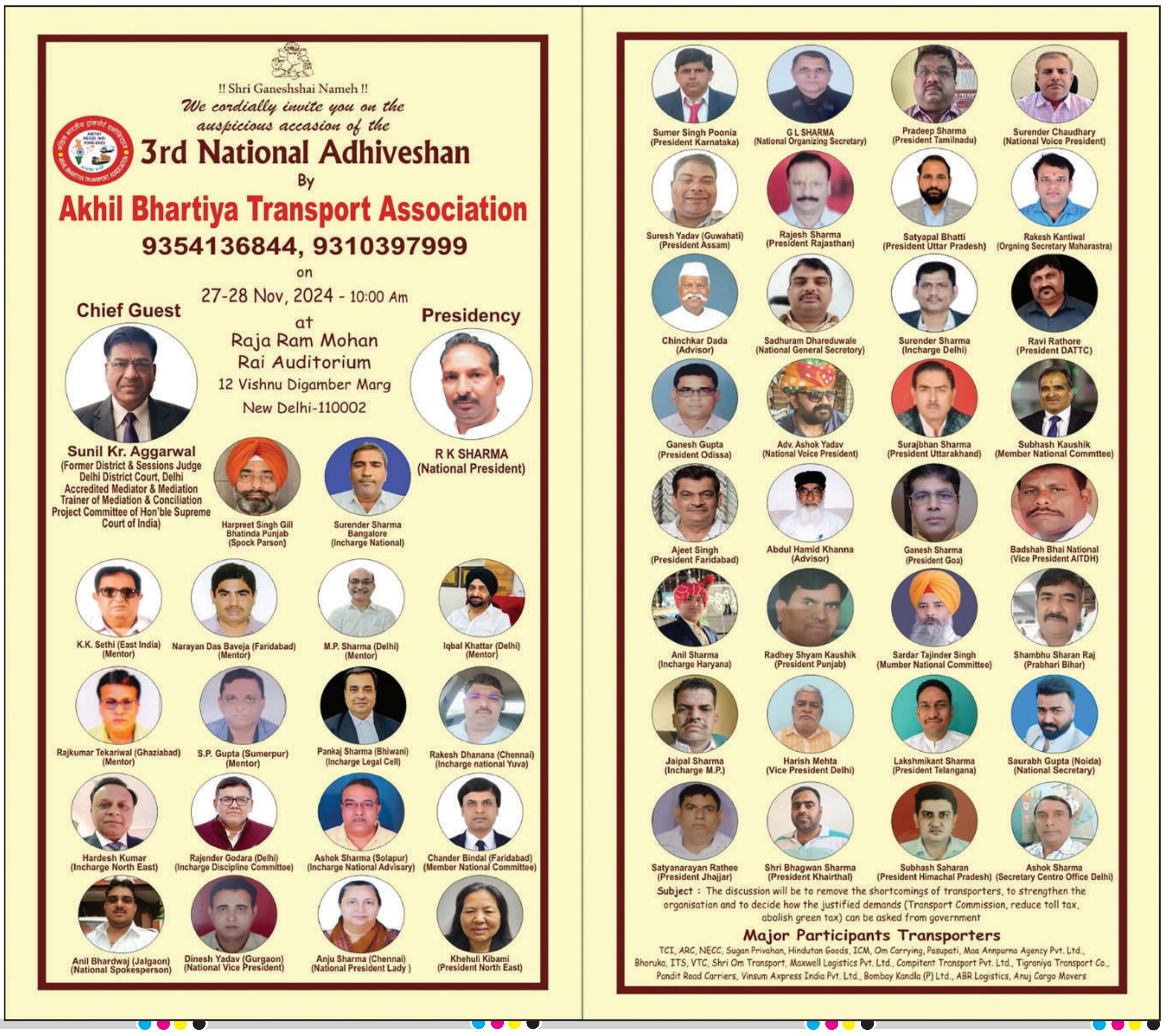
!! Shri Ganeshshai Nameh !!
We cordially invite you on the auspicious accasion of the
3rd National Adhiveshan
By
Akhil Bhartiya Transport Association
9354136844, 9310397999
on
27-28 Nov, 2024 - 10:00 Am
at
Raja Ram Mohan Rai Auditorium
12 Vishnu Digamber Marg
New Delhi-110002

Chief Guest
Sunil Kr. Aggarwal (Former District & Sessions Judge Delhi District Court, Delhi Accredited Mediator & Mediation Trainer of Mediation & Conciliation Project Committee of Hon'ble Supreme Court of India)

Presidency
R K SHARMA (National President)

Harpreet Singh Gill Bhatinda Punjab (Spock Parson)
Surender Sharma Bangalore (Incharge National)
K.K. Sethi (East India) (Mentor)
Narayan Das Baveja (Faridabad) (Mentor)
M.P. Sharma (Delhi) (Mentor)
Iqbal Khattar (Delhi) (Mentor)
Rajkumar Tekariwal (Ghaziabad) (Mentor)
S.P. Gupta (Sumerpur) (Mentor)
Pankaj Sharma (Bhiwani) (Incharge Legal Cell)
Rakesh Dhanana (Chennai) (Incharge national Yuva)
Hardesh Kumar (Incharge North East)
Rajender Godara (Delhi) (Incharge Discipline Committee)
Ashok Sharma (Solapur) (Incharge National Advisary)
Chander Bindal (Faridabad) (Member National Committee)
Anil Bhardwaj (Jalgaon) (National Spokesperson)
Dinesh Yadav (Gurgaon) (National Vice President)
Anju Sharma (Chennai) (National President Lady)
Khehuli Kibami (President North East)

Sumer Singh Poonia (President Karnataka)
G L SHARMA (National Organizing Secretary)
Pradeep Sharma (President Tamilnadu)
Surender Chaudhary (National Voice President)
Suresh Yadav (Guwahati) (President Assam)
Rajesh Sharma (President Rajasthan)
Satyapal Bhatti (President Uttar Pradesh)
Rakesh Kantiwal (Orgning Secretary Maharastra)
Chinchkar Dada (Advisor)
Sadhuram Dhareduwale (National General Secretory)
Surender Sharma (Incharge Delhi)
Ravi Rathore (President DATTC)
Ganesh Gupta (President Odissa)
Adv. Ashok Yadav (National Voice President)
Surajbhan Sharma (President Uttarakhand)
Subhash Kaushik (Member National Commttee)
Ajeet Singh (President Faridabad)
Abdul Hamid Khanna (Advisor)
Ganesh Sharma (President Goa)
Badshah Bhai National (Vice President AITDH)
Anil Sharma (Incharge Haryana)
Radhey Shyam Kaushik (President Punjab)
Sardar Tajinder Singh (Mumber National Committee)
Shambhu Sharan Raj (Prabhari Bihar)
Jaipal Sharma (Incharge M.P.)
Harish Mehta (Vice President Delhi)
Lakshmikant Sharma (President Telangana)
Saurabh Gupta (Noida) (National Secretary)
Satyanarayan Rathee (President Jhajjar)
Shri Bhagwan Sharma (President Khairthal)
Subhash Saharan (President Himachal Pradesh)
Ashok Sharma (Secretary Centro Office Delhi)

Subject : The discussion will be to remove the shortcomings of transporters, to strengthen the organisation and to decide how the justified demands (Transport Commission, reduce toll tax, abolish green tax) can be asked from government

Major Participants Transporters
TCI, ARC, NECC, Sugan Privahan, Hindutan Goods, ICM, Om Carrying, Pasupati, Maa Annpurna Agency Pvt. Ltd., Bhoruka, ITS, VTC, Shri Om Transport, Maxwell Logistics Pvt. Ltd., Compitent Transport Pvt. Ltd., Tigraniya Transport Co., Pandit Road Carriers, Vinsum Axpress India Pvt. Ltd., Bombay Kandla (P) Ltd., ABR Logistics, Anuj Cargo Movers

गुरुग्राम में चलेगा 'पीला पंजा', इस इलाके को किया जाएगा अतिक्रमण मुक्त; मंत्री ने दे दिया एक हफ्ते का डेडलाइन

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने गुरुग्राम के फरुखनगर कस्बे को एक हफ्ते के अंदर अतिक्रमण मुक्त करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी जमीन पर किसी भी तरह के अतिक्रमण को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मंत्री राव नरबीर सिंह ने यह भी कहा कि अगले पांच सालों में फरुखनगर का कायाकल्प किया जाएगा।

गुरुग्राम। प्रदेश के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने शुक्रवार को विभिन्न गांवों का दौरा कर लोगों से संवाद किया। उन्होंने समस्याएं सुनीं और मौके पर उपस्थित अधिकारियों से तत्काल प्रभाव से कार्रवाई करने को कहा। मंत्री ने कहा कि गुणवत्तापरक समाधान में अधिकारी लापरवाही न बरतें अन्यथा कार्रवाई की जाएगी।

गांव मुबारिकपुर, खेड़ा-झांझरोला, सुल्तानपुर, कालियावास, इकबालपुर व बुढेड़ा में जनसमस्याओं की सुनवाई के दौरान राव नरबीर सिंह ने कहा कि सरकार का प्रयास रहेगा कि आम नागरिकों को उनके नजदीक स्थानों पर ही समस्याओं का निवारण कर उन्हें सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया जाए। इन्ही प्रयासों के क्रम में उन्होंने फरुखनगर कस्बे में अगले एक महीने तक प्रत्येक कार्यदिवस पर सुबह नौ बजे से 11 बजे तक समाधान शिविर लगाने के निर्देश दिया है।

अगले पांच साल में फरुखनगर का होगा कायाकल्प

फरुखनगर के लोग इसका स्थान स्वयं तय करें कि शिविर कहां लगाया जाए। उनका प्रयास रहेगा कि एक महीने तक चलने वाले इस शिविर में समय-समय पर वह स्वयं भी उपस्थित रहें। मंत्री ने फरुखनगर कस्बे से जुड़ी समस्याओं की सुनवाई करते हुए आमजन को आश्वस्त किया कि आने वाले पांच सालों में विभिन्न विकास परियोजनाओं के माध्यम से फरुखनगर का पूरी तरह से कायाकल्प किया जाएगा। लोगों ने जो भी मांग रखी है, उन पर आगामी सौ दिनों में काम शुरू हो जाएगा।

सरकारी जमीन पर अतिक्रमण सहन नहीं किया जाएगा

अतिक्रमण से जुड़ी शिकायतों पर सख्ती बरतते हुए कहा कि क्षेत्र में किसी भी सरकारी जमीन पर अतिक्रमण सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने नगर पालिका के अधिकारियों को निर्देश दिया कि अगले एक सप्ताह में फरुखनगर कस्बे को अतिक्रमण मुक्त किया जाए। इसके बाद भी यदि कोई कब्जा हुआ तो संबंधित थाने के अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की जाएगी।

मंगलवार को बिजली व रोडवेज के अधिकारी सुनेंगे जनसमस्याएं

मंत्री ने कहा कि अब से सप्ताह के प्रत्येक मंगलवार को दो विभाग के अधिकारी सुबह 11 बजे से बीडीओ कार्यालय में आमजन से जुड़ी समस्याओं की सुनवाई करेंगे। उन्होंने कहा कि आगामी 26 नवंबर को बिजली व रोडवेज के अधिकारी जनसुनवाई करेंगे। इसी प्रकार तीन दिसंबर को भी दो अन्य विभाग के अधिकारी जनसमस्या का निवारण करेंगे।

गांव मुबारिकपुर व खेड़ा झांझरोला में बनेगा सामुदायिक केंद्र

मंत्री राव नरबीर सिंह ने गांव मुबारिकपुर और खेड़ा झांझरोला में ग्रामीणों द्वारा सामुदायिक भवन की मांग को स्वीकार करते हुए कहा कि जल्द इस दिशा में अधिकारियों को काम करने के निर्देश दिए। उन्होंने झांझरोला में अनुसूचित चौपाल की मांग पर ग्रामीणों से कहा कि पंचायत इसके लिए जमीन उपलब्ध कराए। इस कार्य को पूरा कराने की जिम्मेदारी उनकी है।

इस अवसर पर पटौदी के एसडीएम दिनेश लुहाच, एक्सईएन पंचायती राज अजय शर्मा, पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन गजेंद्र यादव, भाजपा के प्रदेश महामंत्री वीरेंद्र चेयरमैन, नगर पालिका फरुखनगर के चेयरमैन संदीप, सरपंच एसोसिएशन के अध्यक्ष चौधरी धर्मपाल, समाजसेवी राजबीर शर्मा सैदपुर, जीतराम मास्टर, जेपी मास्टर, महाबीर मास्टर, पूर्व पार्षद मुकेश सैनी, अजित यादव चंदू, वीरेंद्र यादव, दौलतराम आदि मौजूद रहे।

गोविंदपुरम अनाज मंडी में होगी मतगणना, ट्रैफिक डायवर्जन प्लान लागू

गाजियाबाद। गाजियाबाद विधानसभा उपचुनाव में 23 नवंबर को गोविंदपुरम अनाज मंडी में वोटों की गिनती होगी। मतगणना के दौरान गोविंदपुरम मुख्य मार्ग पर ट्रैफिक डायवर्ट रहेगा। गोविंदपुरम पुलिस चौकी से डीडीपीएस स्कूल के बीच वाहन नहीं चलेंगे। मतगणना में आने वाले कर्मचारियों, अधिकारियों, मीडियाकर्मियों के लिए एनडीआरएफ मैदान में पांच जगहों पर पार्किंग की व्यवस्था रहेगी। हापुड़ रोड पर यातायात नहीं रोका जाएगा। डायवर्जन सुबह पांच बजे से शुरू होकर शाम को वोटों की गिनती पूरी होने तक लागू रहेगा। यातायात पुलिस ने डायवर्जन प्लान जारी करते हुए बताया कि परेशानी होने पर वाहन चालक हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

यह रहेगा डायवर्जन

- गाविंदपुरम पुलिस चौकी से कनक फार्म हाउस तिराहा के बीच सभी प्रकार के वाहनों की आवाजाही पूरी तरह से बंद रहेगी।
- पीएनबी बैंक तिराहा गोविंदपुरम से डीडीपीएस स्कूल के बीच सभी प्रकार के वाहनों का परिचालन पूर्ण रूप से बंद रहेगा।

हेल्पलाइन नंबर

- यातायात हेल्पलाइन
- 9643322904, 01202986100
- यातायात निरीक्षक, मुख्यालय- संतोष सिंह चौहान 7007847097
- यातायात निरीक्षक, द्वितीय- मनोज कुमार सिंह- 8130674912

पार्किंग व्यवस्था

- मतगणना में आने वाले जनप्रतिनिधि और प्रत्याशी एनडीआरएफ कट से मुड़कर एनडीआरएफ ग्राउंड में पार्किंग पी-एक में वाहनों को खड़ा कर पैदल डीडीपीएस तिराहा होकर नवीन अनाज मंडी गेट नंबर-दो से प्रवेश करेंगे।
- मतगणना में आने वाले मतगणना एजेंट के वाहन एनडीआरएफ ग्राउंड में बनायी गयी पार्किंग पी-दो में वाहनों को खड़ा कर पैदल डीडीपीएस तिराहा होकर नवीन अनाज मंडी गेट नंबर-दो से प्रवेश करेंगे।
- मतगणना ड्यूटी में आने वाले मतगणना कार्मिक एनडीआरएफ ग्राउंड में बनाई गई पार्किंग पी-तीन में वाहन खड़ा कर अनाज मंडी गेट नंबर-दो से प्रवेश करेंगे।
- मतगणना के दौरान सुरक्षा में लगे पुलिसकर्मी एनडीआरएफ ग्राउंड में बनाई गई पार्किंग पी-चार में वाहनों को खड़ा कर अपने ड्यूटी प्वाइंट पर जाएंगे।

योगी कैबिनेट का बड़ा फैसला, नोएडा में एक्वा लाइन का होगा विस्तार; बनेंगे 11 स्टेशन, 2991 करोड़ रुपये की होगी लागत

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कैबिनेट ने शुक्रवार को नोएडा मेट्रो के एक्वा लाइन के विस्तार को मंजूरी दे दी है। इस विस्तार के तहत सेक्टर 51 मेट्रो स्टेशन से नॉलेज पार्क–20 तक मेट्रो का निर्माण किया जाएगा। इसपर 788 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इस विस्तार से नोएडा के लोगों को बेहतर परिवहन सुविधा मिलेगी और ट्रैफिक की समस्या भी कम होगी।

नोएडा। नोएडा से ग्रेनो वेस्ट रूट पर चलने वाली एक्वा मेट्रो लाइन की संशोधित डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) को शुक्रवार को केबिनेट से मंजूरी मिल गई है। सरकार ने यह निर्णय यह निर्णय मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयोजित बैठक में लिया है, जिसमें सेक्टर-51 मेट्रो स्टेशन से ग्रेटर नोएडा के नालेज पार्क-5 तक यातायात को सुगम बनाने के लिए लिया है।

इस रूट पर 11 स्टेशन बनाए जाएंगे। यह रूट एक्वा लाइन का एक्सटेंशन रूट होगा। वर्तमान में एक्वा लाइन पर सेक्टर-51 से ग्रेटर नोएडा डिपो तक एक्वा मेट्रो का संचालन हो रहा है। इस रूट पर मेट्रो चलने से 130 मीटर रोड पर लग रहे जाम में कमी आएगी।

394 करोड़ रुपये राज्य तो इतना ही केंद्र खर्च करेगा

वित्तमंत्री सुरेश खन्ना ने शुक्रवार को लोक भवन में बताया कि नोएडा से ग्रेटर नोएडा में यातायात को और सुगम बनाने के लिए 17.435 किमी लंबी सेक्टर 51 नोएडा स्टेशन से ग्रेटर नोएडा के नालेज पार्क 5 तक एक्वा लाइन मेट्रो परियोजना के विस्तार के संबंध में मंत्री मंडल द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत किया गया है। इसमें 394 करोड़ रुपये भारत सरकार और 394 करोड़ रुपये राज्य सरकार की ओर से खर्च किए जाएंगे। राज्य सरकार की ओर से 40 प्रतिशत धनराशि नोएडा और 60 प्रतिशत धनराशि ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण द्वारा स्वीकृत की जाएगी।

पूरे प्रोजेक्ट के निर्माण में करीब 2991 करोड़ रुपये की लागत

इस रूट पर कुल 11 स्टेशन बनाए जाएंगे। पूरे प्रोजेक्ट के निर्माण में करीब 2991 करोड़ रुपये तय की गई है। पहले 2197 करोड़ रुपये तय किए गए थे। मेट्रो संचालन की शुरूआत में करीब सवा लाख राइडरशिप इस रूट पर रहेगी। संशोधित डीपीआर में मेट्रो का जो रूट पास किया गया है। वह पहले के मुकाबले करीब ढाई किलोमीटर लंबा है। पहले 14.958 किलोमीटर लंबा रूट बनाया गया था जो अब 17.435 किलोमीटर लंबा हो गया है।

लोगों को मेट्रो बदलने के लिए नीचे नहीं उतरना पड़ेगा

इस रूट पर अब सेक्टर-61 स्टेशन पर दिल्ली से आ रही ब्लू और ग्रेनो वेस्ट जाने एक्वा मेट्रो लाइन जुड़ जाएगी। लोगों को मेट्रो बदलने के लिए नीचे नहीं उतरना पड़ेगा। ऐसे में यह इंटरचेंज स्टेशन बनेगा। अब लोगों को दिल्ली जाने के लिए मेट्रो लेने को सेक्टर-51 पर नीचे उतरकर पैदल चलने की जरूरत नहीं पड़ेगी। सेक्टर-61 से बिना उतरे दिल्ली की ओर जा सकेंगे।

यह होगा मेट्रो स्टेशन

- सेक्टर-51 मेट्रो स्टेशन
- सेक्टर-61 स्टेशन
- सेक्टर-70 स्टेशन
- सेक्टर-122
- सेक्टर-123
- सेक्टर-4 ग्रेटर नोएडा
- सेक्टर-12 इकोटेक
- सेक्टर-2 ग्रेटर नोएडा
- सेक्टर-3, ग्रेटर नोएडा
- सेक्टर-10 ग्रेटर नोएडा
- सेक्टर-12 ग्रेटर नोएडा
- नालेज पार्क-5 ग्रेटर नोएडा

यूपी के इस जिले में बिजली चोरी के खिलाफ ताबड़तोड़ एक्शन, पुलिस की तैनाती में की जा रही कार्रवाई

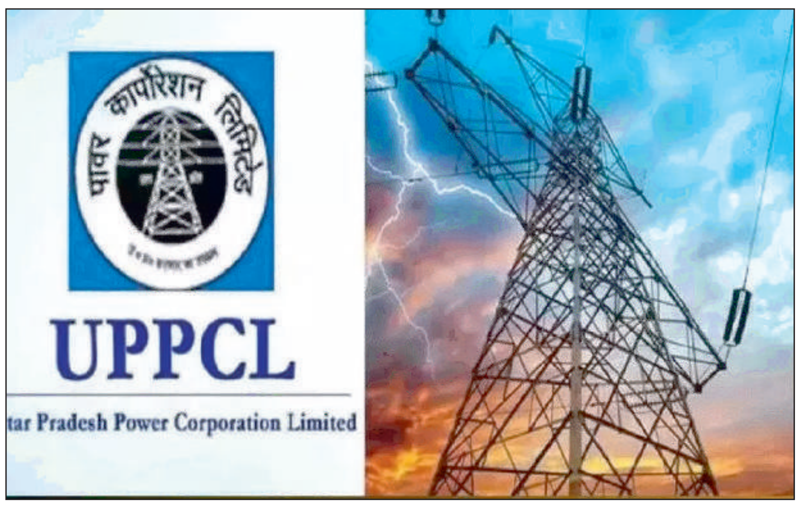
पावर कार्पोरेशन लिमिटेड
UPPCL
tar Pradesh Power Corporation Limited

यूपी के नोएडा में बिजली चोरी के खिलाफ यूपीपीसीएल ने बड़ी कार्रवाई की है। पिछले तीन दिनों में अलग–अलग इलाकों में बड़े पैमाने पर बिजली चोरी पकड़ी गई है। कुल 96 मुकदमे दर्ज किए गए हैं। पुलिस बल की मौजूदगी में ऐमनाबाद साकीपुर सफीपुर कासना मढ़ैया समेत कई इलाकों में छापेमारी की गई। सिर्फ तीन दिनों में बिजली चोरी के 96 मामले दर्ज किए गए।

नोएडा। बिजली चोरों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत नोएडा पावर कंपनी लिमिटेड (एनपीसीएल) ने पिछले तीन दिनों में अलग–अलग इलाकों में बड़े पैमाने पर बिजली चोरी पकड़ी है। कुल 96 मुकदमे में बिजली चोरी में दर्ज कराए हैं। पुलिस बल की मौजूदगी में ऐमनाबाद में नीतीश भाटी के यहां किराये के 40 कमरों और चार दुकानों में बिजली चोरी पकड़ी गई। यहां दो किलोवाट का घरेलू कनेक्शन था, लेकिन जांच में पता चला कि अवैध तरीके से 27 किलोवाट लोड जोड़कर बड़े पैमाने पर बिजली की चोरी की जा रही थी।

साकीपुर में देवेंद्र भाटी के घर 10 किलोवाट की बिजली चोरी पकड़ी गई। सफीपुर गांव में रामू और समसपुर गांव में धर्मपाल के घर भी बिजली चोरी पकड़ी गई। इन दोनों के यहां भी अवैध तरीके से 10 किलोवाट का लोड जोड़कर बिजली की चोरी की जा रही थी। कासना मढ़ैया में शांति और रामपाल के घरों में मीटर को बायपास कर अवैध तरीके से 24 और 40 किलोवाट का लोड जोड़कर बिजली की चोरी की जा रही थी। एनपीसीएल की ओर से पुलिस की मौजूदगी में ग्रेटर नोएडा के डाबरा, ईशेपुर, जानीपुरा, समसपुर, साकीपुर, ऐमनाबाद और सफीपुर गांव के अलावा चाई-तीन और ओमीक्रोन तीन में कई परिसरों में छापेमारी की गई।

सिर्फ तीन दिनों में बिजली चोरी के 96 मामले दर्ज

सोमवार से बुधवार तक चले अभियान में बिजली चोरी के कुल 96 मामले दर्ज किए गए। वहीं 454 किलोवाट की बिजली चोरी पकड़ी गई। बिजली चोरी में लिप्त पाए गए सभी लोगों के खिलाफ एनपीसीएल प्रबंधन की ओर से एंटी पावर थेफ्ट पुलिस स्टेशन, गौतमबुद्ध नगर में विद्युत अधिनियम 2003 के अंतर्गत एफआइआर दर्ज कराने की कार्रवाई की जा रही है। बृहस्पतिवार को कुलेसरा क्षेत्र के संजय विहार कालोनी में बड़े पैमाने पर डीहुकिंग ड्राइव चलाकर भारी मात्रा में केबल जब्त की गई। जांच में पता चला कि यहां ट्रांसफार्मर से अवैध तरीके से केबल जोड़कर बिजली की चोरी की जा रही थी।

जेई पर अवैध रूप से लाइन को शिफ्ट करने का आरोप

विद्युत निगम के जेई पर मॉडलपुर के पास अवैध रूप से तीन खंभे की विद्युत लाइन को शिफ्ट करने का आरोप लगाया गया है। शिकायतकर्ता ने अधिशासी अभियंता से शिकायत की है। अधिशासी अभियंता ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं। मॉडलपुर गांव के अशोक कुमार शर्मा ने विद्युत निगम के अधिशासी अभियंता से शिकायत करते हुए बताया कि अवर अभियंता ने बुधवार को 11 केवी की तीन खंभों की विद्युत लाइन को मॉडलपुर गांव के समीप स्थित रजवाहे पर अवैध रूप से शिफ्ट कराने का काम किया है।

लाइन को शिफ्ट करने के लिए न तो अधिकारियों से अनुमति ली गई न ही उसका एस्टीमेट बनवाया गया, जो कि नियम विरुद्ध है। इससे विभाग को लाखों रुपये की राजस्व हानि हुई है। शिकायतकर्ता ने अवर अभियंता के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। अधिशासी अभियंता अमित चौधरी ने बताया कि मामले को जांच के आदेश दिए गए हैं।

बिजली चोरी रोकने के लिए 64 बकाएदारों के कनेक्शन कटे

विद्युत निगम द्वारा बिजली चोरी रोकने व बकायादारों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बृहस्पतिवार को विभागीय कर्मचारियों ने 55 लाख रुपये के 64 बकायेदारों के कनेक्शन विच्छेद कर दिए। साढ़े चार लाख रुपये राजस्व की वसूली की गई। निगम के अधिशासी अभियंता अमित चौधरी ने बताया कि अभियान के तहत जेवर नगर व देहात, बंकापुर, आर एंड आर कालोनी व जहांगीरपुर स्थित विद्युत उपकेंद्र से जुड़े हुए 54.93 लाख रुपये के 64 बकायादारों के खिलाफ विद्युत कनेक्शन काटने की कार्रवाई की गई।

विभागीय टीम ने साढ़े चार लाख रुपये के राजस्व की वसूली की। उन्होंने बताया कि आरएमएस पोर्टल के एक लाख रुपये से अधिक के प्रकरणों पर भी व्यापक कार्रवाई की गई। संयोजन को भी विच्छेदित किया गया। उन्होंने उपभोक्ताओं से चोरी न करने तथा बिल समय से भुगतान करने की अपील की।

भारत में एकात्म मानववाद के सिद्धांत को अपनाकर हो आर्थिक विकास

भारतीय संस्कृति के अनुसार ही भारतीय आर्थिक दर्शन में भी सृष्टि की समस्त इकाईयों, अर्थात व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं समष्टि को एक माला की कड़ी के रूप में देखा गया है। एकता की इस कड़ी को ही पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' बताया है। एकात्म मानववाद वैदिक काल से चले आ रहे सनातन प्रवाह का ही युगानुरूप प्रकटीकरण है। सनातन हिंदू दर्शन आत्मवादी है। आत्मा ही परम चेतन का अंश है। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने समाज और राष्ट्र में भी चित्त, आत्मा, मन, बुद्धि एवं शरीर आदि का समुच्चय देखा है। अतः इस एकात्म मानववादी दर्शन के उतने ही आयाम एवं विस्तार है, जितनी मनुष्य की आवश्यकताएं हैं। इन विभिन्न आवश्यकताओं का केंद्र बिंदु अर्थ को ही माना गया है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में लिखा है कि अर्थशास्त्र का मुख्य अभिप्राय, अप्राप्ति की प्राप्ति; प्राप्ति का संरक्षण तथा संरक्षित का उपभोग है। एकात्म मानववाद में भी आर्थिक व्यवहार उक्त आधारों पर ही टिके होते हैं। इस प्रकार, अर्थशास्त्र की दिशा स्वतः ही विकासवादी हो जाती है।

भारत के नागरिक पिछले लम्बे समय से पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में पले बढ़े हैं अतः वे भारत की पौराणिक एवं वैदिक ज्ञान परम्परा से विमुख हो गए हैं। इसी प्रकार, प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र एवं आर्थिक चिंतन से भी हम भारतीय इतने अधिक दूर हो गए हैं कि प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र को सिर्फ उक्ति एवं सिद्धांत मानने के साथ साथ अव्यवहारिक भी मानने लगे हैं। जबकि, वैदिक साहित्य में धन के 22 से अधिक प्रकारों की स्पष्ट व्याख्या की गई है, जिसमें शेयर से लेकर आय एवं मूलधन भी सम्मिलित है। प्राचीन भारत के आर्थिक चिंतन को आज यदि लागू किया जाता है तो केवल भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता का कल्याण होगा, क्योंकि हिंदू अर्थशास्त्र एकात्म मानववाद पर आधारित है, जिसमें व्यक्ति अपने लिए नहीं, वरन समष्टि के लिए जीता है। इसे निम्नलिखित सूत्र के माध्यम से अधिक स्पष्ट किया जा सकता हैं

हिंदू अर्थशास्त्र = व्यक्ति x परमार्थ (एकात्म मानववाद एवं त्याग)

पश्चिमी अर्थशास्त्र = व्यक्ति x स्वार्थ (आत्म केंद्रित एवं लाभ)

एकात्म मानववादी अर्थशास्त्र में व्यक्ति अपने एवं अपनों के स्थान पर समष्टि तथा चराचर और परमार्थ के लिए जीता है। जिसमें स्वयं के लिए मुनाफा एवं लाभ के स्थान पर दूसरों की चिंता मुख्य होती है। परंतु, इसके ठीक विपरीत पश्चिम का अर्थशास्त्र आत्मकेंद्रित व्यवहार एवं स्वार्थ पर खड़ा है।

पश्चिम के विकासवादी दर्शन का केंद्र मुनाफा, स्वार्थ एवं लाभ है। परंतु, हिंदू आर्थिक चिंतन के आधार पर खड़े एकात्म मानववाद का आधार अथवा केंद्र परमार्थ है। इसलिए एकात्म मानववादी आर्थिक विकास में विकास केवल अर्थ के लिए नहीं वरन परमार्थ के लिए है। हिंदू आर्थिक दर्शन परम्परा में विकास की अवधारणा को समग्रता में व्यक्त किया गया है। यह विकास त्रिगुण आधारित है। इस त्रिगुण में- सत, रज एवं तम सम्मिलित है। प्राचीन भारतीय चिंतन में सत्तवादी विकास श्रेष्ठ माना गया है। इस सत्तवादी विकास के तत्व हैं ज्ञान, तपस्या, सदकर्म, प्रेम एवं समत्वभाव तथा इसकी उपस्थिति सतयुग में मानी गई है। विकास का दूसरा स्वरूप रजस को माना गया। इस रजसवादी विकास के तत्व हैं अहंबुद्धि, प्रतिष्ठा, मानबढ़ाई, लौकिक, पारलौकिक सुखा मत्सर, दम्भ एवं लोभ तथा इसकी उपस्थिति त्रेतायुग में मानी गई है। इसे मानवीय और मध्यम माना गया है। इसी प्रकार, विकास का तीसरा स्वरूप तमस को माना गया है। इस तमसवादी विकास के तत्व हैं असत्य, माया, कपट, आलस्य, निंदा, हिंसा, विषाद, शोक, मोह, भय तथा इसकी उपस्थिति कलयुग में मानी गई है। इस प्रकार सत, रज एवं तम गुणों के आधार पर उक्त विकास के तीन रूपों के साथ एक मिश्रित विकास का भी मॉडल माना गया है, जिसमें रजस एवं तमस गुण मिले होते हैं और इस मॉडल की उपस्थिति द्वापर युग में मानी गई है।

इस प्रकार भारतीय चिंतन परम्परा में विकास के उक्त चार प्रारूप माने गए हैं। इन चारों प्रारूपों का उपयोग चार युगों सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग में होता पाया गया है। इसमें सबसे उत्तम सतयुगी विकास प्रारूप को माना गया है तथा सबसे अधम कलियुगी विकास प्रारूप को माना गया है। भारत में, वर्तमान खंडकाल में त्रेतायुग के रामराज्य को भी बहुत अच्छा माना गया है एवं इसके स्थापना की कल्पना की जाती रही है। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने महात्मा गांधी जी के ट्रस्टी शिप एवं हिंद स्वराज्य के विवेचन को भी अपने विमर्श में स्थान दिया है। इस प्रकार भारतीय चिंतन परम्परा का आदर्श रामराज्य है, इसमें भरत जैसे राजा एवं जनक जैसे राजा तपस्वी के रूप में राज्य करते थे। स्वयं श्रीराम धर्म की मर्यादा को अपने लिए भी लागू करते थे एवं धर्म की मर्यादा का कभी भी उल्लंघन नहीं करते थे। सदैव प्रजा एवं प्रकृति की रक्षा एवं संवर्धन करते रहते हैं। यह एक ऐसा विकास का प्रारूप है जो आज भी आदर्श है। रामराज्य की अवधारणा भी एकात्म मानववाद के आधारों पर खड़ी थी। यह शासन तथा विकास एवं व्यवस्था में सब की भागीदारी तथा सब के लिए व्यवस्था थी, जो प्रकृति आधारित विकास पर बल देती थी।

भारत में सबसे छोटी इकाई व्यक्ति पर बल दिया गया है और उसका संगठन किया गया है। भारत में व्यक्ति के स्वरूप को जिस प्रकार संगठित और एकात्म किया गया वैसा पश्चिम में नहीं हो सका है। पश्चिम में केवल भौतिक प्रगति पर ही बल दिया गया है। पूरे विश्व में आज सर्वाधिक विकसित राष्ट्र अमेरिका को माना जाता है। अमेरिका में नागरिकों की भौतिक प्रगति तो बहुत हो गई है, परंतु अमेरिका के नागरिकों में सुख, संतोष और समाधान का पूर्णतया अभाव है। अमेरिका में व्यक्ति के जीवन में परस्पर विरोध, असमाधान, असंतोष, सर्वाधिक अपराध और आत्महत्याएं बहुत बड़ी मात्रा में व्याप्त हैं। अमेरिकी नागरिकों में तीव्र रक्तचाप, हृदय रोग एवं अपराध की प्रवृत्ति बहुत अधिक मात्रा में पाई जा रही है। पूरे विश्व को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला अमेरिका अपने नागरिकों के लिए भौतिक समाधान से आगे बढ़कर मानसिक समाधान प्राप्त नहीं कर सका है। इस धरा पर जन्म लेने के बाद प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य आखिर है क्या? सम्भवतः सुख जो चिरंतन एवं घनीभूत हो। इतनी भौतिक प्रगति करने के बाद भी अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के नागरिकों में समाधान व सुख का अभाव है। ईसा ने कहा था कि 'सम्पूर्ण संसार का साम्राज्य भी प्राप्त कर लिया और यदि आत्मा का सुख खो दिया तो उससे क्या लाभ?'

भारत में छोटी से छोटी इकाई व्यक्ति संगठित और एकात्म है एवं व्यक्ति को खंडो में विभक्त समझने की बुद्धिमता प्रदर्शित नहीं की गई है। परंतु, अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक ने वर्णन किया है कि 'सड़कों पर एक ऐसी बड़ी भीड़ हमेशा लगी रहती है जो आत्मविहीन, मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ, एक दूसरे से अपरिचित और निःसंग स्थिति में है। उनका अपने ही साथ समन्वय नहीं तो दुनिया के साथ क्या होगा? व्यक्ति का समाज के साथ समन्वय नहीं। व्यक्ति भी संगठित और एकात्म इकाई नहीं। केवल भौतिक स्तर पर विचार करने के कारण वहां व्यक्ति को भौतिक एवं आर्थिक प्राणी माना गया है। यदि भौतिक आर्थिक उत्कर्ष मानव को मिले तो उससे सुख की प्राप्ति होगी, यह माना गया। किंतु भौतिक आर्थिक उत्कर्ष की चरम सीमा होने पर भी सुख का अभाव है और इसका कारण यही है कि वहां खंड खंड में विचार करने की प्रणाली है, जिसमें व्यक्ति को केवल भौतिक आर्थिक प्राणी मान लिया गया है और व्यक्ति के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित एवं एकात्म रूप में विचार नहीं किया गया है।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में यह माना गया है कि मनुष्य एक आर्थिक प्राणी भी है एवं 'आहार, निद्रा, भय, मैथुन, आर्थिक आवश्यकताओं, आदि' की तृप्ति की बात भारत में भी कही गई है। इन जरूरतों की पूर्ति होना चाहिए, इस तथ्य को भी स्वीकार किया गया है। किंतु भारत में मनुष्य को आर्थिक प्राणी से कुछ ऊपर भी माना गया है। मनुष्य आर्थिक प्राणी के साथ साथ वह एक शरीरधारी, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक प्राणी भी है। भारतीय मनुष्य के व्यक्तित्व के अनेकानेक पहलू है। अतः यदि सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का संगठित और एकात्म रूप से विचार नहीं हुआ तो उसको सुख समाधान की अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए भारत में इस दृष्टि से संगठित एवं एकात्म स्वरूप का विचार हुआ है। मनुष्य की आर्थिक एवं भौतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर यह कहा गया है कि इन वासनाओं की तृप्ति होनी चाहिए लेकिन साथ ही यह भी कहा गया है कि इन आवश्यकताओं पर कुछ वांछनीय मर्यादा होना भी आवश्यक है। गीता के तृतीय अध्याय के 42वें श्लोक में कहा गया है कि इंद्रियां (विषयों से) ऊपर स्थित हैं, इंद्रियों से मन उत्कृष्ट है। बुद्धि मन से भी ऊपर अवस्थित है, जो बुद्धि की अपेक्षा भी उत्कृष्ट है और उससे भी अगम्य है - वही आत्मा है। अतः काम को स्वीकार करने के उपरांत भी उसे अनियत्रिंत नहीं रहने दिया गया है। काम की पूर्ति धर्म के विरुद्ध नहीं होनी चाहिए, ऐसा भारतीय शास्त्रों में कहा गया है।

प्राचीन भारत में अर्थ के महत्व को भी स्वीकार किया गया है एवं अर्थशास्त्र की रचना भी हुई है। यह माना जाता रहा है कि राज्य के समस्त नागरिकों की भौतिक आवश्यकताओं की पर्याप्त पूर्ति होनी चाहिए ताकि इसके अभाव में अपना पेट पालने के लिए व्यक्ति को 24 घंटे चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़े। राज्य के नागरिकों को पर्याप्त अवकाश मिल सके, जिससे वह संस्कृति, कला, साहित्य और भगवान आदि के बारे में चिन्तनशील हो सके। इस प्रकार अर्थ और काम को मान्यता देकर साथ ही यह भी कहा गया है कि एक व्यक्ति का अर्थ और काम उसके विनाश का अथवा समाज के विघटन का कारण न बने। इस दृष्टि से भारत के प्राचीन दृष्टाओं ने विशिष्ट दर्शन दिया था। उसमें विश्व की धारणा के लिए शाश्वत नियम और सार्वजनिक नियम देखे थे, उनका दर्शन किया था। व्यक्ति को विनाश से बचाने के लिए, समाज को विघटन से बचाने के लिए एवं व्यक्ति के परम उत्कर्ष को प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक एवं सार्वदेशिक नियमों के प्रकाश में जो अवस्था उन्होंने बनायी उसके समुच्चय को धर्म कहा गया। इस धर्म के अंतर्गत अर्थ और काम की पूर्ति का भी विचार हुआ। साथ ही, प्रत्येक व्यक्ति परम सुख यानी मोक्ष प्राप्त कर सके, इसका चिंतन भी हुआ। इस प्रकार धर्म और मोक्ष के मध्य अर्थ और काम को रखते हुए चतुर्विध पुरुषार्थ की कल्पना भारत में ही की गई है। इस समन्वयात्मक, संगठित और एकात्मवादी कल्पना में व्यक्ति का व्यक्तित्व विभक्त नहीं हुआ। यह आत्मविहीन एवं मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ प्राणी न बन सका। इस चतुर्विध पुरुषार्थ ने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक बौद्धिक क्षमताओं के अनुसार अपना जीवनादर्शन चुनने का अवसर दे दिया और साथ ही व्यक्तित्व को अखंड बनाए रखा।

यह स्मरण रखना चाहिए कि जहां व्यक्ति के व्यक्तित्व रूपी विभिन्न पहलू संगठित नहीं है या व्यक्ति संगठित नहीं है, वहां समाज संगठित कैसे हो सकता है? इस संगठित आधार पर ही भारत में व्यक्ति से परिवार, समाज, राष्ट्र, मानवता और चराचर सृष्टि का विचार किया गया। एकात्म मानवदर्शन इसी का नाम है और आज भारत में आर्थिक विकास को एकात्म मानववाद के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए ही गति दी जानी चाहिए।

- :सौजन्य :-

ईवी ड्राइव द फ्यूचर

महिंद्रा ने आगामी BE 6e और XEV 9e इलेक्ट्रिक एसयूवी का टीज़र किया जारी

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी लाइनअप BE 6e और XEV 9e के टीज़र स्केच जारी किए हैं। ये आगामी मॉडल ब्रांड के विकास का संकेत देते हैं, जिसमें बोल्ड एस्थेटिक्स और इनोवेशन का मिश्रण है। इन इलेक्ट्रिक ओरिजिन एसयूवी का वैश्विक अनावरण 26 नवंबर, 2024 को होने वाला है।

BE 6e और XEV 9e को महिंद्रा के ₹हार्टकोर डिज़ाइनर₹ दर्शन के तहत डिज़ाइन किया गया है, जो ऐसे वाहन बनाने पर जोर देता है जो उपयोगकर्ताओं के साथ गहरा संबंध बनाते हैं। डिज़ाइन दृष्टिकोण कमांडिंग एक्सटीरियर को सावधानीपूर्वक तैयार किए गए इंटीरियर के साथ जोड़ता है, जो प्रीमियम सौंदर्यशास्त्र के साथ कार्यक्षमता को जोड़ता है। गतिशील स्टाइलिंग, प्रगतिशील अनुपात और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का लाभ उठाकर, ये एसयूवी महिंद्रा की नवीनता और आधुनिक विलासिता की खोज का प्रतीक हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के चीफ डिजाइन और क्रिएटिव ऑफिसर प्रताप बोस ने कहा कि 'हार्टकोर डिजाइनर₹ का उद्देश्य डिजाइन के माध्यम से ग्राहकों के साथ भावनात्मक संबंध बनाना है। उन्होंने कहा, ₹हमारे इलेक्ट्रिक ओरिजिन एसयूवी से प्यार करने के लिए तैयार हो जाइए।'

कंपनी ने BE 6e को एक नियम तोड़ने वाली एसयूवी बताया है, जिसमें एक नुकीला, एथलेटिक सिल्हूट है। इसकी स्पोर्टी प्रोफ़ाइल, गढ़ी हुई सतहें और वायुगतिकीय विशेषताएँ प्रदर्शन और चपलता पर इसके फ़ोकस को उजागर करती हैं। दूसरी ओर, XEV 9e ₹परिष्कार और प्रदर्शन की अंतिम अभिव्यक्ति₹ है, जो एक एसयूवी कूप डिज़ाइन पेश करती है जो लक्जरी को बोल्डनेस के साथ जोड़ती है।

आधिकारिक शुरुआत के लिए उत्सुकता बढ़ने के साथ, महिंद्रा की BE 6e और XEV 9e इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में नए मानक स्थापित करने के लिए तैयार हैं, जो स्टाइल, प्रदर्शन और भावनात्मक अपील के मामले में एसयूवी के भविष्य को फिर से परिभाषित करेंगे।

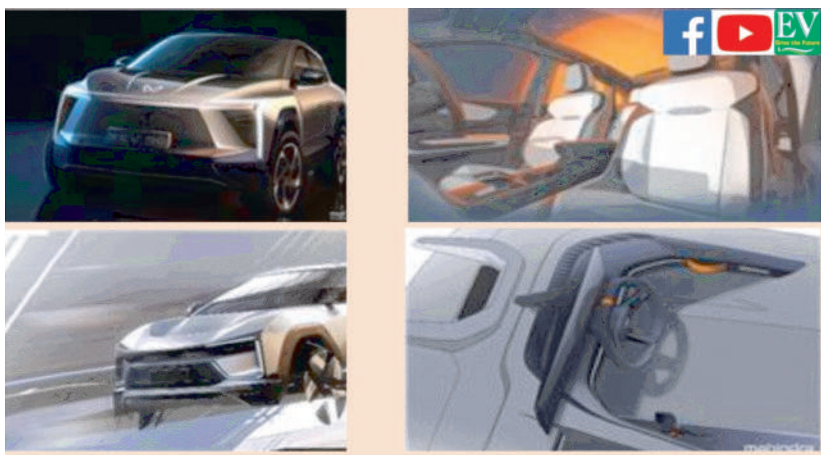

अब धर्मशाला में ई-रिक्शा चलाने की तैयारी

परिवहन विशेष न्यूज

स्मार्ट सिटी धर्मशाला में ई-रिक्शा चलाने के लिए नगर निगम की ओर से योजना तैयार की गई है। इसमें रामनगर और शामनगर समेत शहर के उन इलाकों में इन रिक्शा को चलाने का प्रस्ताव है, जहां अभी सार्वजनिक परिवहन सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसके लिए नगर निगम ने क्षेत्रीय परिवहन विभाग से चर्चा की है और प्रस्ताव को मंजूरी के लिए प्रदेश सरकार को भी भेज दिया है।

जानकारी के अनुसार धर्मशाला शहर के रामनगर और शामनगर में अभी सार्वजनिक परिवहन सुविधा उपलब्ध नहीं है। इन इलाकों में लोग निजी या टैक्सी के जरिए ही सफर करते हैं। इलाके में सार्वजनिक परिवहन सुविधा उपलब्ध करवाने की भी मांग उठाई गई है। इससे न केवल इलाके के लोगों को परिवहन सुविधा मिलेगी, बल्कि निजी वाहनों का दबाव भी कम होगा। साथ ही अगर ई-रिक्शा चलाने की योजना सफल होती है, तो इसमें कई लोगों को रोजगार भी मिलेगा। इसके अलावा ई-रिक्शा के कारण पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं होगा।

स्मार्ट सिटी में बेहतर परिवहन सुविधा उपलब्ध करवाने की दिशा में भी काम किया जाना है। रामनगर व शामनगर क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए इन क्षेत्रों में ई-रिक्शा चलाने की योजना पर काम किया जा रहा है तथा आरटीओ से चर्चा के बाद प्रस्ताव भी मंजूरी के लिए सरकार को भेज दिया गया है। - नीनू शर्मा, महापौर, नगर निगम धर्मशाला

मारुति स्विफ्ट हाइब्रिड टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट, टेलगेट पर दिखा हाइब्रिड बैज

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की सड़कों पर मारुति स्विफ्ट हाइब्रिड को टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है। टेस्टिंग के दौरान स्पॉट हुई मॉडल के टेलगेट पर हाइब्रिड बैज दिखाई दिया है। इसके साथ ही नए 4th जनरेशन स्विफ्ट में बड़ा डिजाइन ओवरहाल भी देखने के लिए मिला है। रिपोर्ट्स के मुताबिक मारुति स्विफ्ट हाइब्रिड में ADAS फीचर भी देखने के लिए मिल सकता है।

नई दिल्ली। भारत की अग्रणी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी ने नवंबर 2024 के शुरुआत में नई डिजायर लॉन्च की है। जिसमें 1.2 लीटर 3-सिलेंडर जेड-सीरीज इंजन दिया गया है। यह इंजन चौथी पीढ़ी की स्विफ्ट में भी इस्तेमाल किया गया था। इस इंजन का नया वेरिएंट भारत में चौथी जनरेशन की स्विफ्ट में टेस्ट किया जा रहा है। हाल ही में नई स्विफ्ट हाइब्रिड को बेंगलुरु में टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। जिसके टेलगेट पर हाइब्रिड बैज लगा हुआ दिखाई दिया है। आइए जानते हैं स्विफ्ट हाइब्रिड के टेस्टिंग मॉडल में क्या देखने के लिए मिला है और इससे यह हैचबैक कितनी फायदेमंद हो जाएगी।

2025 Maruti Swift Hybrid: क्या दिखा

स्विफ्ट भारत की पसंदीदा हैचबैक रही है। यह अपने सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार रहती है। नए 4th जनरेशन स्विफ्ट में बड़ा डिजाइन ओवरहाल किया गया है। इसके अलावा, इसके बोनट के नीचे भी एक बड़ा ओवरहाल देखने के लिए मिला है।

इसके टेलगेट पर हाइब्रिड बैज देखने के लिए मिला है। जिसपर हाइब्रिड का लोगो देखने के लिए मिला है। ग्लोबल लेवल पर यह 1.2L Z-सीरीज 3-सिलेंडर इंजन पर आधारित माइल्ड हाइब्रिड सेटअप के साथ आती है।

इसके पुरानी K-सीरीज 4-सिलेंडर 1.2L मोटर को नए 1.2L Z-सीरीज़ 3-सिलेंडर इंजन से बदल दिया गया था। यह नया इंजन हाई माइलेज देने के साथ ही ज्यादा किफायती है। भारत में इस इंजन को हाइब्रिड सेटअप नहीं मिलता है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पेश किया जाता है।

इसमें मिलने वाला माइल्ड हाइब्रिड वर्जन ग्लोबल लेवल पर 82 बीएचपी की पावर और 112 एनएम का अधिकतम टॉर्क जनरेट करता है। इसके ग्लोबल मॉडल में CVT ऑटोमैटिक गियरबॉक्स दिया जाता है, जबकि भारत में AMT गियरबॉक्स के साथ आती है।

2025 Maruti Swift Hybrid: क्या भारत में होगी लॉन्च

अगर मारुति सुजुकी माइल्ड-हाइब्रिड वर्जन के साथ स्विफ्ट को लॉन्च करती है, तो यह पहले से बेहतर माइलेज और कीमत में बढ़ोतरी के साथ आ सकती है।

मारुति स्विफ्ट हाइब्रिड में ADAS सिस्टम देखने के लिए मिल सकता है। दरअसल, इस फीचर के साथ यह ग्लोबल मॉडल में देखा जा चुका है।

टेस्टिंग के दौरान बेंगलुरु में दिखाई दी नई स्विफ्ट ADAS हार्डवेयर वाला वैश्विक-स्पेक मॉडल हो सकता है जिसका उपयोग मारुति सुजुकी ADAS सॉफ़्टवेयर और एल्गोरिदम को बेहतर बनाने के कर रही है।

भारतीय सड़कों पर इसकी टेस्टिंग जिस तरह से की जा रही है, उसे देखते हुए लग रहा है कि इसे साल 2025 में लाया जा सकता है। यह पहले से भी अच्छे माइलेज के साथ आ सकती है। साथ ही इसमें ADAS के साथ और भी कई एडवांस फीचर्स देखने के लिए मिल सकते हैं।

टाटा सिएरा के आईसीई & ईवी के लॉन्च टाइम से उठा पर्दा, एडवांस फीचर्स समेत मिलेगा 550 km का रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स की अपकमिंग कार सिएरा ICE और EV की लॉन्च के टाइमलाइन का खुलासा हो गया है। यह दोनों मॉडल साल 2025 के अंत तक लॉन्च हो सकते हैं। Tata Sierra के EV को ICE वेरिएंट से पहले लॉन्च किया जाएगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, टाटा सिएरा के उत्पादन का काम साल 2025 की तीसरी तिमाही से शुरू हो सकता है। जिसकी वजह से इसके फेस्टिव सीजन के आसपास लॉन्च होने की संभावना है। आइए जानते हैं कि Tata Sierra में कौन से फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे।

Tata Sierra: एक्सटीरियर

टाटा सिएरा को पहली बार ऑटो एक्सपो 2020 में एक कॉन्सेप्ट के रूप में पेश किया गया था। इसमें आगे और पीछे की तरफ पूरी लंबाई वाली LED लाइट बार के साथ ही फ्लश डोर हैंडल देखने के लिए मिला था। हालांकि मूल सिएरा से सिग्नेचर आयताकार साइड विंडो डिज़ाइन को लिया जा सकता है। अब इसके लॉन्च होने के बाद ही पता चलेगा कि मूल डिजाइन का कितना हिस्सा प्रोडक्शन मॉडल में शामिल किया गया है।

Tata Sierra: इंटीरियर

इसके इंटीरियर की ज्यादा जानकारी अभी उपलब्ध नहीं है, लेकिन हमें उम्मीद है कि प्रोडक्शन-स्पेक सिएरा में अपमार्केट केबिन लेआउट देखने के लिए मिलेगा जो हमें 90 के दशक के मॉडल की याद दिलाएंगे।

प्रोडक्शन-रेडी सिएरा में भी हैरियर और सफारी जैसा डिज़ाइन लेआउट देखने के लिए मिल सकता है, लेकिन डैशबोर्ड और सेंटर कंसोल के लिए मिनिमलिस्ट डिजाइन हो सकता है।

इसमें अलग-अलग सीटिंग लेआउट जैसे कि चार और पांच सीटें देखने के लिए मिल सकती है। इसमें सफारी की तरह पीछे के पैसेंजर के लिए वेंटिलेटेड सीटें हो सकती है। ICE और EV में केबिन थीम या अपहोल्स्ट्री के कलर में अंतर देखने के लिए मिल सकता है।

Tata Sierra: फीचर्स

टाटा सिएरा में 12.3-इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 12.3-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट, पावर्ड और वेंटिलेटेड फ्रंट सीटें, वायरलेस फोन चार्जर और हाई-फाई साउंड सिस्टम मिलने की उम्मीद है। साथ ही कनेक्टेड कार तकनीक, वायरलेस एप्पल कारप्ले और एंड्रॉयड ऑटो, कई ड्राइविंग मोड, एम्बिएंट लाइटिंग और पैनोरमिक सनरूफ भी हो सकता है। इसमें व्हीकल टू लोड (V2L) और व्हीकल टू व्हीकल (V2V) फीचर्स भी मिल सकते हैं।

Tata Sierra: सेफ्टी

टाटा सिएरा में पैसेंजर की सेफ्टी के लिए एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) समेत कई एयरबैग, ESP, हिल होल्ड असिस्ट, डाउनहिल कंट्रोल, ऑटो-होल्ड के साथ इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक, ड्राइवर अटेंशन वार्निंग, रियर-व्हील डिस्क और मल्टी-कोलिजन ब्रेकिंग जैसे फीचर्स मिल सकते हैं।

Tata Sierra: पावरट्रेन और कीमत

टाटा सिएरा के ICE वेरिएंट को पेट्रोल और डीजल सहित कई इंजन ऑप्शन के साथ पेश किया जा सकता है। इसमें 1.5-लीटर फोर-सिलेंडर टर्बो-पेट्रोल इंजन देखने के लिए मिल सकता है। इसमें 45 kWh और 55 kWh बैटरी पैक मिलने की उम्मीद है, जिसकी रेंज 550 किलोमीटर से ज्यादा हो सकती है। टाटा सिएरा ईवी की कीमत 25 लाख रुपये से शुरु हो सकती है।

ईवीएक्सपो ने ईवी को बढ़ावा देने के लिए प्रचार-प्रसार अभियान किया तेज़

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। ईवीएक्सपो के 'उत्कृष्टता के 10 वर्ष' पूरे होने पर पूरे दिल्ली में अख़बारों, रेडियो, आउटडोर यानी बस पैनल और ऑटो पर्दा, सोशल और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर प्रचार-प्रसार अभियान चलाए जा रहे हैं। अगले एक महीने तक ईवीएक्सपो का प्रचार-प्रसार अभियान दिल्ली के विभिन्न इलाकों में चलेगा।

पिछले दस सालों में भारत सरकार द्वारा बनाई गई ईवी नीति का उद्देश्य लोगों में जागरूकता पैदा करना है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग इलेक्ट्रिक वाहन अपना सकें।

इस प्रदर्शनी के लिए प्रदर्शित पोस्टर में आप देखेंगे कि ऑल्टियस ऑटो सॉल्यूशंस द्वारा आयोजित ईवीएक्सपो के टाइटल पार्टनरः खालसा ईवी, को-पावर्ड पार्टनरः ओलिव, एसोसिएट पार्टनरः सीवाई गोल्ड इंटरनेशनल के साथ ही एक्टिविटी पार्टनरः उड़ान, बैटरी और ड्राइवट्रेन पार्टनरः लिवगार्ड ड्राइवट्रेन, लैनयार्ड पार्टनरः टीएनआर, टू व्हीलर पार्टनरः मैक्सिम ईबाइक, लैनयार्ड पार्टनरः सफारी ई-रिक्शा, रजिस्ट्रेशन पार्टनरः रेज ग्लोबल एनर्जी, लैनयार्ड पार्टनरः एक्सेस टू पावर एक्सपी विद एक्स्ट्रा पावर, लैनयार्ड पार्टनरः ईस्टमैन, लाइटिंग पार्टनरः केके लाइट्स, पायनियर पार्टनरः स्पीगो-मोरनी, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय निर्यात होमोलोगेशन पार्टनरः एटीएसआईपीएल, नॉलेज पार्टनरः राजुलेक्स, लास्ट माइल कनेक्टिविटी पार्टनरः सिटीलाइफ के अलावा आइकेट और ग्लोबल ट्रेड एंड टेक्नोलॉजी काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा समर्थित और साथ ही ईवी ड्राइव द फ्यूचर मीडिया पार्टनर के रूप में दिखाई देंगे।

सरकार ने इलेक्ट्रिक निर्माण उपकरण सुरक्षा अनुपालन की समयसीमा बढ़ाई

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय वाहन निर्माताओं को इलेक्ट्रिक निर्माण उपकरणों के लिए कड़े सुरक्षा मानकों का अनुपालन करने के लिए तीन महीने का विस्तार दिया गया है, जो मूल रूप से 1 अक्टूबर से लागू होने वाले थे।

नई दिल्ली। 21 नवंबर को घोषित संशोधित समयसीमा के अनुसार, निर्माताओं को अब 1 जनवरी, 2025 तक नए मानदंडों का अनुपालन करना होगा।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा पेश किए गए ये नियम ऑटोमोटिव उद्योग मानकों (एआईएस)-174 के अनुपालन को अनिवार्य करते हैं, जिसमें बैटरी सिस्टम, विद्युत घटकों और समग्र वाहन निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सुरक्षा उपाय शामिल हैं।

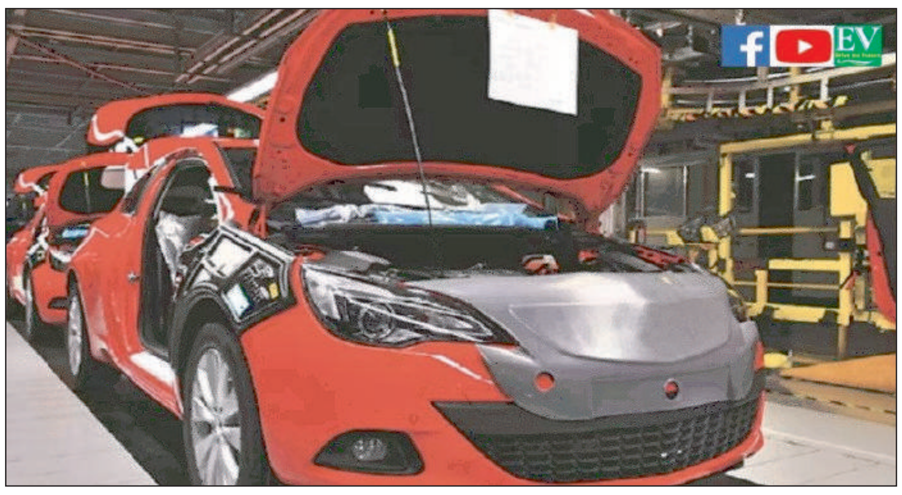

यह विस्तार ऐसे समय में किया गया है जब निर्माताओं को शुरुआती समयसीमा के भीतर कड़े मानकों को पूरा करने में कठिनाई हो रही थी। यह निर्माण उपकरण क्षेत्र में सुरक्षित और अधिक टिकाऊ प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए केंद्र द्वारा एक महत्वपूर्ण कदम है, खासकर जब देश विद्युतीकृत औद्योगिक मशीनरी की ओर बढ़ रहा है।

यह कदम अगस्त 2024 में मसौदा नियमों के प्रकाशन के बाद उठाया गया है, जिसमें जनता से प्रतिक्रिया आमंत्रित की गई थी। हालांकि, सरकार ने कहा कि कोई आपत्ति या सुझाव प्राप्त नहीं हुए, जिससे संशोधन को बिना किसी बदलाव के आगे बढ़ने की अनुमति मिल गई।

समयसीमा बढ़ाकर सरकार का लक्ष्य कड़े सुरक्षा उपायों की आवश्यकता और उद्योग की नए मानकों के अनुकूल होने की क्षमता के बीच संतुलन बनाना है। इससे अद्यतन मानदंडों का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित होगा।

नए सुरक्षा नियमों का उद्देश्य निर्माण स्थलों पर काम करने वाले श्रमिकों और आम जनता दोनों की सुरक्षा करना है। हालाँकि इलेक्ट्रिक निर्माण वाहन बाजार अभी भी उभर रहा है, लेकिन सरकार शुरू से ही कड़े सुरक्षा मानदंड स्थापित करना चाहती है।

एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने कहा कि नए नियम तब पेश किए जा रहे हैं जब प्रमुख कंपनियाँ इलेक्ट्रिक डंपर, अर्थ-मूविंग उपकरण और अन्य निर्माण वाहनों का उपयोग करना शुरू कर रही हैं। इन सुरक्षा मानकों की शुरूआत इस क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक सक्रिय उपाय है।

क्षेत्र के विशेषज्ञों ने जोर देकर कहा कि AIS-174 के कार्यान्वयन से निर्माण स्थलों पर ऑपरेटरों और पैदल चलने वालों दोनों की सुरक्षा को प्राथमिकता मिलेगी। इसके अलावा, निर्माताओं को इन सख्त सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काफी निवेश करना होगा।

यह मानक बैटरी सुरक्षा, विद्युत प्रणालियों और चार्जिंग बुनियादी ढांचे सहित इलेक्ट्रिक वाहनों के डिजाइन, निर्माण और प्रदर्शन के लिए विशिष्ट नियमों की रूपरेखा तैयार करता है।

इन नियमों को शामिल करने से उत्सर्जन और ध्वनि प्रदूषण में भी कमी आने की उम्मीद है, जिससे निर्माण स्थल पर्यावरण के लिए अधिक अनुकूल बनेंगे।

एक विशेषज्ञ ने कहा कि चूंकि निर्माता इन नई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयारी कर रहे हैं, इसलिए अनुसंधान, विकास और अनुपालन में पर्याप्त निवेश की उम्मीद है, जिससे इस क्षेत्र में और अधिक नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

प्रयागराज में यातायात सुगम बनाने हेतु ई-रिक्शा के लिए रूट और रंग निर्धारित करने का निर्णय

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। प्रयागराज के हर सड़क पर बेतरतीब ढंग से दौड़ रहे ई-रिक्शा का संकट जल्द ही खत्म होने वाला है। शहर में यातायात के लिए चुनौती बने इस परिवहन के साधन पर क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय की योजना से लगाम लगेगी। इस योजना के तहत ई-रिक्शा पर रंगीन स्टीकर चिपकाए जाएंगे, जिससे यह पता चलेगा कि संबंधित ई-रिक्शा शहर के किस सेक्टर में चलने के लिए अधिकृत है। ये रंगीन स्टीकर उन ई-रिक्शा पर लगाए जाएंगे, जिनका आरटीओ कार्यालय में बाकायदा पंजीकरण होगा। बिना इस स्टीकर के ट्रैफिक पुलिस किसी भी ई-रिक्शा को शहर में चलने की इजाजत नहीं देगी, यह स्टीकर रिक्शा पर प्रमुखता से प्रदर्शित होगा।

यह स्टीकर जारी करने से पहले ई-रिक्शा के चालक और मालिक का पुलिस सत्यापन भी किया जाएगा। महाकुंभ के मद्देनजर अफसरों ने यह योजना तैयार की है। आरटीओ कार्यालय प्रशासन की ओर से जारी स्टीकर वाले ई-रिक्शा को ही कुंभ मेला क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। ई-रिक्शा की भारी संख्या के कारण शहर की कई प्रमुख सड़कों पर यातायात की गति धीमी हो जाती है और जाम की स्थिति बन जाती है। चालकों की लापरवाही और मनमानी के चलते देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु चोटिल भी हो सकते हैं।

दो माह पहले मंडलायुक्त के साथ अफसरों की बैठक में ई-रिक्शा के लिए रूट और रंग निर्धारित करने का निर्णय लिया गया था। काफी मंथन और समीक्षा के बाद अफसर इस नतीजे पर पहुंचे कि सिर्फ कलर कोड और रूट तय करने से समस्या का समाधान नहीं होगा। आरटीओ में करीब 15 हजार ई-रिक्शा पंजीकृत हैं। रूटवार कलर कोड तय होने के बाद भी इनके चालक इनका प्रयोग बंद नहीं करेंगे। ऐसे में स्टिकर चिपकाने का उपाय सोचा गया। ये स्टिकर ट्रैफिक पुलिस और आरटीओ प्रवर्तन कार्यालय जारी करेंगे और इनकी फर्जी कॉपी बनाना आसान नहीं होगा।

एआरटीओ प्रवर्तन अलका शुक्ला ने बताया, "इससे इन रिक्शों का रूट तय करने में भी मदद मिलेगी।"

जहरीली हवा से जूझती जिंदगी

विजय गर्ग

देश की राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में हवा की गुणवत्ता बेहद खराब या यों कहें कि जानलेवा बनती जा रही है। राजधानी के कई इलाकों में वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 के पार पहुंच गया है। शीर्ष न्यायालय भी दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बढ़ते प्रदूषण को लेकर गंभीर है और उसने सख्त उपाय करने को कहा है। केंद्र सरकार से लेकर दिल्ली और आसपास के राज्यों की सरकारें अलग-अलग दावे करती रही हैं, लेकिन इससे से प्रदूषण स्तर में कोई बड़ी राहत नजर नहीं आती है। भले ही इस गंभीर होती समस्या से पार पाने के लिए दिल्ली सरकार कई उपाय किए और प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए निर्देश जारी किए, लेकिन कारगर साबित नहीं हो पा रहे। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) की ताजा रपट बताती है कि विश्व स्तर पर हवा इस हद तक जहरीली चुकी है कि हमारी सांसों में धीमा जहर घुल रहा है। फेफड़ों 'प्रदूषणकारी तत्त्वों की तह लग रही है, जो धीमी मौत' का एक बड़ा कारण साबित हो सकता है।

डब्लूएचओ की रपट बताती है कि प्रतिवर्ष लगभग पचास लाख लोग जहरीली हवा के चंगुल में आकर समय से पहले जिंदगी को अलविदा कह देते हैं। पर्यावरण के लिए काम करने वाली संस्था 'ग्रीनपीस' ' की एक रपट के मुताबिक राजधानी दिल्ली दुनियाभर में सभी देशों की राजधानियों में सबसे ज्यादा प्रदूषित है। सवाल है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली को कोई स्थायी समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती ? सरकारें और राजनेता एक दूसरे को जिम्मेदार ठहराने के बजाय समाधान के लिए तत्पर क्यों नहीं होते ?

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रपट में पीएम 2.5 के आधार पर बताया गया है कि दुनिया 'के सबसे 15 शहरों में 12 शहर भारत के हैं। वायु गुणवत्ता पर रपट के मुताबिक दुनिया के 30 सबसे अधिक प्रदूषित शहर भारत में हैं, जहां पीएम 2.5 की सालाना सघनता सबसे ज्यादा है। ₹बीएमजे₹ के अध्ययन में पाया गया है प्रदूषण वजह से भारत में हर साल कई कई लोगों की मौत होती है। पीएम यानी 'पार्टिकुलेट मैटर' एक किस्म है। इसके कण बेहद सूक्ष्म होते हैं जो हवा में बहते हैं। पीएम 2.5 या पीएम 10 हवा में कण 'आकार को बताता है। वायु में मौजूद यही कण हवा के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर खून में घुल जाते हैं। इससे शरीर में कई तरह की बीमारियां जैसे अस्थमा और सांसों की दिक्कत हो सकती है। गौर करने वाली बात यह है कि आबादी के लिहाज से सबसे ज्यादा नुकसान भारत को ही होता है, लिहाजा उसे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए तत्काल कुछ सार्थक और ठोस उपाय करने होंगे।

दुनिया में इस समय सबसे ज्यादा बीमारियां पर्यावरण प्रदूषण की वजह से हो रही हैं। मलेरिया, एड्स और तपेदिक से प्रति वर्ष जितने लोग मरते हैं, उससे कहीं ज्यादा लोग प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से मर जाते हैं। बहरहाल, यही सवाल उठता है कि वायु प्रदूषण से हर वर्ष होने वाली मौत को रोकने के लिए सरकार की तरफ से क्या कदम उठाए जा रहे हैं? दशकों से यह बात सरकार और समाज को मालूम है, लेकिन इसको लेकर दोनों उदासीन बने हुए हैं। ऐसा लगता है कि लोग अपने त्रासदीपूर्ण भविष्य को लेकर पूरी तरह से बेखबर हैं। वास्तव में वायु प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल होती जा रही है।

कि भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा है। वस्तुतः आज मनुष्य भोगवादी जीवन शैली का इतना आदी और स्वार्थी हो गया है कि अपने जीवन के मूल आधार वायु को ही दूषित कर रहा है। नैतिकता और कर्तव्य सब भूल रहा है। भौतिकतावादी जीवन शैली और विकास की अंधी दौड़ में आज मनुष्य यह भी भूल गया है कि जीवन के लिए स्वच्छ वायु कितनी आवश्यक है।

बढ़ते वाहनों और कल-कारखानों से निकलते धुएं ने वायु को, वृक्षों की कटाई ने जीवनदायिनी गैसों को और मनुष्यों द्वारा फैलाई जा रही गंदगी ने जल को इस तेजी के साथ प्रदूषित किया है कि अब दुगनी गति से बीमारियां फैल रही है। यह सिलसिला आज भी जारी है। मानवीय सोच और विचारधारा में इतना ज्यादा बदलाव आ है कि किसी को भविष्य की कोई चिंता नहीं है। कोई दो राय नहीं है कि आज मनुष्य प्रकृति को रिक्त करता चला जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण असंतुलन के कारण भूमंडलीय ताप, अम्लीय वर्षा, बर्फीली चोटियों का पिघलना, सागर के जल स्तर का बढ़ना, मैदानी नदियों का सूखना, उपजाऊ भूमि का घटना और रेगिस्तानों का बढ़ना आदि विकट परिस्थितियां पैदा होने लगी है। यह सब मनुष्यों की लापरवाही का नतीजा है। अफसोस की बात है कि हम फिर भी चेत नहीं हो रहे हैं।

नतीजा भारत में वायु प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है। चाहे केंद्र हो या फिर राज्य सरकारें, कोई भी प्रदूषण से निपटने के लिए गंभीर नहीं दिखता। जाहिर है, प्रदूषण से लड़ने के लिए दीर्घकालीन नीतियां बनाने की जरूरत है, वहीं लोगों को अपने स्तर पर वे सभी जतन करने की आवश्यकता है, जो हवा को जहरीली होने से रोकें। यह ठीक है कि वायु प्रदूषण से निपटने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों ने कई कदम उठाए थे। फिर भी वायु प्रदूषण से निपटने में हम फिसड्डी साबित हुए। ऐसे में भारत की जिम्मेदारी बड़ी और ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो जाती है, क्योंकि हमें विकसित और विकासशील दोनों ही प्रकार के देशों में किए जा रहे उपायों को अपनाना पड़ेगा।

दअरसल, वायु प्रदूषण ऐसा मुद्दा है जो पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है और इसे बिना आपसी सहमति और ईमानदार प्रयास के हल नहीं किया जा सकता है। वायु प्रदूषण से निपटने के लिए तात्कालिक कार्रवाई के बजाय निरंतर प्रयास करने की जरूरत है। स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाने, वाहनों की संख्या को नियंत्रित करने और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने जैसे उपाय दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकते हैं। पराली जलाने की समस्या को हल करने के लिए किसानों को बेहतर तकनीक और सबसिडी प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे अधिक पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को अपनाएं। इसके साथ ही निर्माण स्थलों पर प्रदूषण नियंत्रण उपायों का सख्ती से पालन और औद्योगिक उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए कड़े कानूनों की आवश्यकता है। एक व्यवस्थित निगरानी तंत्र से पूरे वर्ष वायु गुणवत्ता का मूल्यांकन करना जरूरी है ताकि प्रदूषण के स्तर समय रहते काबू में रखा जा सके। वायु प्रदूषण का मतलब केवल पेड़-पौधे लगाना ही नहीं है बल्कि, भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण को भी रोकना है। तभी कुछ ठोस नजर आ सकेगा। वक्त कुछ करने का है, न कि सोचने का।

संपादक की कलम से

हिंदुत्व की परीक्षा का चुनाव

महाराष्ट्र में यह संघ-भाजपा के 'हिंदुत्व' की परीक्षा का चुनाव था। आरएसएस के नेतृत्व में 15, 20, 30, 45 लोगों की छोटी-छोटी करीब 60,000 बैठकें आयोजित की गईं। ऐसा चुनाव-प्रचार अप्रतिम कहा जा सकता है। फोकस हिंदुत्व पर ही था, लिहाजा घर-घर से मतदाताओं और समर्थकों को निकाल कर बूथ तक पहुंचाने का काम एक लक्ष्य, एक संकल्प की तरह किया गया। संघ के काडर ने यह काम लोकसभा चुनाव के दौरान नहीं किया था। काडर नाराज था अथवा तटस्थ रहा या अति विश्वास के मानस में था कि प्रधानमंत्री मोदी के नाम पर मतदान हो ही जाएगा, लिहाजा चुनाव-प्रचार बिखरा-बिखरा सा रहा। उसके नतीजे अब दुनिया के सामने हैं। कमोबेश महाराष्ट्र के चुनाव में फोकस 'बंटेंगे, तो कटेंगे' और 'एक हैं, तो सेफ हैं' पर ही रहा, जो परोक्ष रूप से हिंदुत्व का ही आह्वान किया गया था। संघ ने भी इन नारों को सत्यापित किया। चुनाव-प्रचार के दौरान मकसद और चिंता यह नहीं थी कि कमोबेश भाजपा के कितने विधायक जीत सकते हैं, 100 का आंकड़ा पार होगा या नहीं, अंततः 'महायुति' के पक्ष में बहुमत हासिल होगा अथवा नहीं। बुनियादी चिंता और सरोकार यह था कि चुनाव के दौरान हिंदुत्व कितनी गहराई और व्यापकता में जा सकता है? उससे प्रभावित होकर कितना वोट हिंदुत्व के पक्ष में आ सकता है? महाराष्ट्र में जिस तरह मतदान किया गया और 1995 के बाद पहली बार 65 फीसदी से अधिक मतदान हुआ है, उसके मद्देनजर संघ-भाजपा का आकलन है कि चुनाव में हिंदुत्व का प्रयोग सफल रहा है। भाजपा का मानना है कि यदि वह 100 या उससे अधिक सीटें जीत कर सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभरती है, तो सरकार 'महायुति' की ही बनेगी।

हिंदुत्व का यह प्रयोग छोटे, सीमित स्तर पर झारखंड में भी किया गया। वहां आदिवासी और घुसपैठ के जरिए हिंदुत्व की बात कही गई और प्रचार किया गया कि आबादी के समीकरण नहीं बदलने चाहिए। बहरहाल चुनाव के बाद जो अनुमान सामने आए हैं, उनमें ज्यादातर के आकलन यही हैं कि महाराष्ट्र में भाजपा-महायुति सरकार बन सकती है। वैसे 'एग्जिट पोल' अपनी साख, सर्वेक्षण क्षमता और विश्वसनीयता खो चुके हैं, क्योंकि लोकसभा चुनाव से लेकर हरियाणा के जनादेश तक उनके आकलन बिल्कुल गलत और विपरीत साबित हुए हैं। फिर भी पेशेवर तौर पर जो अनुमान सार्वजनिक हुए हैं, उन्हें एकदम खारिज नहीं किया जा सकता। कुछ अनुमान ऐसे भी हैं कि महाराष्ट्र में 'महाविकास अघाड़ी' और झारखंड में झामुमो गठबंधन के पक्ष में बढ़त है। हमने कांग्रेस के स्तर पर भी जानकारी जुटाई थी। खुद कांग्रेस का मानना है कि महाराष्ट्र में उसका स्ट्राइक रेट 60 फीसदी के आसपास रह सकता है, जबकि झारखंड में उसने पूरा दायित्व झामुमो को दे रखा था। कांग्रेस लगभग निष्क्रिय थी। अलबत्ता कांग्रेस का मानना है कि संविधान, जातीय जनगणना आदि विधानसभा चुनाव के दौरान भी प्रमुख मुद्दे बने रहे। दरअसल संघ-भाजपा 1990 के 'हिंदुत्व' मुद्दे को नए सिरे से जीवित करना चाहते हैं। हालांकि प्रभु राम का भव्य मंदिर अयोध्या में बन चुका है और शेष निर्माण भी जारी है। अब मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि और काशी में विश्वनाथ कॉरिडोर का विस्तार और ज्ञानवापी मस्जिद से हिंदू मंदिर को कानूनन वापस लेना आदि हिंदुत्व के नए आधार हैं। दिलचस्प यह है कि केंद्र के साथ-साथ अधिकतर राज्यों में भाजपा-एनडीए सरकारें हैं, लिहाजा वे विकास का दावा भी कर सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी की कई योजनाओं की राष्ट्रव्यापी सार्थकता साबित हुई है। देश का बड़ा भाग आज भी प्रधानमंत्री के तौर पर मोदी का समर्थन कर रहा है। हालांकि देश पर करीब 200 लाख करोड़ रुपए का कर्ज है। महंगाई, बेरोजगारी, किसानी बेहद संवेदनशील मुद्दे हैं, लेकिन 'वोट जेहाद' का मुद्दा उछाला जाता है, तो हिंदुत्व के पक्ष में भी स्वाभाविक धुरवीकरण होता है।

इनके कान पर भी दें ध्यान

विजय गर्ग

दो स्तयार, खेल-कूद, मिट्टी से सने हाथ-पैर वाला बचपन अब किसी और जमाने की बात लगने लगी है। आज के बचपन पर गैजेट्स हावी हो रहे हैं, जहां पढ़ाई-लिखाई से लेकर खेल और मनोरंजन सब गैजेट्स से ही हो रहा है। इससे बच्चे ईयर प्लग्स और हेड फोन्स के आदी हो रहे हैं। इसके अलावा कानों का संक्रमण, अनुवांशिक कारक और गर्भावस्था के दौरान होने वाला संक्रमण का असर भी बच्चों के सुनने की क्षमता पर पड़ रहा है। विश्व भर में करोड़ों बच्चों की सुनने की क्षमता सामान्य नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, विश्व में लगभग 3 करोड़, 20 लाख बच्चे सुनने से संबंधित किसी न किसी समस्या से ग्रस्त हैं और इनमें से 60 प्रतिशत को रोका जा सकता है। विशेषज्ञ सुझाव देते हैं, यदि आपको बच्चे में सुनने की क्षमता में कमी के लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे बोलने में देरी, आवाजों के प्रति प्रतिक्रिया न देना या निर्देशों का पालन करने में कठिनाई, तो तुरंत ईएनटी विशेषज्ञ से परामर्श लें।

बच्चों में सुनने से संबंधित समस्याएं

- कंडक्टिव हियरिंग लॉसः कंडक्टिव हियरिंग लॉस तब होता है, जब बाहरी या मध्य कान क्षतिग्रस्त हो जाता है या किसी रुकावट के कारण ध्वनि तरंगें आंतरिक कान तक सामान्य रूप से नहीं पहुंच पाती हैं। कान का संक्रमण और कान में मैल जमा होने से भी यह समस्या हो सकती है।
- अचानक सुनाई देना बंद हो जानाः जब अचानक एक कान या दोनों कानों की सुनने की क्षमता खत्म हो जाती है तो इसे सेंसरी न्यूरल हियरिंग लॉस कहते हैं। यह स्थिति कान के अंदरूनी हिस्से या सुनाई देने वाली तंत्रिका में समस्या के कारण होती है। कान से दिमाग तक संदेश पहुंचाने वाली तंत्रिकाओं के क्षतिग्रस्त होने की वजह से धीरे-धीरे या अचानक से सुनने की क्षमता खत्म हो सकती है। यह समस्या तेज शोर के संपर्क में आने, गर्भावस्था के दौरान होने वाले संक्रमण या वंशानुगत कारणों से हो सकती है। एक शोध के अनुसार, यह बच्चों में स्थायी रूप से सुनने की क्षमता प्रभावित होने का प्रमुख कारण है।
- मिक्स्ड हियरिंग लॉसः इसमें सेंसरी न्यूरल और कंडक्टिव हियरिंग लॉस दोनों समस्याएं होती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि इसमें श्रवण तंत्रिका या आंतरिक कान प्रभावित होते हैं। कई मामलों में बाहरी या मध्य कान भी प्रभावित हो सकते हैं।
- ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (एपीडी): इसे हिंदी में श्रवण प्रसंस्करण विकार कहते हैं। यह सुनने से संबंधित ऐसी समस्या है, जिसमें कानों से सुनाई तो देता है, लेकिन मस्तिष्क को ध्वनि को ठीक तरह से प्रोसेस करने में परेशानी होती है। एपीडी से ग्रस्त बच्चों को बातों को समझने में परेशानी हो सकती है, खासकर शोर वाले माहौल में। कैसे करें पहचान बच्चे छोटे होते हैं, इसलिए माता-पिता के लिए यह जरूरी है कि वो बच्चों में सुनने से संबंधित समस्याओं की अनदेखी न करें और जरूरी जांच कराने में देरी न करें:
- कानों की नियमित जांचः सुनने से संबंधित समस्याओं की शीघ्र पहचान के लिए कानों की नियमित जांच महत्वपूर्ण है, जो बच्चे के भाषा विकास, सीखने की क्षमताओं और बातचीत को प्रभावित कर सकती है। 4 से 10 वर्ष के बीच बच्चे के कान की नियमित जांच जरूरी है।
- नवजात शिशु की जांचः नवजात शिशु में सुनने की क्षमता से संबंधित कोई दोष है या नहीं, इसके लिए उसके कानों की जांच कराना महत्वपूर्ण है। डॉक्टर आंतरिक कान में ध्वनि तरंगों को मापने के लिए ओटोकॉस्टिक इमिशन (ओएई) और ऑडिटरी ब्रेनस्टेम रिस्पांस (एबीआर) जैसे तरीकों का इस्तेमाल करेंगे, जिनमें कोई चीर- फाड़ नहीं होती है। समय पर डायग्नोसिस होने से तुरंत उपचार द्वारा कान की समस्या को ठीक किया जा सकता है।
- फॉलो-अप स्क्रीनिंगः जब आप अपने बच्चे के रुटीन चेकअप के लिए जाएं तो उसका हियरिंग टेस्ट भी कराएं। ऐसा विशेष रूप से शुरुआती वर्षों में किया जाना चाहिए, जब भाषा का विकास सबसे तेजी से होता है।

ऐसे बनी रहेगी बच्चों की सुनने की क्षमताबच्चों को स्तनपान कराएं, खासकर शुरुआती छह महीनों में। इससे उनका प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है और उन्हें कानों के संक्रमण से बचाया जा सकता है। आजकल बच्चों का शोर के प्रति एक्सपोजर बहुत बढ़ गया है। इससे बचाने के लिए अपने बच्चों को संगीत कार्यक्रमों, आतिशबाजी और ऐसे उपकरणों से दूर रखें, जिनसे जिनसे तेज शोर निकलता है। घर में टीवी या म्यूजिक सिस्टम का वॉल्यूम कम रखें। बच्चे को तेज म्यूजिक के नजदीक न जाने दें। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, टीकाकरण से बच्चों में सुनने की क्षमता में कमी को रोकने में मदद मिल सकती है। खसरा, कण्ठमाला और रूबेला जैसी संक्रामक बीमारियां बच्चों में सुनने की क्षमता में कमी का कारण बन सकती हैं। इसलिए, एमएमआर वैक्सीन, मेनेनजाइटिस और इंफ्लूएंजा के टीके महत्वपूर्ण हैं।

बच्चे अकसर श्वसन तंत्र के ऊपरी भाग के संक्रमण और एलर्जी से पीड़ित होते हैं, जिससे सुनने में जटिलताएं हो सकती हैं। संक्रमण से जब कान प्रभावित होते हैं, तो इससे अस्थायी या स्थायी रूप से सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसलिए, नियमित जांच और शीघ्र उपचार से इन समस्याओं को रोकने में मदद मिल सकती है।

गर्भवती महिलाओं को अपनी वाचा ताकि टोक्सोप्लाजमोसिज, साइटोमेगालोवायरस जैसे संक्रमण के संभावित जोखिमों की पहचान हो सके, जो गर्भस्थ शिशु की सुनने की क्षमता प्रभावित कर सकते हैं।

'सॉफ्ट स्किल्स' के बिन कॅरिअर है अधूरा

आज के जॉब मार्केट में प्रतिस्पर्धा बहुत ही ज्यादा है। इसमें टिके रहने के लिए दमदार तकनीकी विशेषज्ञता का होना जरूरी है, किंतु सिर्फ इसी के दम पर आप अपने कॅरिअर में कामयाबी पा जाएं, इसकी कोई गारंटी नहीं है। जीआई ग्रुप होल्डिंग इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट स्वदीप कुमार सेन ने कहा कि आज के दौर में नियोक्ता सॉफ्ट स्किल्स को बहुत अहमियत दे रहे हैं। सॉफ्ट स्किल्स, यानी वे व्यक्तिगत गुण और पारस्परिक क्षमताएं, जो असरदार सहयोग, संप्रेषण एवं समस्या हल करने की काबिलियत को उजागर करते हैं। ये कौशल आपके तकनीकी ज्ञान के पूरक बनते हैं और आपके कॅरिअर निर्माण में प्रभावशाली साबित होते हैं।

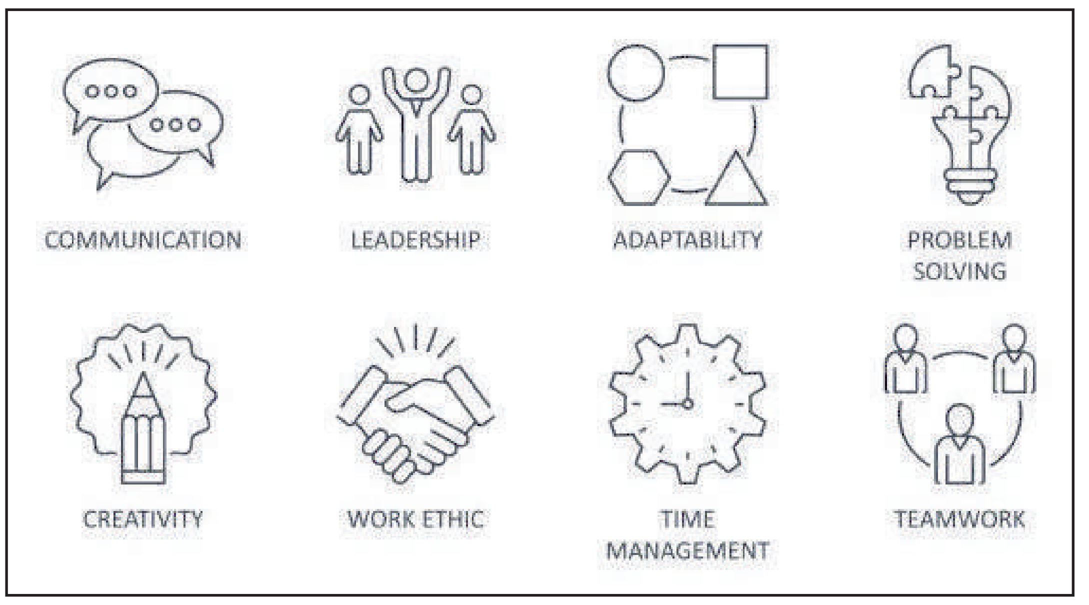

अनुकूलन क्षमताः अनुकूलन क्षमता वह कौशल है, जिसके होने से कोई व्यक्ति हो रहे बदलावों के अनुसार खुद को तेजी से ढाल लेता है और सकारात्मक रवैये के साथ नई चुनौतियों का सामना करता है। अनुकूलन क्षमता होने का मतलब यह है कि आप विभिन्न परिवेशों में आगे बढ़ सकते हैं, नए कौशल सीख सकते हैं और निरंतर बदलते हुए माहौल में प्रासंगिक बने रह सकते हैं। वास्तव में, नेतृत्व और नवप्रवर्तन के लिए अनुकूलन क्षमता को बुनियादी कौशल के रूप में देखा जाता है।

प्रभावी संप्रेषण : आपकी भूमिका या इंडस्ट्री कोई भी हो, संप्रेषण सफलता की कुंजी है। प्रभावी संप्रेषण में न केवल स्पष्टता व आत्मविश्वास से कहना, बल्कि ध्यान से सुनना और दूसरों के दृष्टिकोण को समझना भी शामिल है। चाहे आप कोई प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हों, फीडबैक दे रहे हों या टीम सदस्यों के साथ मिलकर काम कर रहे हों, , पुख्ता संप्रेषण यह सुनिश्चित करता है कि आपके विचारों को लोग आसानी से समझ सकें।

भावनात्मक बुद्धिमत्ताः भावनात्मक बुद्धिमत्ता यानी इमोशनल इंटेलीजेंस (ईक्यू) आपको अपनी खुद की और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने व संभालने की क्षमता प्रदान करती है। यह एक ऐसा कौशल है, जो टीम में आपके प्रभावी ढंग से काम करने, मजबूत संबंध विकसित करने और विवादों को सृजनात्मक तरीके से संभालने की योग्यता बढ़ाता है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता को अक्सर बेहतर नेतृत्व एवं निर्णय लेने की काबिलियत से जोड़ा जाता है, क्योंकि यह लोगों को कार्यस्थल पर पेचीदा सामाजिक संबंधों को संभालने में मददगार साबित होती है।

लचीलापनः लचीलापन वह क्षमता है, जिसके होने से व्यक्ति नाकामियों से उबरकर अपना काम जारी रखता है, चाहे कोई भी विपरीत स्थिति हो, वह हार नहीं मानता, गिर कर फिर उठ खड़ा होता है। पेशेवर दुनिया में नाकामयाबी से दो-चार होते रहना पड़ता है। कभी कोई प्रोजेक्ट फेल हो जाता है, कभी मौका हाथ से निकल जाता है या अप्रत्याशित बदलाव हो जाते हैं। जिनमें लचीलापन होता है, वे अपनी सोच सकारात्मक बनाए रखते हैं, अपने अनुभवों से सीखते हैं और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखते हैं।

सहयोगः जैसे-जैसे कार्यस्थल पहले से ज्यादा सहयोगात्मक और क्रॉस-फंक्शनल बनते जा रहे हैं, वैसे-वैसे टीम में रह कर काम करने की योग्यता और ज्यादा जरूरी होती जा रही है। सहयोग का मतलब है विचारों को साझा करना, दूसरे कर्मचारियों की क्षमताओं का उपयोग करना और साझे लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु समूह के प्रयासों में योगदान देना। जो पेशेवर प्रभावशाली तरीके से सहयोग कर सकते हैं, वे न केवल अपने काम की गुणवत्ता में इजाफा करते हैं, बल्कि अपने सहयोगियों के संग ज्यादा मजबूत रिश्ते भी कायम करते हैं।

नेतृत्वः नेतृत्व का तात्पर्य सिर्फ टीम का प्रबंधन करना भर नहीं है, बल्कि इसका आशय है दूसरों को प्रेरित करना, फैसले लेना और सफलता की ओर समूह का मार्गदर्शन करना। भले ही आप औपचारिक रूप से नेतृत्व के ओहदे पर न हों, किंतु फिर भी पहल करना, जवाबदेही दर्शाना और सकारात्मक रूप से दूसरों को प्रभावित करना, ये सभी गुण नेतृत्व के ही हैं। मजबूत नेतृत्व कौशल वाले पेशेवर अक्सर बड़े जिम्मेदार पदों पर पाए जाएंगे, क्योंकि वे परियोजनाओं और टीमों का असरदार ढंग से मार्गदर्शन करने में सक्षम होते हैं।

बंद नाक के दरवाजे खोल

सर्दियों की शुरुआत होते ही हवा में प्रदूषण और खुश्की बढ़ जाती है। ऐसे में नाक बंद - बंद महसूस होना या साइनस की परेशानी बढ़ना आम है। खासकर जिन्हें साइनसाइटिस की परेशानी रहती है उनके लिए यह मौसम मुश्किल रहता है। ऐसे में सर्दियों के मौसम में साइनसाइटिस को नियंत्रित करने के लिए कुछ तों का ध्यान रखा जा सकता है :

हवा में नमी बनाएंः शुष्क हवा नाक के रास्ते और साइनस गुहाओं को परेशान कर सकती है, जिससे सूजन की संभावना बढ़ जाती है। घर या कार्यस्थल में ह्यूमिडिफायर का उपयोग करने से हवा को नम रखने और साइनस की असुविधा को कम करने में मदद मिल सकती है।

तरावट रखें : पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ जैसे पानी, हर्बल चाय और शोरबा पीने से बलगम पतला हो सकता है और साइनस से निकासी को बढ़ावा मिल सकता है। प्रतिदिन कम से कम आठ गिलास तरल पदार्थ का सेवन जरूर करें।

नाक की सफाई : अगर नियमित रूप से आप नाक की सफाई के लिए नमकीन पानी वाला जल स्प्रे या नेती पॉट का इस्तेमाल करते हैं तो नाक के अंदर और साइनस से बलगम, एलर्जेंट और उत्तेजक पदार्थ बाहर निकालने में मदद मिल सकती है। इससे आपको सांस लेने में राहत भी मिल सकती है और नाक में सूजन को रोका जा सकता है।

एलर्जी से बचेंः यदि आपको मौसमी एलर्जी है तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए उचित उपाय करें। इसमें डॉक्टर से सलाह लें और वह जो भी ओवर-द-काउंटर या एंटीहिस्टामाइन, नेजल कॉर्टिकोस्टेरॉइड दे, उसका नियमित इस्तेमाल करें ।

उत्तेजक चीजों से बचें : धुआं, तेज गंध और हवा में फैलने वाले उत्तेजक पदार्थों के संपर्क में आने से साइनस की सूजन बढ़ सकती है। ये ट्रिगर्स हैं जो आपकी दिक्कत बढ़ा सकते हैं। ऐसे में इनके संपर्क को जहां तक संभव हो, सीमित करें।

डीकंजेस्टेंट का इस्तेमाल : ओवर-द-काउंटर डीकंजेस्टेंट अस्थायी राहत दे सकते हैं, लेकिन लंबे समय तक इनके उपयोग से दिक्कत फिर से आ सकती है। हालांकि डॉक्टर की ओर से जो भी कंजेस्टेंट सुझाया जाए, उसी का इस्तेमाल करें। खुद से नहीं गर्म सेक फायदेमंद : चेहरे पर गर्म, नम सेक लगाने से साइनस के दबाव को कम करने और निकासी को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। तनाव का भी असर : तनाव हमारी इम्यूनिटी को कमजोर कर सकता है और आपको साइनस संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकता है। ऐसे में तनाव को कम करने के लिए व्यायाम, ध्यान या योग जैसी गतिविधियों में शामिल हों।

डॉक्टर से मिलें : यदि आपके साइनस के लक्षण एक सप्ताह से अधिक समय तक बने रहते हैं, बिगड़ते हैं, बुखार आता है, गंभीर दर्द या अन्य चिंताजनक लक्षण उभरते हैं तो डॉक्टर से जरूर मिलें। हो सकता है कि आपकी स्थिति देखकर आपका डॉक्टर अतिरिक्त उपचारों की सिफारिश करे। जैसे कि एंटीबायोटिक्स या कॉर्टिकोस्टेरॉइड । इन ऐहतियात को लागू करके लोग सर्दियों के महीनों के दौरान साइनसाइटिस को प्रबंधित और नियंत्रित करने के लिए सक्रिय कदम उठा सकते हैं। हालांकि, यदि लक्षण बने रहते हैं या बिगड़ते हैं, तो आगे के मूल्यांकन और उपचार की आवश्यकता हो सकती है, इसलिए स्वास्थ्य पेशेवर से परामर्श करना आवश्यक है।

अब पंचायतों की होगी चांदी, आय बढ़ाने के लिए नियम बनाने की तैयारी में केंद्र सरकार

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रामीण भारत में पंचायतें शासन व्यवस्था का काफी अहम हिस्सा हैं। लेकिन पंचायतों की आय अभी नाममात्र है। उन्हें संविधान ने कई तरह के कर लगाने के अधिकार दे रखे हैं मगर राज्य सरकारों ने कभी पंचायतों की कमाई को बढ़ावा देने की कोशिश ही नहीं की। हालांकि अब केंद्र पंचायतों की कमाई बढ़ाने की कोशिश कर रही है। वह इसके लिए आदर्श नियम बनाने की तैयारी में भी है।

नई दिल्ली। पंचायतों के विकास के लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयास कर रही है, लेकिन स्थानीय ग्रामीण निकायों को आत्मनिर्भर बनाने में राज्यों की ही रुचि नहीं है। संविधान ने अनुच्छेद 243एच में प्रविधान किया है कि राज्य विधानमंडल पंचायतों को कर, शुल्क, पथकर आदि लगाने का अधिकार दे सकते हैं। इसके लिए राज्य विधानमंडल कानून बना सकता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि राज्य इसके प्रति उदासीन हैं।

कई राज्यों ने पंचायतों की अपने संसाधनों से आय के लिए नियम बनाए हैं, लेकिन ज्यादा अधिकार नहीं दिए। अब केंद्र सरकार राष्ट्रीय स्तर पर इसके लिए आदर्श नियम बनाने जा रही है। हाल ही में पंचायतीराज मंत्रालय ने केंद्रीय वित्त आयोग के साथ मिलकर राज्य वित्त आयोगों का सम्मेलन आयोजित किया। इसमें एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमें यह चिंताजनक तथ्य सामने आया कि देशभर की ग्राम पंचायतों की प्रति व्यक्ति से औसत राजस्व प्राप्ति (ओन सोर्स रेवेन्यू) मात्र 59 रुपये है।

यह भी तब है, जबकि आंध्र प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल और पुदुचेरी ने पंचायतों की अपने संसाधनों से आय के लिए नियम बना रखे हैं। बाकी राज्यों ने वह भी नहीं बनाए।

वित्त आयोग ने भी जताई चिंता

15वें केंद्रीय वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगढ़िया ने इस पर चिंता जताते हुए जोर दिया कि पंचायतों को विकास और बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए अपने आय संसाधन बढ़ाने होंगे। पंचायतीराज मंत्रालय की ओर से प्रस्तुतीकरण में यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि राज्य चाहें तो पंचायतें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

दरअसल, संविधान ने ही राज्यों को यह अधिकार दिया है कि वह कानून बनाकर पंचायतों को कर, शुल्क, पथकर आदि लागू करने का अधिकार दे सकते हैं। विशेषज्ञों ने यह भी सिफारिश की है कि पंचायतों को उस क्षेत्र में होने वाले खनन की रॉयल्टी, जिला खनन निधि, जीएसटी और स्टॉम्प ड्यूटी में भी हिस्सेदारी दी जानी चाहिए।

किस तरह के बनेंगे नियम?

पंचायतीराज मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मंत्रालय पंचायतों के आय संसाधन बढ़ाने के लिए आदर्श नियम बनाने जा रही है। उनमें संविधान में दिए गए अधिकार और विशेषज्ञों की सिफारिशों को शामिल किया जाएगा। राज्यों से अपेक्षा की जाएगी कि वह उसी नियम के अनुसार अपने यहां व्यवस्थाएं लागू करते हुए पंचायतों को अधिकार दें, ताकि देशभर की पंचायतों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

इसे देखते हुए ही पहली बार यह अनिवार्यता भी कर दी गई है कि अब ग्राम पंचायत विकास योजना ई-ग्राम स्वराज पोर्टल पर अपलोड करते समय ग्राम पंचायतों को घोषणा करनी होगी कि उनकी अपने संसाधनों से आय कितनी है।

विदेशी मुद्रा भंडार में अब तक की सबसे बड़ी गिरावट, अब क्या करेगा आरबीआई?

पिछले छह सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार में कुल मिलाकर 30 अरब डॉलर की कमी दर्ज की गई है। सितंबर के अंत में यह 704.89 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चस्तर से वर्तमान में 47 अरब डॉलर कम है। आरबीआई लगातार रुपये में गिरावट रोकने के डॉलर की बिक्री कर रहा है जिसके चलते विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आई है।

नई दिल्ली। 15 नवंबर को समाप्त सप्ताह में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 17.76 अरब डॉलर घटकर 657.89 अरब डॉलर रह गया है। यह चार महीने का निचला स्तर है। 1998 के बाद यह एक सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार में सबसे बड़ी गिरावट है। विशेषज्ञों के मुताबिक, अमेरिकी चुनाव के नतीजों के बाद डॉलर के मजबूत होने और रुपए की गिरावट को सीमित करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा अपने भंडार से बिक्री के चलते विदेशी मुद्रा भंडार में यह गिरावट आई है।

पिछले छह सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार में कुल मिलाकर 30 अरब डॉलर की कमी दर्ज की गई है। सितंबर के अंत में यह 704.89 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चस्तर से वर्तमान में 47 अरब डॉलर कम है। मुद्रा भंडार का प्रमुख घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 15.548 अरब डॉलर घटकर 569.835 अरब डॉलर रह गईं।

डॉलर के संदर्भ में व्यक्त विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों में विदेशी मुद्रा भंडार में रखे गए यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं की वृद्धि या मूल्यह्रास का प्रभाव शामिल होता है। इस दौरान स्वर्ण भंडार 2.068 अरब डॉलर घटकर 65.746 अरब डॉलर रह गया। विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 9.4 करोड़ डॉलर घटकर 18.064 अरब डॉलर रह गया।

आईएमएफ के साथ भारत की आरक्षित स्थिति भी 5.1 करोड़ डॉलर घटकर 4.247 अरब डॉलर रह गई। आइडीएफसी फर्स्ट बैंक में भारत के अर्थशास्त्री गौरा सेन गुप्ता ने कहा कि 15 नवंबर के सप्ताह में आरबीआई ने 7.2 अरब मूल्य के डॉलर बेचे होंगे। पिछले सप्ताह डॉलर के मुकाबले रुपया 84.41 के अपने रिकार्ड निचले स्तर पर आ गया था। सत्र की शुरुआत में 84.5075 के सर्वकालिक निचले स्तर को छूने के बाद विदेशी मुद्रा शुक्रवार को 84.4450 पर बंद हुई।

रुपये में उतार-चढ़ाव जारी

रुपया शुक्रवार अपने सर्वकालिक निम्नतम स्तर से उबरकर शुक्रवार को 6 पैसे बढ़कर 84.44 प्रति डॉलर (अनंतिम) पर बंद हुआ। इससे पहले गुरुवार को रुपये में 8 पैसे गिरावट की गिरावट आई थी और यह 84.5 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था। यह रुपये का अब तक सबसे निचला स्तर है। इक्विटी मार्केट में विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली क चलते रुपया कमजोर हो रहा है।

रुपये की दमदार वापसी, डॉलर के मुकाबले 6 पैसे हुआ मजबूत

भारतीय रुपया गुरुवार को डॉलर के मुकाबले 8 पैसे कमजोर हुआ था। इसने 84.5 पैसे का अपना ऑल टाइम लो-लेवल बना लिया था। हालांकि शुक्रवार को रुपये ने शानदार वापसी की। यह 6 पैसे मजबूत होकर 84.44 प्रति डॉलर के स्तर पर आ गया। रुपया और भी मजबूत हो सकता था लेकिन विदेशी निवेशकों की बिकवाली जारी रहने से समस्या हुई।

नई दिल्ली। रुपया अपने सर्वकालिक निम्नतम स्तर से उबरकर शुक्रवार को 6 पैसे बढ़कर 84.44 प्रति डॉलर (अनंतिम) पर बंद हुआ। इसकी बड़ी वजह घरेलू शेयर बाजार में जोरदार तेजी रही। फॉरेन करेंसी ट्रेडर्स ने कहा कि रुपया सीमित दायरे में कारोबार कर रहा है, क्योंकि विदेशी बाजार में अमेरिकी डॉलर मजबूत हुआ है और ब्रेंट ऑयल में तेजी जारी है। साथ ही, यूक्रेन और रूस के बीच लड़ाई पर भी निवेशकों की करीबी नजर है।

वहीं, विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शेयरों बेचने के तरीके को जारी रखा है और डॉलर को अच्छी बोली में रखा है। नहीं तो रुपये में और भी ज्यादा मजबूती देखने को मिल सकती थी। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 84.48 पर खुला और डॉलर के मुकाबले 84.50 के इंट्राडे निम्नतम स्तर को छू गया। गुरुवार को रुपया 8 पैसे गिरकर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 84.50 के सर्वकालिक निम्न स्तर पर बंद हुआ।

रुपये पर बना रह सकता है दबाव

शेयरखान बाय बीएनपी परिबास के एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट, फंडामेंटल करेंसीज एंड कमोडिटीज प्रवीण सिंह ने कहा, 'भू-राजनीतिक तनाव, पोर्टफोलियो से निकासी और अमेरिकी डॉलर इंडेक्स में तेजी के कारण घरेलू मुद्रा पर दबाव बना रह सकता है। हालांकि आरबीआई के हस्तक्षेप से इसमें धीरे-धीरे और व्यवस्थित गिरावट आ रही है।'

सिंह ने कहा, ₹यूएसडी/आईएनआर की जोड़ी के अंततः 85 रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है और समर्थन 84.25 रुपये पर है।₹ इस बीच, छह मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की मजबूती को मापने वाला डॉलर इंडेक्स 0.50 प्रतिशत बढ़कर 107.50 पर कारोबार कर रहा था।

वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड वायदा कारोबार में 0.31 प्रतिशत बढ़कर 74.46 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। घरेलू इक्विटी बाजार में, 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 1,961.32 अंक या 2.54 प्रतिशत उछलकर 79,117.11 अंक पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 557.35 अंक या 2.39 प्रतिशत बढ़कर 23,907.25 अंक पर बंद हुआ। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) गुरुवार को पूंजी बाजार में शुद्ध विक्रेता थे, क्योंकि उन्होंने 5,320.68 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

रुपये में उतार-चढ़ाव की वजह

- विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली से रुपये पर दबाव बढ़ा।
- क्रूड की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी रुपये की परेशानी बढ़ाई।
- रूस-यूक्रेन तनाव से सेफ करेंसी के तौर पर डॉलर मजबूत हुआ।
- वैश्विक अस्थिरता बढ़ने से भी रुपया लगातार कमजोर हो रहा है।

मुंबई बना एशिया-प्रशांत क्षेत्र का 14वां सबसे महंगा आवासीय बाजार, प्रॉपर्टी का रेट जानकर उड़ जाएंगे होश

मुंबई को 953 डालर प्रति वर्ग फुट की औसत कीमत के आधार पर 14वां सबसे महंगा एशिया-प्रशांत क्षेत्र का आवासीय बाजार माना जाता है। शहर में 10 लाख डॉलर में लगभग 103 वर्ग फुट लग्जरी आवासीय संपत्ति खरीदी जा सकती है। वियतनाम और थाईलैंड को भारत के साथ एशिया-प्रशांत क्षेत्र के उभरते बाजारों में से एक माना जाता है। भारत में अपना घर खरीदने की दर 87 प्रतिशत है।

नई दिल्ली। लग्जरी आवासीय संपत्ति की मूल्य वृद्धि में मुंबई और दिल्ली एशिया-प्रशांत के पांच प्रमुख बाजारों में शामिल हैं। नाइट फ्रैंक की रिपोर्ट के अनुसार, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में लग्जरी आवासीय मूल्य वृद्धि सूचकांक में मुंबई तीसरे स्थान पर है। इसने कैलेंडर वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही में लक्जरी संपत्ति की कीमतों में 11.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज की है।

रिपोर्ट में कहा गया है, 'मुंबई का बेहतर प्रदर्शन भारतीय शेयर बाजारों के प्रदर्शन के अनुरूप है। अर्थव्यवस्था में निवेश की भावना बहुत मजबूत बनी हुई है और यह इक्विटी सूचकांकों में होने वाली वृद्धि में दिखता है।' इसके अलावा, मुंबई को 953 डालर प्रति वर्ग फुट की औसत कीमत के आधार पर 14वां सबसे महंगा एशिया-प्रशांत क्षेत्र का आवासीय बाजार माना जाता है। शहर में 10 लाख डॉलर में लगभग 103 वर्ग फुट लक्जरी आवासीय संपत्ति खरीदी जा सकती है। वियतनाम और थाईलैंड को भारत के साथ एशिया-प्रशांत क्षेत्र के उभरते बाजारों में से एक माना जाता है।

लग्जरी आवासीय संपत्ति के मामले एशिया-प्रशांत क्षेत्र लग्जरी आवासीय मूल्य वृद्धि सूचकांक में पांचवें स्थान पर है। यहां की लग्जरी संपत्ति की कीमतों में 6.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक, कैलेंडर वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही में 452 डालर प्रति वर्ग फुट की औसत कीमत के साथ दिल्ली एशिया-प्रशांत क्षेत्र में 19वां सबसे महंगा बाजार माना जाता है।

नाइट फ्रैंक इंडिया के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर शिशिर बैजल ने कहा, 'भारत का आवासीय रियल एस्टेट क्षेत्र उल्लेखनीय वृद्धि का अनुभव कर रहा है।' मुंबई, दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु लग्जरी आवासीय संपत्ति की मूल्य वृद्धि में अग्रणी हैं। बाजार में लचीलापन बना हुआ है और खुद को प्राइम रियल एस्टेट निवेश के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है। भारत में अपना घर खरीदने की दर 87 प्रतिशत है, जबकि सिंगापुर में यह 90 प्रतिशत और वियतनाम में 88 प्रतिशत है।

खान मार्केट दुनिया की टॉप रिटेल स्ट्रीट में शुमार

दिल्ली के मशहूर खान मार्केट ने ग्लोबल रिटेल स्ट्रीट बाजार की टॉप लिस्ट में जगह बनाई है। यह भारत का सबसे महंगा रिटेल बाजार बन गया है। कुशमैन एंड वेकफील्ड की 'मेन स्ट्रीट एक्रॉस द वर्ल्ड' रिपोर्ट में ताजा रैंकिंग आई है। भारत के सबसे महंगे रिटेल डेस्टिनेशन के तौर पर खान मार्केट ने ग्लोबल रिटेल मार्केट की टॉप लिस्ट में 22वां स्थान हासिल किया है। यहां जमीन का 229 डॉलर या 19,330 रुपये प्रति वर्ग फुट सालाना के रेट पर हैं। इसमें सालाना आधार पर 7 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट बनाने वाली कंपनियों को मिलेगा पांच अरब डॉलर का प्रोत्साहन, चीन को लगेगा झटका

भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्रालय द्वारा तैयार की गई इस योजना में प्रोत्साहन के लिए पात्र घटकों की पहचान की गई है और यह अपने अंतिम चरण में है। वित्त मंत्रालय जल्द ही योजना के अंतिम आवंटन को मंजूरी देगा। सरकार के आर्थिक थिंक टैंक नीति आयोग के अनुसार भारत वित्त वर्ष 2030 तक अपने इलेक्ट्रानिक्स मैन्युफैक्चरिंग को 500 अरब डॉलर तक बढ़ाने का लक्ष्य लेकर चल रहा है।

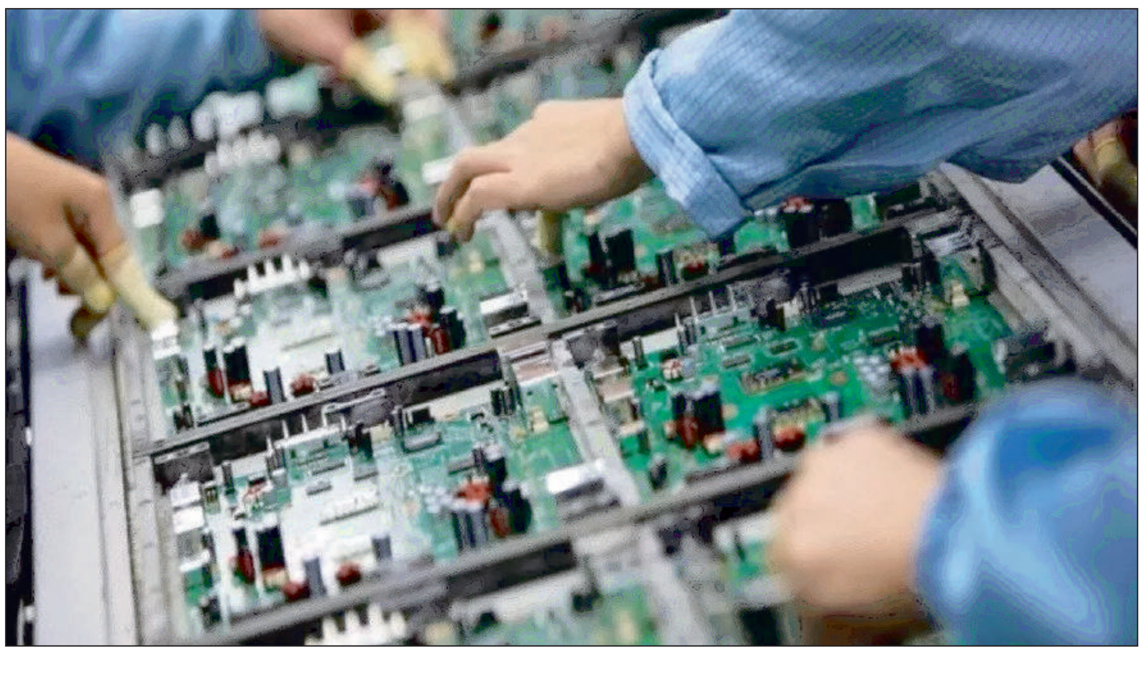

नई दिल्ली। सरकार स्थानीय स्तर पर मोबाइल से लेकर लैपटॉप तक के कलपुर्जे बनाने वाली कंपनियों को चार से पांच अरब डॉलर तक का प्रोत्साहन देने पर विचार कर रही है। इसका मकसद उभरते उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ ही चीन से आपूर्ति को कम करना है। भारत का इलेक्ट्रॉनिक उत्पादन पिछले छह वर्षों में दोगुना से अधिक बढ़कर 2024 में 115 अरब डॉलर हो गया है।

इसका श्रेय एपल और सैमसंग जैसे वैश्विक कंपनियों द्वारा मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग में वृद्धि को जाता है। भारत अब दुनिया का चौथा सबसे बड़ा स्मार्टफोन आपूर्तिकर्ता बन गया है। हालांकि इस क्षेत्र को चीन जैसे देशों से आयातित कलपुर्जों पर भारी निर्भरता के चलते आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है।

समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने दो सरकारी अधिकारियों से बताया कि नई योजना प्रिंटेड सर्किट बोर्ड जैसे प्रमुख घटकों के उत्पादन को प्रोत्साहित करेगी। अधिकारियों ने कहा कि प्रोत्साहन दो से तीन महीनों में शुरू होने वाली एक नई योजना के तहत दिए जाने की संभावना है। इस योजना के तहत योग्य वैश्विक या स्थानीय कंपनियों को कुल चार से पांच अरब डॉलर के बीच प्रोत्साहन दिए जाने की संभावना है।

भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्रालय द्वारा तैयार की गई इस योजना में प्रोत्साहन के लिए पात्र घटकों की पहचान की गई है और यह अपने अंतिम चरण में है। अधिकारी ने कहा कि वित्त मंत्रालय जल्द ही योजना के अंतिम आवंटन को मंजूरी देगा। सरकार के आर्थिक थिंक टैंक नीति आयोग के अनुसार, भारत वित्त वर्ष 2030 तक अपने इलेक्ट्रानिक्स मैन्युफैक्चरिंग को 500 अरब डॉलर तक बढ़ाने का लक्ष्य लेकर चल रहा है। इसमें 150 अरब डालर मूल्य के घटकों का उत्पादन भी शामिल है।

भारत के सेलुलर एवं इलेक्ट्रानिक्स एसोसिएशन के प्रमुख पंकज मोहिन्द्रू ने कहा, 'यह योजना ऐसे समय आ रही है जब कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।' भारत पिछले कुछ साल से मेक इन इंडिया को काफी बढ़ावा दे रहा है। इसके लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इन्सेंटिव भी दिया जा रहा है। इसका काफी सकारात्मक असर भी दिखा है।

'मेक इन इंडिया' और कंपोनेंट लोकलाइजेशन पर जोर देने से सैमसंग, एपल, व्हर्लपूल, डिक्सन और हैवेल्स जैसी प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक फर्मों के आयात में गिरावट आई है। ऐसा शायद पहली दफा हुआ है। इसकी जानकारी रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज (आरओसी) के साथ कंपनियों की रेगुलेटरी फाइलिंग से मिली है।

टमाटर से बनेगी शराब, किसानों की होगी मौज; सरकार तैयार कर रही प्लान

नई दिल्ली। टमाटर की कीमतों में अक्सर तेज उतार-चढ़ाव होता है। कई बार टमाटर की कीमतें आसमान छूने लगती हैं, तो कई बार एकदम से धड़ाम हो जाती हैं। इससे जनता और किसानों दोनों को परेशानी होती है। यही वजह है कि सरकार अब टमाटर की सप्लाई में स्थिरता लाने का प्रयास कर रही है, जिससे किसान और जनता दोनों को फायदा होगा।

क्या करने वाली है सरकार

सरकार ने सप्लाई चेन और प्रोसेसिंग में सुधार के लिए हैकाथॉन के तहत टमाटर से वाइन बनाने सहित 28 नए आइडिया का चयन किया है। अब सरकार इन इन स्टार्टअप को अपना कारोबार बढ़ाने में मदद करेगी यानी उन्हें फंडिंग देगी। हैकाथॉन ऑनलाइन, ऑफलाइन या हाइब्रिड इवेंट होता है, जो नए सॉल्यूशन खोजने के लिए कई विषयों के प्रतिभागियों को एक साथ लाता है।

उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे का कहना है कि टमाटर मूल्य श्रृंखला के विभिन्न स्तरों पर नए विचारों को आमंत्रित करने के लिए पिछले साल जून में टमाटर ग्रैंड चैलेंज (टीजीसी) हैकाथॉन शुरू किया गया था। इसका मकसद था कि उपभोक्ताओं को किफायती कीमतों पर टमाटर की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके और टमाटर किसानों को उपज का वाजिब मूल्य मिल सके।

टमाटर के भाव में उतार-चढ़ाव क्यों

टमाटर की कीमतों में काफी उतार-चढ़ाव होता है। इसकी कई वजह होती है। कई बार अत्यधिक बारिश या गर्मी से फसल को नुकसान होता है या ट्रांपोर्टेशन बाधित हो जाता है। कभी-कभार कीटों के हमले से फसल बर्बाद हो जाती है, जिससे भाव तेजी से बढ़ते हैं। निधि खरे कहना है कि साल में कम से कम 2-3 बार अचानक कीमतों में 100 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। कभी-कभी दरें बहुत कम हो जाती हैं, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है।

खरे ने जोर देकर कहा कि सप्लाई चेन को मजबूत करने, कटाई से पहले और बाद में होने वाले नुकसान को कम करने और प्रसंस्करण स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि उपभोक्ताओं और किसानों दोनों के लाभ के लिए कीमतों में स्थिरता लाई जा सके। उन्होंने कहा कि इन 28 आइडिया में से 14 पेटेंट रजिस्टर किए गए हैं। स्टार्टअप को ट्रेनिंग दी जाएगी कि वे निवेशकों और बड़ी कंपनियों के सामने अपने नए विचारों को कैसे पेश करें।

23 नवंबर को 42वीं जयंती पर विशेष :पुलिस अकादमी में हुई संदिग्ध मृत्यु, किसी को सजा नहीं, कब मिलेगा आईपीएस मनुमुक्त 'मानव' को न्याय?

मनुमुक्त के पिता, वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद् डॉ. रामनिवास 'मानव' भरे मन से बताते हैं कि अधिकारियों की आपराधिक लापरवाही और मनुमुक्त की मृत्यु के षड्यंत्र में शामिल उनके बैचमेट अफसरों की संलिप्तता के दस्तावेजी सबूतों के बावजूद, उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुई, बल्कि तेलंगाना पुलिस और सीबीआई ने इसे सामान्य घटना बताकर मामले को रफा-दफा कर दिया। तेलंगाना पुलिस और सीबीआई का पूरा प्रयास दोषियों को बचाने का था, दोषियों को सजा दिलाने का नहीं। यही नहीं, मनुमुक्त को ट्रेनी बताकर सभी सरकारों ने पल्ला झाड़ लिया, किसी ने एक रुपये की भी आर्थिक सहायता परिवार को प्रदान नहीं की।

-- प्रियंका सौरभ*

नियति का यह कैसा दुखद विधान है कि विशिष्ट प्रतिभाओं को यहाँ अत्यल्प जीवन ही मिलता है। आदि शंकराचार्य से लेकर स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, श्रीनिवास रामानुजन, भारतेंदु हरिश्चंद्र और रांगेय राघव तक, एक लंबी सूची है ऐसे महापुरुषों की, जो अपनी चमक बिखेरकर अल्पायु में ही इस दुनिया से विदा हो गए। भारतीय पुलिस सेवा के युवा अधिकारी मनुमुक्त 'मानव' भी एक ऐसे ही जगमगाते प्रतिभा-पुंज थे, जिन्हें काल ने असमय ही अपना ग्रास बना लिया। 28 अगस्त, 2014 को बहुमुखी प्रतिभा के धनी, अत्यंत होनहार और प्रभावशाली पुलिस अधिकारी मनुमुक्त की मात्र 30 वर्ष, 9 माह की अल्पायु में नेशनल पुलिस अकेडमी, हैदराबाद (तेलंगाना) के स्विमिंग पूल में डूबने से, संदिग्ध परिस्थितियों में, मृत्यु हो गई थी।

स्विमिंग पूल के पास ही स्थित ऑफिसर्स क्लब में चल रही विदाई पार्टी के बाद, आधी रात को जब मनुमुक्त का शव स्विमिंग पूल में मिला, तो अकेडमी में ही नहीं, पूरे देश में हड़कंप मच गया, क्योंकि यह अकेडमी के 66 वर्ष के इतिहास में घटित होने वाली पहली इतनी बड़ी दुर्घटना थी। यहीं यह बताना भी आवश्यक है कि इतनी मर्मांतक और दुर्भाग्यपूर्ण त्रासदी के बाद भी इस मामले की न तो ठीक-से जांच हुई और न ही किसी अधिकारी या कर्मचारी की जिम्मेदारी तय कर, उसके विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही की गई। मनुमुक्त के पिता, वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद् डॉ. रामनिवास 'मानव' भरे मन से बताते हैं कि अधिकारियों की आपराधिक लापरवाही और मनुमुक्त की मृत्यु के षड्यंत्र में शामिल उनके बैचमेट अफसरों की संलिप्तता के दस्तावेजी सबूतों के बावजूद, उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुई, बल्कि तेलंगाना पुलिस और सीबीआई ने इसे सामान्य घटना बताकर मामले को रफा-दफा कर दिया। तेलंगाना पुलिस और सीबीआई का पूरा प्रयास दोषियों को बचाने का था, दोषियों को सजा दिलाने का नहीं। यही नहीं, मनुमुक्त को ट्रेनी बताकर सभी सरकारों ने पल्ला झाड़ लिया, किसी ने एक रुपये की भी आर्थिक सहायता परिवार को प्रदान नहीं की। विगत एक दशक से अपने बेटे के हत्यारों को सजा दिलाने के लिए निरंतर संघर्ष करते आ रहे 70वर्षीय बुजुर्ग डॉ. 'मानव' निराश होकर कहते हैं कि अब उनका न प्राकृतिक न्याय-व्यवस्था में विश्वास बचा है और न भारतीय न्याय-व्यवस्था में।

Manumukt Manav Memorial Trust
Narnaul (Haryana)
कीर्तिर्यस्य स जीवति

उल्लेखनीय है कि मनुमुक्त 2012 बैच और हिमाचल प्रदेश काडर के परम मेधावी और ऊर्जावान पुलिस अधिकारी थे। 23 नवंबर, 1983 को हिसार (हरियाणा) में जन्मे तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से उच्च शिक्षा प्राप्त मनुमुक्त ने 'सी' सर्टिफिकेट सहित एनसीसी की सभी सर्वोच्च उपलब्धियाँ प्राप्त की थीं। वह बहुत अच्छे चिंतक होने के साथ-साथ बहुमुखी कलाकार और सफल फोटोग्राफर भी थे; सेल्फी के तो मास्टर ही थे। उनकी समाज-सेवा में भी बड़ी रुचि थी। वह अपने दादा-दादी की स्मृति में अपने पैतृक गाँव में स्वास्थ्य-केंद्र तथा नारनौल में सिविल सर्विस एकेडमी स्थापित करना चाहते थे। देश और समाज के लिए उनके और भी बहुत सारे सपने थे, जो उनकी असामयिक मृत्यु के साथ ही ध्वस्त हो गए।

इकलौते जवान आईपीएस बेटे की मृत्यु मनुमुक्त के पिता, वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद् डॉ. रामनिवास 'मानव' तथा माता अर्थशास्त्र की पूर्व प्राध्यापिका डॉ. कांता भारती के लिए भयानक वज्रपात से कम नहीं थी। कोई अन्य दम्पत्ति होता, तो शायद टूटकर बिखर जाता, लेकिन 'मानव' दम्पत्ति ने अद्भुत धैर्य और साहस का परिचय देते हुए, न केवल इस अकल्पनीय-असहनीय पीड़ा को झेला, बल्कि अपने बेटे की स्मृतियों को सहेजने और सजीव बनाए रखने के लिए भरसक प्रयास भी प्रारंभ कर दिए। उन्होंने अपनी संपूर्ण जमापूंजी लगाकर 10 अक्टूबर, 2014 को मनुमुक्त 'मानव' मेमोरियल ट्रस्ट का गठन किया और नारनौल में 'मनुमुक्त भवन' का निर्माण कर उसमें वातानुकूलित लघु सभागार, संग्रहालय और पुस्तकालय की स्थापना की। ट्रस्ट द्वारा अढाई लाख का एक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, एक लाख का एक राष्ट्रीय पुरस्कार, 21-21 हज़ार के दो तथा 11-11 हज़ार के तीन राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार और सौ मनुमुक्त 'मानव' स्मृति-सम्मान प्रारंभ किए।

मनुमुक्त 'मानव' युवा शक्ति के प्रतीक ही नहीं, प्रेरणा-स्रोत भी थे। देहांत के एक दशक बाद भी उन्हें बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। परिवार ने मीडिया, सोशल मीडिया और फ़ेसबुक के माध्यम से उनकी प्रेरक स्मृतियों को जीवित रखा हुआ है। इसके लिए मनुमुक्त की बड़ी बहन और विश्वबैंक, वाशिंगटन डीसी (अमरीका) की वरिष्ठ अर्थशास्त्री डॉ. एस अनुकृति का भी भरपूर सहयोग रहता है। अंत में मनुमुक्त की बैचमेट, भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी और संप्रति धमतरी (छत्तीसगढ़) की जिलाधिकारी नम्रता गांधी के शब्दों में कहा जा सकता है, *₹मनुमुक्त हमारे लिए बड़े भाई, मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थे। उनके व्यक्तित्व में उत्तम हास्य का समावेश था, वहीं उनका दिल भी विशुद्ध सोने का बना था। उनके अंतर्मन में बड़ी गहराई थी, जिसका बाहर से अनुमान लगाना कठिन था। वह शानदार प्रशासक, स्वाभाविक नेता, श्रेष्ठ टीम-खिलाड़ी, सम्मानित वरिष्ठ, विश्वसनीय कनिष्ठ और सबके चहेते साथी तथा सहयोगी थे। हममें से किसी के लिए भी उन्हें भुला पाना संभव नहीं है।"

पूर्व मेयर सरला सिंह की जयंती पर भाजपा नेता द्वारा वृद्धाश्रमों में भोजन वितरण

- समस्याओं के खिलाफ कानपुर के विकास में रही है पूर्व मेयर सरल सिंह की अहम भूमिका

सुनील बाजपेई, कानपुर। यहां की चर्चित भाजपा नेता और पूर्व में रहीं सरला सिंह की जयंती पर भाजपा नेता जीत प्रताप सिंह ने प्रमुख लोगों के साथ दामोदर नगर रतनपुर स्थित वृद्धाश्रम में भोजन वितरित कर बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया। जुझारू भाजपा नेता रहीं पूर्व मेयर सरल सिंह के बारे में यह भी अवगत कराते चलें कि समस्याओं के खिलाफ कानपुर के विकास में उनका बहुत अहम रोल रहा है। उनके मिलनसार और सहयोगी स्वभाव ने उन्हें लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय भी बना रखा था। और आज उन्हीं के पद चिन्हों पर उनके चर्चित युवा भाजपा नेता बेटे जीत प्रताप सिंह भी चल रहे हैं। अकबरपुर लोकसभा क्षेत्र में समस्याओं के खिलाफ जुझारू तेवर वाले तेजतर्रार और व्यवहार कुशल हर किसी के सुख दुख में सदैव खड़े होने वाले चर्चित वरिष्ठ भाजपा नेता जीत प्रताप सिंह द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के मौके पर मुख्य रूप से विजय प्रताप सिंह , शांतनु सिंह, श्रीमती श्वेता सिंह , तरुण खन्ना , श्रीमती जया शुक्ला , पुष्पा , रीना, महेंद्र पांडे, कमल तिवारी , अजय भदौरिया , दिनेश सिंह , अरविंद रावत , सुरेश गुप्ता , शिवा ठाकुर , युवराज सिंह, टीकम सिंह , बी के विश्वकर्मा , अंकित और राजकमल आदि मौजूद रहे।

फिल्मी दुनिया: अजय देवगन नाम में एक बार फिर गैंगस्टर की भूमिका में

(विभूति फीचर्स)

क्या होगा जब आप किसी हादसे का शिकार होने के बाद अपना नाम अपनी पहचान ही खो दें और आपको अपनी ही पिछली ज़िन्दिगी की कुछ भी बातें याद ही ना रहें ? एक ऐसी ही जबरदस्त सस्पेंस थ्रिलर फिल्म ₹ नाम ₹ लेकर आ रहे हैं अजय देवगन और अनीस बज़्मी । रूंगटा एंटरटेनमेंट और स्निग्धा मूवीज़ के बैनर तले बनी फिल्म नाम एक ऐसे गैंगस्टर की ज़िंदिगी पर आधारित है जिसने अपनी अशांत ज़िन्दिगी में वो सब कुछ किया है जो एक गैंगस्टर का सपना होता है , लेकिन इसी क्रम में उसका सामना एक ऐसी भीषण दुर्घटना से होता है जिसमें वह अपनी पिछली पूरी ज़िंदिगी को ही भूल जाता है । लेकिन उसके भूलने से समस्याएं खत्म नहीं होती और उसका सामना माफिया, पुलिस, सीबीआई और ऐसे खतरनाक दुश्मनों से होता है जो उसकी जान के पीछे हाथ धो कर पड़े होते हैं। फिर इसी के साथ चूहे बिल्ली का खेल शुरू होता है । इस फिल्म में अजय देवगन एक पेशेवर हत्यारे के किरदार में हैं ।

ROONGTA ENTERTAINMENT
NAAM
AN ANEES BAZMEE FILM
PRODUCED BY ANIL ROONGTA

वैसे फिल्म के नाम ₹नाम ₹से सबसे पहले तो संजय दत्त और कुमार गौरव की फिल्म ही याद आती है । साथ ही याद आता है पंकज उधास का लोकप्रिय और सुप्रसिद्ध गीत ₹चिट्ठी आई है₹ ।चालीस साल के बीत जाने के बाद आज भी इस गीत की लोकप्रियता बरकरार है।

अब बात नयी नाम की करें तो रूंगटा एंटरटेनमेंट ने एक प्रोडक्शन हाउस के तौर पर इस फ़ल्मि के जरिये बड़े प्रोजेक्ट्स में एंट्री की है । इस फ़ल्मि में अजय देवगन के साथ भूमिका चावला, राहुल देव, समीरा रेड्डी, विजय राज, यशपाल शर्मा, शरत सक्सेना, मुकेश तिवारी और राजपाल यादव ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं ।

फिल्म की कहानी अजय देवगन के चरित्र पर ही पूरी तरह से केंद्रित है, जो कि एक नामी और पेशेवर हत्यारा है, जिसका जीवन एक जानलेवा दुर्घटना के बाद नया मोड़ लेता है। दुर्घटना के बाद उसे यह याद ही नहीं रहता कि वह कौन है। जैसे ही वह अपनी पहचान को फिर से खोजने की यात्रा पर निकलता है, वह रहस्यों और खुलासों के जाल में फंस जाता है जो उसे उसके अतीत की सच्चाई के करीब ले जाता है। जहाँ उसके विभिन्न प्रकार के दुश्मनों से उसका सामना होता है और एक्शन , रहस्य, रोमांच के साथ इस फ़ल्मि का ट्विस्ट बढ़ता है । इस फ़ल्मि के निर्माता हैं अनिल रूंगटा व सुरेखा दिनेश पटेल , फिल्म के सह निर्माता हैं ज्ञानचन्द देवपति और सुनील आर. मेहरा। संगीत है हिमेश रेशमिया और साज़दि-वाजिद का । फिल्म के गीत लिखे हैं समीर और जलीस शेरवानी ने । फ़ल्मि की कहानी हुमायूँ मिर्जा ने लिखी है। स्क्रीन प्ले और संवाद अनीस बज़्मी और हुमायूँ मिर्जा ने मिलकर लिखे है। (विभूति फीचर्स)

कविता : खत्म हुई वोटिंग नतीजों का इंतजार

महाराष्ट्र और झारखंड में किसकी बनेगी सरकार,
खत्म हुई वोटिंग अब नतीजों का सबको इंतजार।
दावा कर रहे संजय राऊत कहीं हो जाए ना आउट,
उड़न खटोले में उड़ रहे नाना पटोले को नहीं डाउट!
पवार का भी आखिरी चुनाव हो जाएगा यही पडाव।

महाराष्ट्र और झारखंड में किसकी बनेगी सरकार,
खत्म हुई वोटिंग अब नतीजों का सबको इंतजार।
अजित दादा को इंतजार सत्ता मिलेगी आधा- आधा,
एकनाथ शिंदे कहे हमको भी चाहिए सबसे ज्यादा!
भाजपा कहे हम एक हैं तो सेफ हैं देवेंद्र भी जेक हैं।

महाराष्ट्र और झारखंड में किसकी बनेगी सरकार,
खत्म हुई वोटिंग अब नतीजों का सबको इंतजार।
कांग्रेस कहे सत्ता के साथ हैं हेमंत सोरेन में बात है,
भाजपा बोली दुर्गा और चंपई में जरूर कोई बात है!
तेजस्वी- लालू बोले अब न रहा आलू में कोई स्वाद है।

महाराष्ट्र और झारखंड में किसकी बनेगी सरकार,
खत्म हुई वोटिंग अब नतीजों का सबको इंतजार।
अखिलेश को है डर पलट न जाए पीडीए की नाव,
उपचुनाव में उल्टा ही ना पड़ जाए सत्ताईस का दाँव!
क्योंकि इस बार योगी बाबा तो घूम चुके हैं गांव- गांव।

संजय एम. तराणेकर

अंग्रेज कवि डिरेजियो का महाकाव्य 'फकीर ऑफ जंघीरा' और भागलपुर की विश्वविख्यात जहांगीरा पहाड़ी

(शिव शंकर सिंह पारिजात-विनायक फीचर्स)

उत्तरवाहिनी गंगा तट पर स्थित भागलपुर के सुल्तानगंज स्थित जंघीरा अथवा जहांगीरा पहाड़ी जो वर्तमान में अजगैबीनाथ पहाड़ी भी कहलाता है, की ख्याति श्रावणी मेला के कारण पूरे देश में है। पर एक अंग्रेज कवि द्वारा जंघीरा (जहांगीरा) की पृष्ठभूमि पर रचित एक महाकाव्य ने इसकी ख्याति पूरी दुनिया में फैला दी। उस अंग्रेज कवि का नाम है हेनरी लुईस विवियन डेरेजियो (1809-1831) और उस कालजयी रचना का नाम है 'फकीर ऑफ जंघीरा'। भारतीय नवजागरण के सूत्रधारों में से एक, प्रखर चिंतक, शिक्षाविद् और अप्रतिम प्रतिभा के धनी यूरेशियन मूल के कवि डिरेज़ियो की मान्यता भारत में अंग्रेजी में लिखनेवाले पहले कवि के रूप में होती है। अतुल्य प्रतिभा के धनी डेरेजियो मात्र 17 वर्ष की उम्र में कोलकाता के प्रतिष्ठित हिन्दू कालेज (वर्तमान प्रेसिडेंसी कॉलेज) में असिस्टेंट हेडमास्टर नियुक्त हुए। उनके क्रांतिकारी विचारों ने बड़ी संख्या में छात्रों को प्रभावित किया जो 'युवा बंगाल' के नाम से विख्यात होकर 'डिरेज़ियोवादी' कहलाये।

भागलपुर के सुल्तानगंज में गंगा के मध्य स्थित जंघीरा (जहांगीरा) पहाड़ी की पृष्ठभूमि में 2050 पंक्तियों में रचित और 1829 में प्रकाशित डेरेजियो की कृति 'फकीर ऑफ जंघीरा' को भारत में अंग्रेजी में लिखित पहली लंबी कविता माना जाता है। अपनी काव्यात्मक विशिष्टताओं के कारण इस महाकाव्य की तुलना लार्ड बायरन की कविताओं से की जाती है जिसके संस्करण ऑक्सफोर्ड सहित विश्व के कई देशों ने प्रकाशित किये हैं। 'फकीर ऑफ जंघीरा' नलिनी नाम की एक युवती और जंघीरा पहाड़ी की गुफा में रहने वाले डाकूओं के सरगना एक फकीर की दुखांत एवं मार्मिक प्रेम-गाथा है।

यह बात गौरतलब है कि डिरेज़ियो का जन्म एक एंग्लो इंडियन परिवार में बंगाल में हुआ था और उनकी शिक्षा-दीक्षा भी बंगाल में ही हुई, लेकिन उन्हें साहित्य-सृजन की प्रेरणा भागलपुर की मिट्टी से मिली थी। भागलपुर की गंगा, उसके आस-पास बिखरे प्राकृतिक सौंदर्य, खेत-खलिहान, ग्रामीण परिवेश आदि को देखकर उनमें एक ऐसी स्वतःस्फूर्त प्रेरणा जागी कि उन्होंने अपनी पहली रचना लिख डाली और इसे यहीं से प्रकाशन हेतु उस समय की सबसे प्रतिष्ठित पत्रिका कोलकाता के 'इंडिया गज़ट' को भेज दी । जिसके प्रकाशित होते ही रातों-रात उनकी शोहरत साहित्य-जगत के उभरते सितारे के रूप में हो गयी।

हुआ यूं कि सन 1823 में 14 साल की उम्र में स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद जब कल्पनाशील व स्वछंद विचारों वाले युवा डिरेज़ियो को कोलकाता की एक ब्रिटिश फ़र्म में क्लर्क की नौकरी रास न आई तो उसे छोड़ वे भागलपुर में अपनी मौसी के पास आ गये जहां उनके मौसा आर्थर जानसन इंडिगो प्लांटर अर्थात नीलहे साहब थे। भागलपुर में अपने मौसा की नील (इंडिगो) की खेती के प्रबंधन में हाथ बंटाने के बाद फ़ुरसत के समय में वे अपने मौसा की कोठी के निकट बहती गंगा और उसके आस-पास के प्राकृतिक दृश्य देखने निकल जाते। इस नैसर्गिक वातावरण ने कवि-हृदय डिरेज़ियो को इस क़दर प्रभावित किया कि उनके अंदर साहित्य सृजन की भावना जग उठी जिसकी परिणति 'फकीर ऑफ जंघीरा' के रूप में विश्वप्रसिद्ध रचना के रूप में हुई।

लेखक थॉमस एडवर्ड्स ने डेरेजियो की जीवनी 'द यूरेशियन पोएट, टीचर एण्ड जर्नलिस्ट' में उनके भागलपुर के दिनों का बड़ा ही चित्रात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है।

अंग्रेजों के शासन काल में भागलपुर यूरोपीयों का पसंदीदा शहर बन गया था। 1824 में भागलपुर की यात्रा करनेवाले विशप हेबर बताते हैं कि भोगलीपुर (भागलपुर) की आबोहवा बड़ी ही उम्दा थी । यह उस समय भारत के स्वाथ्यकर स्थानों में एक माना जाता था। इसी दौरान डिरेजियो भी यहां आये थे। भागलपुर और राजमहल में नयी अंग्रेजी शासन-व्यवस्था लागू हो जाने के कारण गोरे हुक्मरानों के साथ यहां अंग्रेज नीलहे साहेबों, डॉक्टरों, संभ्रांत लोगों, जमींदारों व सैलानियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। यहां पर बसे ईसाई समुदाय के लोग यूरोपियन ईसाई, यूरेशियन ईसाई और नेटिव ईसाई कहलाते थे। ईसाईयों की बढ़ती संख्या के साथ यहां ईसाई मिशनरियां भी वजूद में आने लगीं। तत्कालीन कमिश्नर जी.एफ. ब्राउन ने स्थानीय घंटाघर के निकट करीब 13 बीघा जमीन खरीद कर चर्च का निर्माण करवाया। बाद में चंपानगर व अन्य स्थानों में भी चर्च बने। आज भागलपुर की टिल्हा कोठी, सदर अस्पताल स्थित विक्टोरिया मेमोरियल, यूनिवर्सिटी कैम्पस स्थित क्लीवलैंड मेमोरियल आदि यूरोपीय वास्तुकला के नायाब नमूने हैं। स्थानीय आशानंदपुर परबत्ती स्थित क्रिश्चियन सेमेट्री की चारदीवारी के अंदर यहां के ईसाईयों के इतिहास के जीवंत दस्तावेज दफन हैं।

भागलपुर की मनमोहक प्राकृतिक सुषमा, कलकल बहती गंगा का मनोहारी सूर्योदय-सूर्यास्त, निश्छल ग्रामीण परिवेश आदि का कवि हृदय डिरेज़ियो के मानसपटल पर गहरा असर पड़ा। वे अक्सर नाव से गंगा की सैर पर निकल जाते। निकट के सुल्तानगंज में गंगा के बीच स्थित जंघीरा की पहाड़ी, जिसे स्थानीय लोग जहांगीरा या अजग़ैबीनाथ की पहाड़ी कहकर भी पुकारते हैं, का प्राकृतिक सौंदर्य व इसमें रहनेवाले साधु-फ़क़ीरों के रोमांचक क़िस्से-कहानियां उन्हें इतनी भायीं कि इसकी पृष्ठभूमि पर उन्होंने अपनी अमर काव्य-कृति 'फ़क़ीर आफ़ जंघीरा' लिख डाली। डिरेज़ियो के 'फ़क़ीर आफ़ जंघीरा' की गिनती आज विश्व के श्रेष्ठ अंग्रेज़ी साहित्य में होती है। **(लेखक पूर्व जनसंपर्क उपनिदेशक एवं इतिहासकार हैं)**

फिल्मों का यह संसार ।

'दुनिया को दिखा रहा सब रंग,
वह दु:ख-सुख सब संग
ऐसा ही है,
यही तो है फिल्मों का संसार।

कभी परदों के संग,
कभी टाकीजों का वह रंग
सिनेमाघर ही थे मनोरंजन के सुलभ साधन,
यही तो है फिल्मों का संसार।

कहीं संवादों का वैचारिक विचार,
कहीं गानों का सुर-मधुर संसार
फिल्मी दुनिया ने लोगों को जोड़ा ही था,
यही तो है फ़िल्मों का संसार।

रील में बसा हुआ या परिदृश्य,
जो परदों पर दिखाया जाता रहा
वहीं से बने कलाकार और सिनेमा का वह रंग,
यही तो है फिल्मों का संसार।

कभी टॉकीजों का दौर फिर टेलीविजन,
कभी वीसीआर तो वीडियो एल्बम का वह संसार
कैसेट की रील पर टेपरिकॉर्डर का वह दौर,
रेडियो पर गानों का शोर
यही तो है फिल्मों का संसार।

अब आधुनिकता का यह दौर है,
इसमें आनलाईन, यू ट्यूब व मल्टीप्लेक्स का अब नया दौर है।
फिल्मों की यह दुनिया कभी भी खत्म नहीं होगी,
यही तो है फिल्मों का संसार॥

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

आदानी कंपनी ने गन्धमार्दन तलहटी में जमीन खरीद विवाद पर सफाई दी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : ओडिशा की गन्धमार्दन में जमीन खरीद को लेकर महानदी माइंस एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड ने सफाई दी है। कंपनी के अनुसार, बलांगीर और बारगढ़ जिलों में वनीकरण के उद्देश्य से ओडिशा सरकार के वन विभाग को सौंपने के लिए इच्छुक भूमि मालिकों से निजी भूमि का अधिग्रहण किया गया है ।भूमि मालिकों के पास बिक्री दस्तावेज़ में भूमि अधिग्रहण का उद्देश्य स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

कंपनी के अनुसार, भूमि अधिग्रहण किसी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए नहीं है और प्रतिपूरक वनीकरण के माध्यम से स्थानीय पर्यावरण को समृद्ध करेगा। भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के व्यापक दिशानिर्देशों के अनुसार है। जिसमें परियोजना प्रस्तावक राज्य में या राज्य के बाहर कहीं भी जमीन खरीद सकता है। बलांगीर डिवीजन के जिला वन अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों के संकेत के बाद अक्टूबर में इसके लिए उचित प्रमाण पत्र जारी किया।

2022 में, भारत सरकार के कोयला मंत्रालय ने ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में वाणिज्यिक खनन के लिए प्रतिस्पर्धी नीलामी के माध्यम से महानदी माइंस एंड मिनरल्स को बिजहान कोयला खदान सौंपी थी ।यह परियोजना क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करेगी और जिला और राज्य प्रशासन के लिए कर राजस्व में वृद्धि करेगी। कंपनी ने कहा, महानदी माइंस एंड मिनरल्स क्षेत्र की वृद्धि और विकास, सकारात्मक बदलाव और स्थानीय और अन्य हितधारकों के लिए उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रतिबद्ध है।

सीरवी समाज प्रीमियर लीग-7 का तीसरा चरण कल

परिवहन विशेष न्यूज जगदीश सीरवी

हैदराबाद सीरवी फ्रेन्डस क्लब हैदराबाद द्वारा आयोजित सीरवी समाज प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता के 7 वें संस्करण तथा महिला वर्ग के खेलों का दुसरा चरण कल रविवार 24 नवम्बर को सीरवी समाज क्रिकेट ग्राउंड अलियाबाद एवं श्रेष्ठा क्रिकेट ग्राउंड अलियाबाद में आयोजित किया जाएगा। फ्रेन्डस क्लब के सुरेश सैंणचा ने बताया कि समाज प्रीमियर लीग-7 का तथा इस प्रतियोगिता के साथ महिला वर्ग के खेलो का बैडमिंटन खेल 24 नवंबर को प्रातः 7.15 को मुख्य प्रायोजक वंडर वॉल पुट्टी की टीम तथा मुख्य अतिथियों के करकमलों द्वारा किया जायेगा। इस बार खेलों को लेकर महिला वर्ग खिलाड़ीयों में भारी उत्साह नजर आ रहा है।

क्रिकेट प्रतियोगिता मे कुल 18 टीमें भाग लेंगी। जिसमें आईजी बिरमगुड़ा ,करमनघाट, एल बी नगर,नागोल वेरिस ,संगारेड्डी, शमशाबाद , मेडचल जिडिमिटला,कापरा किंग्स, रामनगर, ऑल विन 11, बालनगर सिकंदराबाद, आईजी फ्रेंड्स कलब, आईजी गुट्टा 11, हायतनगर,कुकटपल्ली, सैनिकपुरी, टी एम जी टाइटन्स क्रिकेट प्रतियोगिता के साथ साथ महिला वर्ग के वॉलीबाल (थ्रो बॉल) खेल शामिल होंगे। महिला वर्ग के सभी खेल सीरवी क्रिकेट ग्राउंड अलियाबाद शामिरपेट में आयोजित होंगे। यह प्रतियोगिता सीरवी फ्रेंड्स क्लब हैदराबाद तेलंगाना द्वारा आयोजित की जा रही है। भोजन की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की जाएगी। सभी मैचों का लाईव प्रसारण युट्युब चैनल पर किया जाएगा। प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए सीरवी फ्रेन्डस क्लब के सभी सदस्यों का विशेष सहयोग रहेगा। सभी सीरवी बन्धुओं से निवेदन है इस प्रतियोगिता मे अपना तन-मन-धन से सहयोग करके प्रतियोगिता को सफल बनावे।

कल मत गणना , हरेलाल का विजय रथ चर्चे में

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

सरायकेला, झारखंड में अब मतगणना को महज चंद घंटे रह गये है । ऐसे में 81 विधानसभा सीट में से ईचागढ़ विधानसभा के हरेलाल महतो का विजय रथ घुमाना आरंभ हो चुका है । झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के गृह जिला सरायकेला खरसावां के अनारक्षित इचागढ़ विधानसभा सीट भी कम चर्चित नहीं है । जहां से भाजपा के समर्थित प्रत्याशी हरेलाल महतो ने जीत के जश्न मनाने की तैयारी में जूट गये है । वे अपनी विजय रथ साथ लिए घूम रहे हैं । इस सीट से पूर्व उप मुख्यमंत्री स्व सुधीर महतो की पत्नी सबिता महतो चुनाव लड रही है । जे बी के एस एस पार्टी ने तरूण महतो को उतारा है । सरायकेला खरसावां जिले का कुडमी समुदाय बहुल इस विधानसभा क्षेत्र में 2 लाख 88 हजार 793 वोटर हैं। इसमें 1 लाख 44 हजार 788 पुरुष, 1,44,003 महिला और 2 समलिंगी वोटर हैं । बिगत 2019 के चुनाव में झारखंड गठन में अहम भूमिका निभाने वले झारखंड मुक्ति मोर्चा के गद्दार नेता निर्मल महत्व के भाई स्वर्गीय सुधीर महतो की पत्नी सबिता महतो ने चुनाव लड़ा था । 57,546 मत बटोर कर सविता महतो विधायक बनी थी। तब आजसू पार्टी से यही हरिलाल महतो दूसरे नंबर पर रनर थे । परंतु इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी का गठबंधन आजसू के साथ होने के कारण हिरालाल पलड़ा काफी भारी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023